॥ ओ३म् ॥

आयुर्वेद जड़ी-बूटी रहस्य

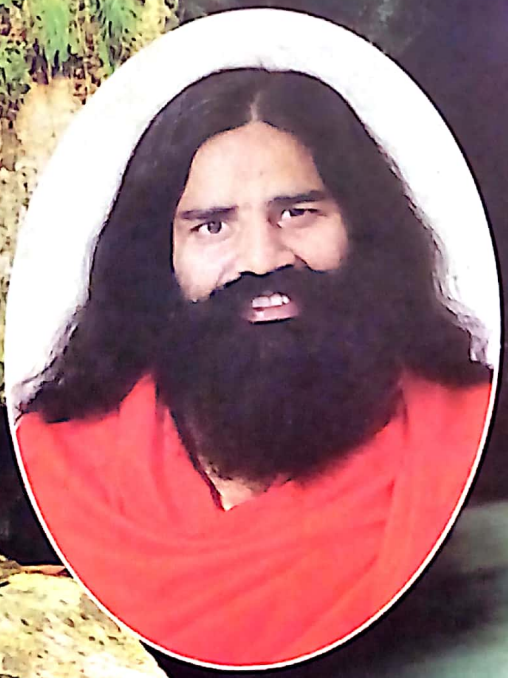

आचार्य बालकृष्ण

Scanned by CamScanner

91 नीम

वैज्ञानिक नाम	:	*Azadirachta indica* (L.) A. Juss.
कुलनाम	:	Meliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Margosa tree
संस्कृत	:	निम्ब, अरिष्ट
हिन्दी	:	नीम
गुजराती	:	लीमड़ो
मराठी	:	कडूनिंब
पंजाबी	:	नीम
फारसी	:	आज़ाद–दरख्ते–हिन्दी
अरबी	:	आज़ाद–दरख्तुल–हिन्द

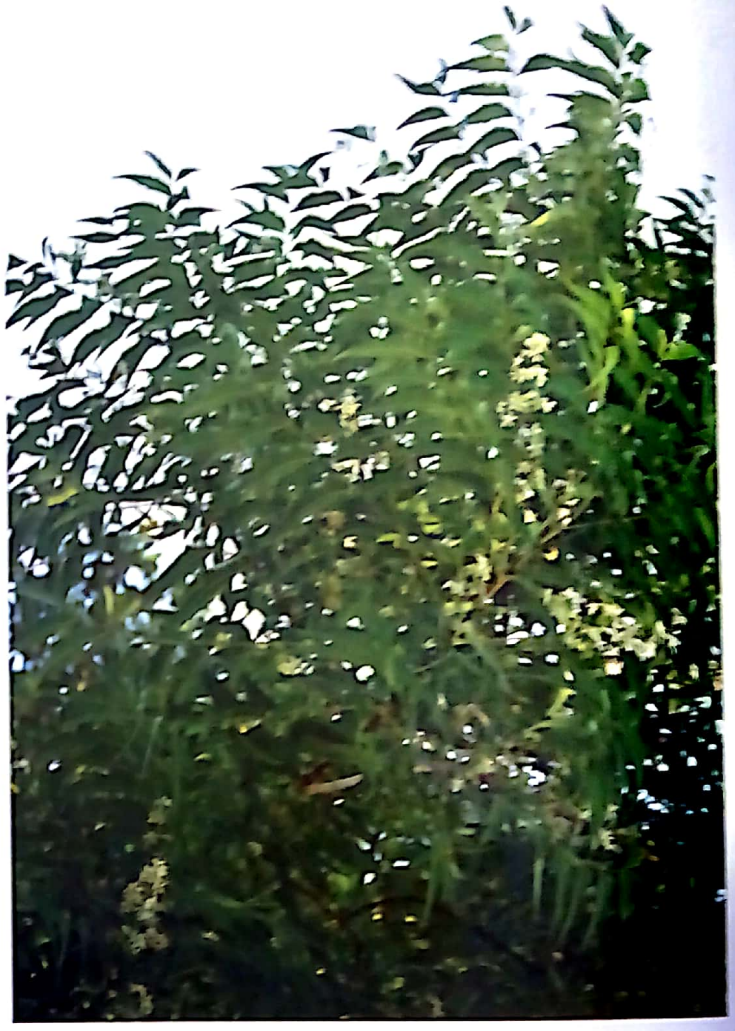

परिचय

शास्त्र कहता है कि रात्रि में वृक्ष के नीचे शयन करना रोग को आमंत्रण देना है, परन्तु यह उक्ति नीम पर चरितार्थ नहीं होती, क्योंकि रात्रि में अन्य वृक्ष कार्बन डाईआक्साइड गैस बाहर छोड़ते हैं, परन्तु नीम का वृक्ष प्राणदायक, आरोग्यता वर्धक, रोगनाशक वायु का ही उत्सर्जन करता है। अरिष्ट (न रिष्ट शुभम् स्यात्) अर्थात जिससे शरीर को कोई हानि न हो, जो स्वास्थ्यवर्धक, एवं आरोग्यता प्रदान करने वाला है, ऐसा वृक्ष नीम का है। निम्वति सिंचति स्वास्थ्य इति निम्बम्। वास्तव में नीम मृत्युलोक का कल्पवृक्ष कहा जाता है। यह सब प्रकार की व्याधियों को हरने वाला है। सर्वरोग हरो निम्ब– ऐसा इसके विषय में शास्त्रों में कहा गया है। वैद्यक ग्रन्थों में बसन्त ऋतु (विशेषतः चैत्र मास) में नीम के कोमल पत्तों के सेवन की विशेष प्रंशसा की गई है। इससे रक्त शुद्ध होता है तथा चेचक आदि भयंकर व्याधियाँ नहीं होने पाती।

कहा है जो मेष के सूर्य में नीम पत्र साग के साथ मसूर की दाल खाता है, उसे 1 वर्ष तक विष से कोई भय नहीं रहता तथा विषैले जन्तु के काटने पर भी कोई बाधा नहीं होती है। नीम पत्र का क्वाथ व्रणो के प्रक्षालनार्थ कार्बोलिक साबुन से भी अधिक उपयोगी है। कुष्ठ आदि चर्म विकारों पर भी नीम बहुत लाभदायक है। चरक ने चन्दन, जटामाँसी, अमलतास आदि 10 कंडूघ्न औषधियों में नीम की गणना की है। नीम चर्मरोग नाशक होने के साथ–साथ अनेक घातक जीवाणुओं जैसे ई० कोलाई, सालमोनेला टाइफी, स्टैफीलोकोकस, एलवस एवं एरियल आदि कीटाणुओं को नष्ट करता हैं। शोधों से ज्ञात हुआ है कि नीम लगभग 200 कीटों की जातियों की लिये घातक है। यह एक प्रचंड जीवाणुनाशी है, इसके रोम–रोम मे रक्तशोधक गुण भरे पड़े है। नीम का तेल क्षय रोग को जन्म देने वाले जीवाणु की तीन जातियों का नाश करता पाया गया है। नीम की पत्तियों के गाढ़े लेप से शीघ्र बढ़ने वाली कोशिकाओं की वृद्धि दर कम हो जाती है। अगर इस पर शोध किये जाये तो कैंसर–रोधी कोई दवा खोजी जा सकती है। नीम का तेल शुक्राणुओं को मारने में समर्थ होता है एवं मादा हारमोन्स की क्रिया में व्यवधान डालकर संतानोत्पत्ति को रोकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक कार्य दल ने नीम को प्रजनन विरोधी पौधो की सूची में रखा है।

बाह्य–स्वरूप

नीम के 25–30 फुट की ऊंचाई के सदाबहार वृक्ष होते हैं। कांड त्वक खुरदरी भूरे रंग की, पत्तियां चमकदार हरे रंग की, एवं प्रत्येक सींक पर नव पर्णक थोड़ा मुड़े हुये उपर से चमकदार नीचे से खुरदरे होते है। पुष्पागम मार्च से मई तक, पुष्प श्वेत छोटे व विशिष्ट गंध युक्त, फल छोटे अंडाकार हरित पीले रंग के, बीज केवल एक होता है जो बादामी रंग के गूदे में धँसा रहता है।

Scanned by CamScanner

रासायनिक संघटन

नीम की छाल से निम्बीन, निम्बोनीन, निम्बीडीन, एक उडनशील तेल, टैनिन और मार्गोसेन नामक एक तिक्त घटक होता है। नीम में एक तीव्र रासायनिक तत्व प्राप्त होता है जिसे लिमोनायड कहते हैं वैज्ञानिकों ने नीम के विभिन्न हिस्सों से भिन्न–भिन्न प्रकार के लिमोनायड प्राप्त किये हैं, जिनके गुण व कार्यशैली भिन्न–भिन्न होती है। यही कारण है कि लगभग 200 कीट जातियों पर नीम का असर होता है।

नीम का तेल :

नीम के बीजों से 45 प्रतिशत तक एक स्थिर तेल प्राप्त होता है इसमें मार्गेटिक, ओलिक, स्टेरिक, लिनोलिक व आरकेडिक अम्ल पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त गन्धक, एक क्षाराभ, राल, ग्लूकोसाइड तथा वसा अम्ल होते है। निम्ब नीरा में स्वतंत्र एमिनो एसिड होते है। नीम के सार भाग में टैनिक, कैल्शियम, पोटेशियन तथा लौह लवण पाये जाते है। नीमकी ताडी नीम के कुछ पुराने वृक्षों से जब वे उत्तेजना पर आते हैं, तब उनमें से एक प्रकार का मद या ताडी झरने लगती है, कई वृक्षों से यह मद वर्ष भर तक झरता है। जिस समय यह मद झरता है उस समय नीम का वृक्ष एक प्रकार की मधुर आवाज निकालता है। इसी मद को नीम की ताडी कहते है। यह स्वाद में मधुर, पिच्छिल, कटु व अप्रिय ग्रन्थी होता है। नीम का यह मद दुर्लभ औषधि है। यह रक्तशोधक है, तथा चर्मरोगों में बहुत उपयोगी है।

नीम का गोंद : नीम की छाल से पारदर्शी हल्के पीले रंग का गोद प्राप्त होता है।

गुण–धर्म

राजनिघण्टुकार ने नीम को शीतल और रूक्ष लिखा है, उनके विचार में यह कफघ्न, व्रणरोपण, छर्दि निग्रहण और शोथहर है। नाना प्रकार के पित्त के उपद्रवों को जीतता है, हृदय की दाह को शान्त करता है, परन्तु सुश्रुत ने नीम को उष्ण, रूक्ष और कटुविपाकी लिखा है। जिससे मालूम होता है कि नीम चाहे तात्कालिक परिणाम से शीतल हो, परन्तु अन्तिम परिणाम में उष्ण ही है। इसलिये हो सकता है नीम अनुष्ण हो।

1. नीम पत्र – चक्षुष्य, विपाक में कटु, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न और पित्त, अरूचि तथा विष विकार को दूर करते हैं।
2. नीम की कोपल – नीम के कोमल पत्ते संकोचक, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्र रोग और कुष्ठ को नष्ट करने वाले है।
3. नीम की सीक – रक्त, खांसी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि और प्रमेह को दूर करने वाले है।
4. नीम के फूल – पित्तनाशक, कडवे तथा कृमि और कफ को नष्ट करने वाले है।
5. कच्ची निबौरी – कटुरस, विपाक में तिक्त, स्निग्ध, लघु, उष्ण तथा गुल्म, कृमि और प्रमेह को दूर करने वाली है।
6. पक्की निबौरी – मधुर, कटु, स्निग्ध तथा रक्त पित्त, नेत्र रोग, उरःक्षत तथा क्षय रोगों को नष्ट करने वाली है।
7. नीम की छाल – स्वाद में कटु, संकोचक कफघ्न, अरूचि, वमन, ग्रहणी, कृमि तथा यकृत विकारों में लाभदायक है।
8. नीम का पंचाग– रूधिर विकार, खुजली, व्रण, दाह और कुष्ठघ्न है।
9. नीम का बीज – रेचक और कृमिघ्न है। पुरानी गठिया, पुराने जहर और खुजली पर इसका लेप करने से लाभ होता है।
10. नीम का तेल चर्म रोग नाशक है।

औषधीय प्रयोग

रक्तार्बुद : नीम की लकडी को पानी में घिसकर एक इंच मोटा लेप करने से रक्तार्बुद मिट जाती है।

नकसीर : नीम की पत्तियों और अजवायन दोनों को समभाग पीसकर कनपटियों पर लेप करने से नकसीर बन्द हो जाती है।

नीम और केशों की समस्याएं :

1. पलितरोग (बालों का असमय श्वेत होना) – नीम बीजों को भांगरा के स्वरस की तथा असना वृक्ष की छाल के क्वाथ की अनेक भावना देकर उनका तेल निकालकर विधिवत 2–2 बूँद नस्य लेने और केवल दूध भात पर रहने से पलित रोग समूल नष्ट होता है।
2. बीजों के साधारण तेल का विधिपूर्वक 2–2 बूँद नस्य लेने और केवल गाय के दूध का सेवन करने से यह रोग नष्ट हो जाता है।
3. बाल काले करने हेतु – नीम के बीजों को भागंरा और विजय सार के रस की कई भावनायें देकर बीजों का तेल निकलवाकर 2–2 बूँद नस्य लेने से तथा आहार में केवल दूध भात का प्रयोग करने से सफेद बाल काले हो जाते है।
4. गंजापन तथा केश वृद्धि के लिये – नीम पत्र 1 भाग, बेर पत्र 1 भाग दोनों को अच्छी तरह पीसकर इसका उबटन या लेप सिर पर लगाकर 1–2 घंटे बाद धो डालें, एक महीने में नये बाल उग आयेंगे।
5. नीम पत्रों को पानी में खूब उबालकर ठंडा हो जाने पर इसी पानी से सिर को धोते रहने से केश सुदृढ़ होते है, उनका गिरना या झड़ना रूक जाता है। तथा वे काले भी होने लगते हैं। इसके अतिरिक्त सिर के कई रोग फुन्सियां आदि निकलना बन्द हो जाता है।

सिर की खुजली : सिर पर छोटी–छोटी फुन्सियां हों, उनसे पूय निकलता हो या केवल खुजली चलती हो ऐसे अरूंपिका तथा क्षुद्र

Scanned by CamScanner

रोग में सिर को नीम के क्वाथ से धोकर नीम तेल नित्य लगाते रहने से शीघ्र लाभ होता है। बीजों को पीसकर लगाने से या नीम के पत्तों के क्वाथ से सिर धोने से सिर की जुँए और लीखें मर जाती हैं।

युवानपिडिका :

1. नीम पत्र, अनार का छिलका, लोध्र, हरड़ समभाग लेकर दूध के साथ पीसकर नित्य मुख पर उबटन की भांति लगाने से चेहरा साफ हो जाता है।
2. जड़ की छाल रहित लकड़ी को पानी के साथ चंदन की तरह घिसकर मुहासों पर लगाते रहने से सात दिन में पूर्ण लाभ होता हैं तथा मुहांसे समूल नष्ट हो जाते है।

दंत विकार :

1. दांतों के विकार दूर करने के लिये नीम की दातुन करनी चाहिये।
2. नीम की जड़ की छाल का चूर्ण 50 ग्राम, सोना गेरू 50 ग्राम, सैंधा नमक 10 ग्राम तीनों को एक साथ खूब खरल करे, फिर इसमें नीम पत्र स्वरस की 3 भावनायें देकर शुष्क कर शीशी में रख लें, इसके मंजन से दाँतों में से खून गिरना, पीव निकलना, मुंह में छाले पडना, मुंख से दुर्गन्ध आना, जी का मिचलाना आदि विकार दूर होते हैं।
3. 100 ग्राम जड़ को यवकूट कर आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ से गंडूष करते रहने से दांतों के अनेक रोग दूर होते हैं।

नीम और नेत्र रोग :

1. जिस नेत्र में पीड़ा हो उसके दूसरी और के कान में नीम के कोमल पत्तों का रस गरम कर 2–2 बूँद टपकावें। दोनों नेत्रों में पीड़ा हो तो दोनों कान में टपकावें।
2. नीम पत्र और लोध्र के समभाग मिश्रित चूर्ण को पोटली में बांधकर उस पोटली को जल में भिगोये हुये रखें। इस पानी को आंखों में डालने से नेत्र शोथ आदि नेत्र रोग नष्ट होते हैं।
3. यदि आंखों के ऊपर शोथ के साथ ही वेदना हो और भीतर खुजली चलती हो तो नीम पत्र तथा सौंठ को पीस थोड़ा सैंधा नमक मिलाकर कुछ गरम कर रात के समय एक वस्त्र की पट्टी पर रखकर बांधते रहने से 2–3 दिन में नेत्र का यह विकार दूर हो जाता है। इस समय ठंडे पानी एवं शीतवायु से नेत्रों को बचाना चाहिये।
4. आंखों में खुजली के साथ जलन हो तो 500 ग्राम नीम के पत्तों को दो मिट्टी के सराव के मध्य में रख कंडो की आग में फूँक देवें। स्वांगशीत होने पर अन्दर की भस्म को 100 ग्राम नीबूं रस में खरलकर सुखा लें। इसका अंजन करने से लाभ होता है तथा नेत्रों के विकार नष्ट होते हैं।
5. 50 ग्राम नीम पत्रों को जल के साथ महीन पीस टिकिया बना सरसों के तेल में पकावें। जब वह जलकर काली हो जाये तब उसे उसी तेल में घोटकर उसमें दसवां भाग कपूर तथा दसवा हिस्सा कलमीशोरा मिला खूब घोटकर कांच की शीशी में भर लें, इसे रात्रि के समय आँख में अंजन करने से तथा प्रातः त्रिफला के पानी से प्रक्षालन करने से खुजली, जलन, लालिमा, जाला, धुन्ध आदि दूर होकर ज्योति बढ़ती है।
6. नीम की कोंपले 20 नग, जस्ता भस्म 20 ग्राम, लौंग 6 नग, छोटी इलायची 6 नग और मिश्री 20 ग्राम सबको एकत्र खूब महीन पीस छानकर सुर्मा बना लें। प्रातः–सायं सलाई से लगाने से धुंध जाला आदि विकार नष्ट होकर नेत्र ज्योति बढ़ती है।
7. 10 ग्राम साफ रूई को फैलाकर उस पर 20 नीम के सूखे पत्ते बिछाकर 1 ग्राम कपूर का चूर्ण छिड़क कर रूई को लपेट कर बत्ती बना लें। इस बत्ती को 10 ग्राम गाय के घी में भिगोकर इससे काजल बना लें, इस काजल को रात्रि के समय नेत्रों में लगाने से नेत्रों का कसकसाना, धुंध मालूम होना, पानी गिरना, लाली आदि समस्त नेत्र रोग मिट जाते है, यह बच्चों के लिये और भी गुणकारी है।
8. वमनी (सलाक रोग), जिसमें आखों की पलके मोटी हो जाती है, खुजली होती है, बरौनी झड़ जाती है, तथा पलकों का किनारा लाल हो जाता है, नीम पत्र के रस को गाढ़ा कर अंजन के रूप में लगाते रहने से लाभ होता है।

मोतियाबिंद : बीज की मींगी का चूर्ण नित्य 1 या 2 सलाई नेत्रों में लगाने से लाभ होता है।

आंख की फूली : नीम के छाया शुष्क पुष्पों में समभाग कलमी शोरा मिलाकर महीन पीस कपडे में छान लें, इसको आंख में अंजन की तरह प्रयोग करने से आंख की फूली, धुंध जाला इत्यादि रोगों में लाभ होता है और आंखों की ज्योति बढ़ती है। रतौंधी में कच्चे फल का दूध नेत्रों में लगायें।

सिर दर्द :

1. आधाशीशी में सूखे नीम के पत्ते, काली मिर्च और चावल समभाग महीन चूर्ण कर, सूर्योदय से पूर्व जिस ओर पीड़ा हो, उसी ओर की नाक में 125 से 250 मिलीग्राम तक नस्य लेने

नीम के बीज

Scanned by CamScanner

से पुरानी से पुरानी व्याधि शीघ्र नष्ट होती है।

2. गर्मी से घूमने फिरने से होने वाले सिर दर्द मे नीम तेल की मालिश ललाट पर करें।

ज्वर :

1. इन्फ्लुएन्जा में नीम पत्र, गिलोय, तुलसी पत्र, हुरहुर के पत्र 20–20 ग्राम तथा काली मिर्च 6 ग्राम महीन पीस जल के साथ खरल कर 250–250 मिलीग्राम की गोली बनायें, तथा 2–2 घंटे के अन्तर पर 1–1 गोली गरम जल से सेवन करें।

2. नीम की छाल 5 ग्राम, लौंग 500 मिलीग्राम या दाल चीनी 500 मिलीग्राम चूर्ण कर 2 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम जल के साथ लेने से साधारण ज्वर, नियतकालिक ज्वर एवं रक्त विकार दूर होते हैं।

3. नीम की छाल, धनिया, लाल चन्दन, पदमकाष्ठ, गिलोय, और सौंठ का क्वाथ सब प्रकार के ज्वरों का नाशक है।

कर्णस्राव :

1. नीम के मद में समभाग मधु मिलाकर कान को अच्छी प्रकार साफ कर 2–2 बूँद प्रातः–सायं नित्य डालने से 1–2 माह में लाभ होता है।

2. कान से पूय निकलती हो तो निम्ब तेल में शहद मिलाकर उसमें रूई की बत्ती भिगोकर कान में रखने से लाभ होता है।

3. नीम तेल 40 ग्राम, मोम 5 ग्राम, आग पर रखकर मोम गल जाने पर उसमें फुलाई हुई फिटकरी का 750 मिलीग्राम चूर्ण भली प्रकार मिलाकर शीशी में रख लें, कान साफ कर 3–4 बूंद दिन में 2 बार डालने से अक्सीर में लाभ होता है।

4. नीम पत्र रस 40 ग्राम को, 40 ग्राम तिल तेल में पकावें, तेल मात्र शेष रहने पर छान कर 3–4 बूंद कान में डालें।

स्तन पाक (स्तनव्रण) :

1. नीम के पत्तियों की राख 25 ग्राम, सरसों का तेल 50 ग्राम, आग पर रखकर नीम के डंडे से खूब घोंट ले, नीम पत्र के क्वाथ से व्रण को धोकर, राख मिला तेल चुपड दे, तथा कुछ सूखी राख ऊपर से चुपडकर पट्टी बांध दें। 2–3 दिन में काफी आराम हो जाता है। फिर प्रतिदिन नीम क्वाथ से धोकर नीम तेल लगाते रहे, व्रण शीघ्र भरकर सूख जाता है।

2. दूध बन्द करने के लिये नीम पत्तों का कल्क लेप करते रहें।

यक्ष्मा : नीम तेल की 4–4 बूंदे कैप्सूल में भरकर दिन मे 3 बार देवें।

दमा : नीम के बीजों का शुद्ध तेल 3–6 बूंद तक पान में रखकर खाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

हिक्का : 2 नग सींक को 10 ग्राम जल में पीस, मोरपंख के चांद की भस्म 125 मिलीग्राम मिला कर सेवन करें।

गलित कुष्ठ : नीम की छाल और हल्दी 1–1 किलो, गुड 2 किलो, बडे मटके में भरकर उसमें 50 किलो जल डालकर मुंह बन्दकर घोडे की लीद से मटके को ढक दें, 15 दिन बाद निकाल कर अर्क खीच ले। 100 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम सेवन कराने से गलित कुष्ठ में लाभ होता है। दवा सेवन के बाद बेसन की रोटी घी के साथ सेवन करायें।

उदर कृमि :

1. आंत्रकृमि में नीम की अन्तर छाल, इन्द्रजौ और वायबिडंग का सम्मिलित चूर्ण – 1½ ग्राम, भुनी हींग 250 मि०ग्रा० चारों द्रव्यों को मधु मिला दिन में 2 बार सेवन कराते रहने से आंत्र में रहने वाले सब प्रकार के कृमियों का नाश हो जाता है।

2. बैंगन या किसी और सब्जी के साथ नीम के 8–10 पत्तों को छौंक कर खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।

अम्लपित्त :

1. नीम की सींक, धनियां, सौंठ और शक्कर 6–6 ग्राम एक साथ मिलाकर बनाया गया क्वाथ प्रातः–सायं पीने से खट्टी डकारें, अपचन, अधिक प्यास दूर होती है। पित्तज्वर में भी यह लाभकारी है।

2. पंचाग का महीन चूर्ण 1 भाग, विधारा चूर्ण 2 भाग, सत्तू 10 भाग तीनों को मिलाकर रखें। उचित मात्रा में शहद के साथ सेवन करने से भयंकर अम्लपित्त नाश होता है।

उदरशूल : नीम के मोटे वृक्ष के तने की अन्तर छाल 40–50 ग्राम को जौ के साथ कूटकर 400 ग्राम जल में पकायें व इसमें 10 ग्राम नमक भी डाल दें। आधा शेष रहने पर गरम–गरम ही छानकर पिलाने से शीघ्र लाभ होता है।

अतिसार : जौ कूट की हुई नीम की 50 ग्राम अन्तर छाल को 300 ग्राम जल में आधा घंटे उबालकर छान लें, फिर इसी छनी हुई छाल को पुनः 300 ग्राम जल में पकायें, 200 ग्राम शेष रहने पर छानकर शीशी में भर लें, और इसमें पहले छना हुआ जल भी मिला दें, रोगी को 50–50 ग्राम दिन में 3 बार पिलाने से पतले दस्त आने बन्द हो जाते हैं।

आमातिसार : अन्तर छाल की राख 10 ग्राम को दही के साथ दिन में दो बार सेवन करें।

रक्तातिसार : नित्य प्रातः पकी निबौलियां 3–4 खाने से लाभ होता है।

मंदाग्नि : पकी निबौली 3–4 खाने से मंदाग्नि भी मिटती है।

पाडु व कामला :

1. पंचाग का महीन चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार 5 ग्राम घी और 10 ग्राम शहद मिलाकर सेवन करें।

2. यदि घी और शहद अनुकूल न हो तो पंचाग का 1 ग्राम चूर्ण गोमूत्र या जल या दूध किसी एक के साथ भी ले सकते है।

Scanned by CamScanner

रोग

1. नीम की सींक 6 ग्राम और श्वेत पुनर्नवा मूल 6 ग्राम दोनों को जल में पीस छानकर कुछ दिनों तक पिलाते रहने से अवश्य लाभ होता है।
2. नीम पत्र, गिलोय पत्र, गूमापत्र और छोटी हरड़ 6–6 ग्राम सबको कूटकर 200 ग्राम पानी में पकावें, 50 ग्राम शेष रहने पर छानकर 10 ग्राम गुड़ मिलाकर, प्रातः–सायं सेवन करने से पांडु में विशेष लाभ होता है। इस क्वाथ के सेवन से पूर्व 200 मि०ग्रा० शिलाजीत 6 ग्राम मधु के साथ चाट लें।
3. मिट्टी खाने से उत्पन्न पाडुं रोग में तथा मिट्टी की आदत छुड़ाने के लिये नीम पत्र के रस की यथेष्ट भावनायें देकर मिट्टी खिलाने से पाडुं रोग नष्ट होता है।
4. यदि पित्तनलिका में मार्गावरोध होने से कामला रोग हो तो 100 ग्राम नीम पत्र रस में 3 ग्राम सौंठ का चूर्ण और 6 ग्राम शहद मिलाकर 3 दिन प्रातः पिलाने से लाभ होता है। घी, तेल, शक्कर व गुड़ से पहरेज रखें। पथ्य में दही भात का सेवन करें।
5. नीम पत्र, नीम की जड़ की छाल, फूल और फल समभाग शुष्क कर महीन चूर्ण कर 1 ग्राम की मात्रा में दिन में दो बार घी व शहद में मिला गोमूत्र जल या दूध के साथ सेवन करें।
6. 10 ग्राम नीम पत्र स्वरस में 10 ग्राम अडूसा पत्र स्वरस व 10 ग्राम मधु मिला नित्य प्रातः सेवन करें।
7. नीम पत्र रस 200 ग्राम में थोड़ी शक्कर मिलाकर, किंचित उष्ण कर, सेवन करें। 3 दिन तक दिन में एक बार सेवन से भी लाभ हो जाता है।
8. नीम के 5–6 कोमल पत्तों को पीसकर, शहद मिलाकर सेवन करने से भी पाडुं, मूत्रविकार और उदर विकार में भी लाभ होता है।
9. 10 ग्राम पत्ररस में 10 ग्राम मधु मिश्रित कर 5–6 दिन पीने से कामला में आशातीत लाभ हो जाता है।

प्रमेह और सुजाक :

1. नीम पत्रों को पीस टिकिया बनाकर थोड़े से गाय के घी में तले, टिकिया जल जाने पर, घी को छानकार रोटी के साथ खाने से सात दिन में लाभ होगा।
2. नीम पत्र रस 10 ग्राम में मधु मिलाकर प्रतिदिन सेवन करें। सुजाक 20 ग्राम नीम पत्र रस में 1 ग्राम नीला थोथा घोटकर सुखा लें, कौड़ियों में रखकर भस्म करें। 250 मिलीग्राम की मात्रा में गाय के दूध के साथ दिन में दो बार सेवन करें।

मलेरिया :

1. नीम की जड़ की 20 ग्राम अन्तर छाल यवकूट कर, इसमें 160 ग्राम जल मिला मटकी में रात भर भिगोकर प्रातः पकायें, 40 ग्राम जल शेष रहने पर छानकर सुखोष्ण पिलाये, इसी प्रकार रात्रि में पिलायें, या दिन में 3 बार पिलाये।
2. नीम जड़ की 50 ग्राम अन्तर छाल, यवकूट कर 600 ग्राम जल में 18 मिनट तक उबाल कर छान लें। मलेरिया ज्वर में जब किसी औषधि से लाभ न हो तो इस फांट को 40 से 60 ग्राम की मात्रा में ज्वर चढ़ने से पूर्व 2–3 बार पिलाने से ज्वर रूक जाता है।

संग्रहणी : इसकी ताड़ी को सुबह–सायं 7–7 बूंद ताजे तक्र में मिलाकर 21 दिन सेवन करें।

हैजा :

1. 10 ग्राम नीम पत्र के साथ 1½ ग्राम कपूर के सेवन करने से हैजे का आक्रमण नहीं होने पाता।
2. हींग 5 ग्राम, इलायची बड़ी 1, लौंग 5 नग तथा नारियल जटा भस्म 250 मिलीग्राम, सबको 50 ग्राम जल में महीन पीस छानकर थोड़ा गरम कर 2–2 घंटे से देवें। पेशाब बन्द हो गया हो तो नीम के फूलों को पानी में पीस पेडू पर बांध देवे।

अरूचि कोमल : 8–10 कोमल पत्तों को घी में भूनकर खाने से तीव्र अरूचि शीघ्र दूर होती है।

वमन :

1. नीम की 7 सीकों को 2 बड़ी इलायची और 5 काली मिर्च के साथ महीन पीसकर 250 ग्राम जल के साथ सेवन करें।
2. वमन अरूचि आदि में छाल का 5–10 मिलीग्राम स्वरस मधु मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।
3. नीम पत्र 20 ग्राम को अच्छी तरह पीसकर 100 ग्राम जल में घोल व छानकर 50–50 ग्राम पिलाये।
4. 5 ग्राम नीम पत्र के कल्क की गोली पानी से या मधु से दें।

अर्श :

1. 50 ग्राम नीम तेल, कच्ची फिटकरी 3 ग्राम, चौकिया सुहागा

नीम की गिरी

Scanned by CamScanner

3 ग्राम खूब महीन पीसकर मिला दें। शौच क्रिया में प्रक्षालन के बाद इसे उंगली से गुदा के भीतर तक लगाने से कुछ ही दिनों में मस्से मिट जाते हैं।

2. नीम के बीजों की तथा बकायन के बीजों की शुष्क गिरी, छोटी हरड़, शुद्ध रसौत 50–50 ग्राम, घी में भूनी हींग 30 ग्राम सबका महीन चूर्ण बनाकर उसमें 50 ग्राम बीज निकली हुई मुनक्का घोटकर मटर जैसी गोलियां बना लें, 1–4 गोली दिन में 2 बार बकरी के दूध के साथ या ताजे जल के साथ सेवन करने से सब प्रकार की बवासीर में लाभ होता है। खूनी बवासीर में खून गिरना बन्द हो जाता है। तथा वातार्श की वेदना दूर होती है।

3. छिलके सहित कूटी हुई सूखी निबौरी के 10 ग्राम महीन चूर्ण को प्रातः काल बासी जल के साथ सेवन करने से अर्श के रोगी को विशेष लाभ होता है (सेवन काल में घी का प्रयोग अवश्य करें, अन्यथा नेत्र ज्योति क्षीण हो सकती है)।

4. नीम बीज की गिरी, एलुआ और रसौत समभाग एक साथ खरल कर झड़बेरी जैसी गोलियां बनाकर नित्य प्रातः 1 गोली तक्र के साथ सेवन करना अति लाभदायक है।

5. निम्ब गिरी का तेल 2–5 बूंद तक शक्कर के साथ खाने से या कैप्सूल में भर कर निगलने से हर प्रकार की बवासीर में लाभ होता है। सेवन काल में केवल दूध और भात का आहार लें।

6. बीजों की गिरी 100 ग्राम और वृक्ष की जड़ की छाल 200 ग्राम दोनों को पीसकर 1–1 ग्राम की गोलियां बना 4–4 गोली दिन में 4 बार सात दिन तक खिलाने से तथा नीम क्वाथ से मस्सों का धोने से अथवा पत्रों की लुगदी मस्सों पर बांधने से आशातीत लाभ होता है।

अर्शांकुर या मस्सों पर लेपन :

1. 100 ग्राम सूखी निबौली 50 ग्राम तिल के तेल में तलकर पीस लें, बाकी बचे तेल में 6 ग्राम मोम, 1 ग्राम फूला हुआ नीला थोथा मिलाकर मलहम बना लें। इसे दिन में 2–3 बार मस्सों पर लगाने से मस्से नष्ट जाते है।

2. निम्ब बीज गिरी 20 ग्राम, फिटकरी का फूला 2 ग्राम और सोना गेरू 3 ग्राम, सभी को घोटकर मलहम जैसा बना लें। यदि मलहम जैसा न बने तो उसमें थोड़ा घी या मक्खन मिला कर या गिरी का तेल मिला कर घोटना चाहिये। इसे लगाने से मस्सों की पीड़ा तत्काल दूर होती है। रक्तस्राव बन्द होता है, एवं मस्से मुरझा जाते हैं।

3. 50 ग्राम कपूर, नीम बीज गिरी 50 ग्राम, दोनों का तेल निकाल कर अल्प मात्रा में मस्सों पर लगाते रहने से, वे कुछ ही दिनों में सूख कर गिर जायेंगे।

नीम की गिरी, रसौत, कपूर व सोना गेरू सभी को पानी में पीसकर लेप करते रहने से, या इन चारो द्रव्यों को एरण्ड तेल में घोट कर मलहम बनाकर लगाते रहने से मस्से मुरझा जाते है।

नीम और स्त्री रोग :

1. योनिशूल – निबौरी को नीम पत्र रस में 12 घंटे पीस कर लम्बी गोलियां बना लें, गोली को कपडे के भीतर रख सिल लें और एक डोरा लटकता रखें। 1 गोली योनिमार्ग में धारण करने से शूल मिट जाता है।

2. नीम के बीजों की गिरी और एरंड के बीजों की गिरी तथा नीम पत्र रस तीनों को समभाग घोटकर तथा बत्ती बना योनि में धारण करने से योनिशूल मिट जाता है।

रजोरोध :

1. नीम की छाल 20 ग्राम जौकूट की हुई, गाजर के बीज 6 ग्राम, ढाक के बीज 6 ग्राम, काले तिल और पुराना गुड़, 20–20 ग्राम सबको मिट्टी के बरतन में 300 ग्राम पानी के साथ पकावें, 100 ग्राम शेष रहने पर छानकर सात दिन तक पिलावें, मासिक धर्म खुलकर होने लगता है (गर्भवती स्त्री को नहीं देना चाहिये)।

2. नीम की छाल 4 ग्राम, पुराना गुड 20 ग्राम दोनों को 300 ग्राम पानी में पकावें, 100 ग्राम पानी शेष रहने पर छान कर पिलावें। रूका हुआ मासिक धर्म होने लगता है।

3. योनि शैथिल्य – छाल को अनेक बार पानी में धोकर, उस पानी में रूई को भिगोकर प्रतिदिन योनि में रखें, तथा धोने से बची हुई छाल को सुखाकर जलाकर उसका धुंआ योनि मुख पर देने से तथा नीम के पानी से बार–बार योनि को धोने से योनी एक दम प्रगाढ़ हो जाती है।

अश्मरी :

1. नीम पत्रों की 20 ग्राम राख कुछ दिनों तक लगातार जल के साथ दिन में 3 बार खाने से पथरी गल जाती है।

2. 120 ग्राम नीम पत्र पीसकर, 2 किलो पानी में उबालें, जब चौथाई पानी जल जाये, तब नीचे उतारकर बफारा देने से पथरी निकल जाती है।

3. 2 ग्राम नीम पत्रों को 50 से 100 ग्राम तक जल में पीस छानकर डेढ़ मास तक सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाते रहने से पथरी गल जाती है।

प्रदर :

1. नीम की छाल और बबूल की छाल बराबर–बराबर मात्रा में दरदरा कूट, चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर प्रातः–सायं सेवन करने से श्वेत प्रदर में लाभ होता है।

2. कफज रक्त प्रदर पर 10 ग्राम छाल के साथ समभाग गिलोय को पीसकर 2 चम्मच मधु मिला कर दिन में 3 बार पिलावें।

कष्ट प्रसव :

1. कष्ट प्रसव एवं सूतिका रोग में 3–6 ग्राम निम्ब बीज चूर्ण ग्राम का सेवन लाभकारी है। शुष्क फलों के चूर्ण का दाल तथा शाक में छौंक लगाने से वे विशेष गुणकारी एवं अनेक

Scanned by CamScanner

रोगनाशक हो जाते हैं।

2. प्रसव के पश्चात रुके हुये दूषित रक्त को निकालने के लिये छाल का क्वाथ 10–20 ग्राम की मात्रा में 6 दिन तक प्रातः–सायं पिलाना चाहिये।

3. प्रसूता को नीम की 6 ग्राम छाल पानी के साथ पीसकर 20 ग्राम घी मिला, कांजी के साथ पिलाने से सूतिका रोग शीघ्र ही शान्त हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : सींक और पत्तरस 25 ग्राम उन्नाव के साथ पिलायें।

कफज मेह : सींकों के क्वाथ में 1 ग्राम त्रिकटु चूर्ण घुरककर 1 महीने तक सेवन करने से कफज मेह दूर हो जाते हैं।

उपदंश

1. 20 ग्राम छाल को जौकूट कर 1 किलो खौलते हुए जल में डालकर, रात भर रहने दें, सुबह छानकर 50 ग्राम रोगी को पिलावे, शेष जल से उपदंश के व्रणों को साफ करें। पथ्य में केवल घी, खांड और गेहूं की पतली रोटी देवें।

सिकता मेह : निम्ब छाल के क्वाथ को 10–20 ग्राम नियमित रूप में प्रातः काल सेवन करें।

सुजाक : छाल का जौकूट चूर्ण 40 ग्राम, 2½ किलो जल के साथ मिट्टी के बरतन में पकायें, 200 ग्राम शेष रहने पर छान कर पुनः पकावें और 20 या 25 ग्राम कलमी शोरा चूर्ण चुटकी से डालते जायें और नीम की लकड़ी से हिलाते जायें। शुष्क हो जाने पर पीस छानकर रख लें। 250 मिलीग्राम की मात्रा प्रतिदिन गाय के दूध की लस्सी के साथ सेवन कराने से शीघ्र लाभ हो जाता है।

गर्भ निरोध :

1. नीम के शुद्ध तेल में रूई का फोहा तर करके सहवास से पूर्व योनि के भीतर रखने से शुक्राणु 1 घंटे के भीतर ही मर जाते है और गर्भ स्थापित नहीं होता।

2. 10 ग्राम नीम के गोंद को 250 ग्राम पानी में गलाकर कपड़े में छान लें, उसमें 1 हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा साफ मलमल का कपड़ा भिगोकर छाया में सुखा ले, सुखने पर रूपये बराबर गोल–गोल टुकडे काटकर साफ शीशी में भर लें। सहवास से पूर्व एक टुकड़ा अन्दर सांठ ले, इससे गर्भ नहीं ठहरता एक घंटे बाद निकालकर फेंक दें।

वातरक्त, गठिया :

1. नीम पत्र 20 ग्राम, कड़वे परवल के पत्र 20 ग्राम दोनों को 300 ग्राम जल में पकाकर, चौथाई क्वाथ शेष रहने पर शहद मिला कर प्रातः–सायं सेवन करने से रक्त की शुद्धि, दोषों का

Scanned by CamScanner

पाचन व शमन होकर लाभ होता है। इसके साथ ही नीम के पत्तों को कांजी या छाछ मे उबाल पीस कर लेप करते रहना चाहिये।

2. 20 ग्राम नीम की अन्तर छाल को पानी के साथ खूब महीन पीसकर वेदना स्थल पर गाढा लेप करने से तथा सूख जाने पर उतार कर पुनः लेप करने से 3–4 बार मे ही दर्द मिट जाता है।
3. नीम की छाल का अर्क 10–20 बूँद 2–4 दिन तक सेवन करें, इसके दो घंटे पश्चात् ताजी बनी हुई रोटी घी के साथ आहार में लेने से लकवा, अर्द्धाङ्ग व गठिया में लाभ होता है, व कई प्रकार के अन्य विकार भी दूर होते हैं।
4. आमवात (गठिया) में तेल की मालिश करने से लाभ होता है।
5. तेल की कुछ बूंदे पान में लगाकर खिलाने से तथा रास्नादि क्वाथ में इसकी 30 बूंद डाल कर पिलाने से ऐंठन तथा कई तरह के वात विकार दूर हो जाते है।

कफज्वर : नीम छाल, सौंठ, पीपलामूल, हरड, कुटकी और अमलतास को समभाग लेकर 1 किलो पानी में पकायें। अष्टमांश शेष क्वाथ की 10–20 ग्राम सुबह–शाम सेवन करें।

विषों पर :

1. निबौरी 2 भाग तथा सैंधा नमक व काली मिर्च का चूर्ण 1–1 भाग सबको एकत्र घोटकर घी और मधु मिलाकर खिलाने से स्थावर और जागंम विष नष्ट होता है।
2. 8–10 पकी व कच्ची निबौलियों को पीसकर गरम जल में मिलाकार पिलाने से उसी समय वमन होकर अफीम, संखिया, बच्छनाभ आदि विषों से ग्रस्त व्यक्ति शीघ्र ही स्वस्थ हो जाता है।

जीर्णज्वर : निम्ब छाल, मुनक्का और गिलोय समभाग मिलाकर 100 ग्राम जल में क्वाथ कर 20 ग्राम की मात्रा में कुछ दिन सुबह, दोपहर तथा सायं सेवन करें।

मलेरिया :

1. नीम तेल की 5–10 बूंद दिन में 1 या 2 बार सेवन करनी चाहिये।
2. नीम के कोमल पत्तों में अर्ध भाग फिटकरी भस्म मिला खरलकर 500–500 मिलीग्राम की गोलिया बना लें। 1–1 गोली मिश्री के शरबत के साथ लेने से सब प्रकार के ज्वर विशेषतः मलेरिया में विशेष लाभ होता है।

रक्त विकार : नीम की जड़ की छाल रक्त शुद्धिकारक द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। इसका क्वाथ या शीत निर्यास बनाकर 5–10 ग्राम की मात्रा नित्य पीने से रक्त विकार दूर होते है।

रक्तपित्त :

1. रक्तपित्त के रोगी को नीम पत्र 10 ग्राम का कल्क बनाकर सेवन करना चाहिये।
2. नीम पत्र रस और अडूसा पत्र रस 20–20 ग्राम दोनों में थोड़ा मधु मिला दिन में 2 बार सेवन करने से उत्तम लाभ होता है।

प्लेग :

1. नीम की 20 ग्राम अंतर छाल को 50 ग्राम पानी के साथ पीस–छानकर प्रातः–सायं पिलाने से तथा पत्तों को बारीक पीसकर पुल्टिस बाँधने से प्लेग की गांठे बिखर जाती है और ज्वर में शान्ति मिलती है।
2. नीम के पंचाग को पानी में कूट–छानकर 10–10 ग्राम की मात्रा में 15–15 मिनट के अंतर से पिलाने से और गांठों पर इसके पत्तों की पुल्टिस बांधने से तथा आसपास इसकी धूनी करते रहने से प्लेग के रोग में बड़ा लाभ होता है।
3. जब प्लेग फैला हुआ हो, उस समय नीम के सेवन से प्लेग का आक्रमण नहीं होता। नीम एक योगवाही द्रव्य है जो शरीर के छोटे–छोटे छिद्रो में पहुंचकर वहां के जन्तुओं को नष्ट करता है।
4. नीम की ताड़ी में कपास या

Scanned by CamScanner

कपड़े को खूब तर कर प्लेग की गांठ पर बांधते रहने से लाभ होता है।

लू लगने पर : पलाश चूर्ण 10 ग्राम, मिश्री 10 ग्राम, एकत्र पानी के साथ पीस-छानकर पिलाने से लू लगने के उपद्रव शान्त हो जाते है।

चेचक और नीम

1. नीम की रक्तवर्ण की कोमल पत्तियां 7 नग और काली मिर्च 7 नग, इनको 1 महीने तक नियम पूर्वक खाने से 1 साल तक चेचक निकलने का डर नहीं रहता।
2. नीम के बीज, बबूल के बीज और हल्दी इन तीनों को बराबर मात्रा में लेकर शीतल जल में पीस-छानकर कुछ दिनों तक पीने से शीतला निकलने का डर नहीं रहता है।
3. 3 ग्राम नीम की कोंपलों को 15 दिन तक लगातार खाने से 6 मास तक चेचक नहीं निकलती, अगर निकलती भी है तो आंखे खराब नहीं होती।
4. चेचक के दानों में अगर बहुत गर्मी हो तो नीम की 10 ग्राम कोमल पत्तियों को पीसकर उसका रस बहुत पतला कर लेप करना चाहिये, चेचक के दानों पर कभी भी मोटा लेप नहीं करना चाहिये।
5. नीम के बीजों की 5–10 गिरी को भी पानी में पीसकर लेप करने से चेचक के दानों की जलन शांत होती है।
6. चेचक के रोगी को अधिक प्यास लगती हो तो नीम की छाल को जलाकर उसके अंगारों को पानी में डालकर बुझा लें और इस पानी को छानकर रोगी को पिलाने से प्यास बुझ जाती है अगर प्यास इससे भी शान्त न हो तो 1 किलो पानी में 10 ग्राम कोमल पत्तियों को उबालकर जब आधा पानी शेष रह जाये, तब छान कर पिलाये। प्यास के अतिरिक्त यह चेचक के विष एवं ज्वर के वेग को भी हल्का करता है। चेचक के दाने भी शीघ्र सूख जाते है।
7. यदि चेचक खुलकर ना निकले और रोगी बैचेन हो, छटपटाने और प्रलाप करने लगे तो नीम की हरी पत्तियों का रस 10 ग्राम सुबह, दोपहर तथा शाम को पिलाना चाहिये।
8. जब चेचक ठीक हो जाये तो नीम के पत्तों के क्वाथ से स्नान करना चाहिये।
9. जब चेचक के दानों के खुरंड सूखकर उतर जाते है तो उनकी जगह पर छोटे-छोटे गड्ढे दिखाई देते हैं और आकृति बिगड़ जाती है, उन स्थानों पर नीम का तेल अथवा नीम के बीजों की मगज पानी में घिसकर लगाया जाये तो दाग मिट जाते हैं।
10. रोगी के अगर बाल झड़ जाये तो सिर में कुछ दिनों तक नीम का तेल लगाने से बाल फिर से जम जाते हैं।
11. नीम का उबटन – नीम की जड़ की ताजी छाल और नीम के बीज की गिरी 10–10 ग्राम दोनों को अलग-अलग नीम के ताजे पत्र रस में पीसकर एकत्र कर भली प्रकार मिला लें। मिलाते समय ऊपर से पत्ते का रस डालते जाये, जब मिलकर उबटन की तरह हो जाये, तब प्रयोग में लाये, यह उबटन शरीर के मैल, खुजली, दाद, वर्षा तथा ग्रीष्म में होने वाली फुन्सिया, शीतपित्त, शारीरिक दुर्गन्ध, पसीने में अधिक नमक का अंश निकलना आदि त्वचा के सभी विकारों को दूर करता है।
12. चेचक के उपद्रवों पर 10 ग्राम नीम के कल्क में 5 नग काली मिर्च का चूर्ण बुरककर, नित्य प्रात: कुछ दिन सेवन करने से बहुत लाभ होता है।

भूत बाधा निवारणार्थ : नीम की लकड़ी सूतिका गृह में जलाने से नवजात शिशु को किसी प्रकार की भूतबाधा का भय नहीं रहता।

नीम और कुष्ठ रोग : नीम मनुष्य के शरीर में उत्पन्न होने वाले अनेक रोगों में लाभकारी है, परन्तु इसका प्रधान क्षेत्र कुष्ठ, चर्मरोग और रक्तरोग है। चर्म रोगों को दूर करने के लिये संसार में इसके तुल्य कोई दूसरी औषधि नहीं है। कुष्ठरोगी को निम्न नियमों का पालन करना चाहिये।

1. कुष्ठ रोगी को बारह मास नीम वृक्ष के नीचे निवास करना चाहिये।
2. नीम की लकड़ी की दातुन करनी चाहिये।
3. शय्या पर नीम की ताजी पत्तियाँ बिछानी चाहिये।
4. नीम की पत्तियों के क्वाथ से स्नान करना चाहिये।
5. नीम के तेल में नीम की पत्तियों की राख मिलाकर व्रणों पर रोज लगाना चाहिये।
6. प्रातःकाल 10 मिलीलीटर नीम की पत्तियों का स्वरस पीना चाहिये।
7. पूरे शरीर में नीम पत्र स्वरस व नीम तेल की मालिश करनी चाहिये।
8. भोजनोपरांत दोनों समय 50–50 ग्राम नीम का मद्य पीना चाहिये।
9. पंचांग का 10 ग्राम चूर्ण ब्रह्मचर्य पूर्वक नियमित रूप से खैर के 20 ग्राम क्वाथ के साथ सेवन करने से बहुत लाभ होता है।
10. नीम के पांचो अंग 1–1 भाग लेकर शुष्क चूर्ण बनालें, फिर उसमें त्रिकटु व त्रिफला के प्रत्येक द्रव्य और हल्दी का चूर्ण 1–1 भाग मिलाकर सुरक्षित रखें। 2 से 3 ग्राम तक शहद, घी या गरम जल के साथ सेवन करने से खांसी, विष, प्रमेह पिडिका एवं कुष्ठादि रोग नष्ट होते है।
11. नीम के बीजों की गिरी कुष्ठ रोगी को प्रथम दिन 1 गिरी, दूसरे दिन 2 गिरी, इसी प्रकार क्रमश: 1–1 गिरी बढ़ाते हुये, सौ गिरी तक खिलावें, फिर घटाते हुये 1 गिरी पर आ जाये और इसका सेवन बन्द कर दें। पथ्य सेवन काल में चने की रोटी और घी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं देना चाहिय। कुष्ठ

Scanned by CamScanner

पर यह योग परम लाभदायक है।

श्वेत कुष्ठ

1. ताजे नीम पत्र पांच नग और हरा आवंला 10 ग्राम (हरे आवले के अभाव में शुष्क फल 6 ग्राम) लें। प्रात: सूर्योदय के पूर्व ही ताजे जल में पीस छान कर पीने से तथा केले के क्षार में हल्दी गौमूत्र के साथ पीसकर श्वेत दागों पर लगाते रहने से लाभ होता है।
2. गोरखमुंडी के फूल, कच्ची हल्दी और गुड़ समभाग कूटकर मटके में भर कर उसमें 10 गुना जल डालकर अच्छी तरह मुंह बन्द कर 15 दिन घोड़े की लीद में दबाकर रख दें, फिर अर्क खींच लें, 100 ग्राम की मात्रा में प्रात–सायं 3–4 मास सेवन करने से समस्त शरीर का श्वेत कुष्ठ भी नष्ट हो जाता है। सेवन काल में दूध, दही तथा छाछ से परहेज रखें। नमक का प्रयोग कम करें। श्वेत कुष्ठ के अतिरिक्त अन्य कुष्ठ पर भी लाभकारी है।
3. नीम पत्र, पुष्प तथा फल समभाग लेकर जल के साथ महीन पीस लें। 2 ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन करने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है।

चर्म रोग

1. छाजन, दाद, खुजली, फोड़ा, फुंसी, उपदंश आदि पर 100 वर्ष पुराने नीम वृक्ष की छाल की सूखी छाल को महीन पीस लें, रात्रि में 3 ग्राम चूर्ण को 250 ग्राम जल में भिगो दो और प्रातः छानकर शहद मिलाकर पिलावे।
2. एग्जीमा गीला हो या शुष्क, नीम पत्र रस में पट्टी को तर कर बांधने से और बदलते रहने से लाभ होता है।
3. गीली छाजन में 8–10 पत्तों को पीसकर बांधना चाहिये।
4. पत्तों को 5–10 ग्राम रात्र चुरकना भी लाभकारी है।
5. असाध्य या दुःसाध्य छाजन में 10 ग्राम छाल के साथ समभाग मंजिष्ठादि क्वाथ के द्रव्य तथा पीपल की छाल और नीम मिलाय मिला क्वाथ सिद्ध कर नित्य नियमपूर्वक 10–20 ग्राम की मात्रा सुबह–शाम 1 मास तक पिलाने से पूर्ण लाभ होता है।

दाद

1. नीम के 8–10 पत्तों को दही में पीसकर लेप करने दाद मिटता है।
2. नीम पत्र के रस में कत्था, मन्थाक, सुहागा, पित पापड़ा, नीला थोथा व कलौंजी समभाग खूब घोट–पीसकर गोली बना लें, गोली को पानी में घिसकर दाद पर लगायें।

शीतपित्त नीम की अंतर छाल का फांट आवले के 4 ग्राम चूर्ण के साथ दिन में 2 बार देते रहने से, पुराने से पुराना जिद्दी शीतपित्त नष्ट हो जाता है। शरीर के ददोरे पर काली मिर्च के चूर्ण को घी में मिलाकर मसलते रहना चाहिये या तेल में कूपर मिलाकर मालिश करें।

श्लीपद तथा व्रणों पर

1. श्लीपद में नीम छाल और खैरसार 10–10 ग्राम लेकर दोनों को 50 ग्राम गौमूत्र में पीस छानकर 6 ग्राम मधु मिलाकर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से लाभ होता है।
2. जो फोड़ा हमेशा बहता रहता हो, उस पर नीम छाल की गरम

Scanned by CamScanner

लगाये। प्रथम नीम पत्तों के क्वाथ से अच्छी प्रकार धोकर फिर छाल की राख उसमें भर देने से 7–8 दिन में पूर्ण लाभ होता है।

नीम की गिरी को 100 ग्राम तेल में 20 ग्राम मोम डालकर पकायें, जब दोनों अच्छी तरह मिल जाये तो आग से उतार कर 10 ग्राम राल का चूर्ण मिला, अच्छी तरह हिलाकर रख लें। यदि व्रण में दाह और जलन हो तो उसमें थोड़ा सगजराहत भी मिला दें, यह मलहम, अग्नि से जले हुये और अन्य घावों के लिये लाभदायक है।

200 ग्राम नीम के तेल को अग्नि पर रख उसमें 50 ग्राम हरोजा दरदरा कूट कर डाल दें, तेल के साथ मिल जाने पर 50 ग्राम शुद्ध मोम मिला दें। इस मलहम को लगाते रहने से सब प्रकार के व्रण, फोड़ा फुन्सी आदि शीघ्र सुधर जाते हैं।

अग्नि से जले हुये स्थान पर रूई को नीम के तेल में तर कर रखने से शीघ्र लाभ होता है। इससे जलन भी शांत हो जाती है।

50 ग्राम नीम के तेल में 10 ग्राम कपूर मिला कर रख लें, इसमें रूई का फोहा डुबोकर घाव पर रखने से घाव साफ होता हुआ भर जायेगा। इससे पूर्व घाव को नीम पत्र क्वाथ में थोड़ी फिटकरी डाल कर साफ कर लें।

7 भगन्दर एव अन्य स्थानों के व्रणों पर नीम तेल में कपूर मिलाकर उसकी बत्ती अन्दर रखें एवं ऊपर भी इसी तेल की पट्टी बाधने से लाभ होता है। इस उपचार से कंठमाला गलगंड आदि में भी लाभ होता है।

8 दुष्ट व्रणों के शोधन के लिये उन पर 8–10 नीम पत्रों को शहद के साथ पीसकर लेप करें।

9 निम्ब पंचांग चूर्ण 6 ग्राम की मात्रा में नित्य नियमपूर्वक सेवन करने से जीर्ण भगन्दर दूर होता है।

फुन्सी : वर्षा ऋतु में बच्चों के फोड़े फुंसियां निकल आती है, नीम की 6–10 पकी निबौली 2–3 बार जल के साथ देने से फुन्सियां छूमन्तर हो जाती है।

नीम घर का वैद्य :

1. सुबह उठते ही नीम की दातुन करने से, फूलों के क्वाथ से गंडूष करने से दांत और मसूढे निरोग और मजबूत होते हैं।
2. दोपहर को इसकी धूनी और शीतल छाया में विश्राम करने से शरीर स्वस्थ रहता है।
3. संध्याकाल में इसकी सूखी पत्तियों के धूएं से मच्छर भाग जाते हैं, अतः रात में नीद अच्छी आती है।
4. इसकी मुलायम कोंपले चबाने से हाजमा ठीक रहता है।
5. सूखी पत्तियों को अनाज में रखने से उनमें कीड़े नहीं पड़ते।
6. नीम की पत्तियों को पानी में उबाल कर स्नान करने से अनेक रोगों से मुक्ति मिल जाती है। सिर स्नान से बालों की जुएं मर जाती है।
7. नीम की जड़ को पानी में घिसकर लगाने से कील मुंहासे मिट जाते है। और चेहरा सुन्दर हो जाता है।
8. नीम के तेल में डुबोकर तैयार पिचु को योनि में धारण करने से गर्भ नहीं ठहरता, अतः परिवार नियोजन का अच्छा साधन है।
9. नीम के पत्तों का रस खून साफ करता है, और खून बढ़ाता भी है। इसे 5 से 10 मिलीलीटर की मात्रा में नित्य सेवन करना चाहिए।
10. प्रतिदिन नीम के 21 पत्तों को भिगोई हुई मूंग की दाल के साथ पीसकर, बिना मसाला डालें, घी में पकौडी तल कर 21 दिन खाने से और पथ्य में केवल छाछ और अधिक भूख लगने पर भात खाने से बवासीर में लाभ हो जाता है। नमक बिल्कुल न खायें (थोड़ा सैंधा नमक ले सकते हैं)।
11. शमशान में भी नीम के वृक्ष लगाये जाते हैं और शवदाह के पश्चात लोग इसके कोमल पत्तों को चबाकर घर लौटते हैं, ताकि भूत बाधा ना हो। इसीलिये नीम को घरेलू वैद्य कहा जाता है।

विशेष : दुर्बल काम शक्ति वालों को नीम का प्रयोग नही करना चाहिये, क्योंकि यह काम शक्ति का ह्रास करता है। प्रातः काल उठकर मद्यपान करने वालों को भी इसका सेवन नहीं करना चाहिये।

प्रतिनिधि द्रव्य : बकायन

दर्पनाशक : सैंधा नमक, घी और गाय का दूध इसके अहितकर प्रभाव को दूर करते हैं।

1. निम्बः शीतोलघुर्ग्राही कटुस्तिक्तोऽग्निवातकृत्।
अहृद्यः श्रमतृट्कासज्वरारूचिकृमिप्रणुत।। (भाव प्रकाश)

2. निम्ब पत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत्।।
वातलंकटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत्। (भाव प्रकाश)

3. शलाका निम्बपत्रस्य कासश्वासविनाशिनी।
कृमिघ्ना तु वरिष्ठा स्यात् कुष्ठज्वरविनाशिनी।। (कै०नि०)

4. चक्षुष्यं निम्बपुष्पं च कृमिपित्तविषप्रणुत्।
वातलं कटुपाकं स्यात् सर्वारोचकनाशनम्।। (कै०नि०)

5. फल तिक्तरसं पाके कटुकं भेदनं लघु।
अरूक्षमुष्णं कुष्ठघ्न गुल्मार्शः कृमिमेहनुत्
निम्बस्य पक्वं मधुरं सतिक्तं स्निग्धं फलं शोणितपित्तरोगे।
कफे प्रशस्तं नयनामयघ्नं क्षतक्षयघ्नं गुरू पिच्छिलं च।।
निम्बबीजस्य मज्जा च कृमिकुष्ठविशोधनः। (कै०नि०)

6. निम्बस्य तेलं प्रकृतिस्थमेव नस्तो निषिक्तं विधिना यथावत्।
मासेन गोक्षीरभुजो नरस्त्र यवाग्रभूतं पलितं निहन्ति
(भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

92 नींबू

वैज्ञानिक नाम	:	*Citrus aurantiifolia* (Christm.) Swingle.
कुलनाम	:	Rutaceae
अंग्रेजी नाम	:	Lemon of India, Lime
संस्कृत	:	निम्बुक
हिन्दी	:	नींबू, कागजी नींबू
गुजराती	:	लिंबू, कागदी लीम्बु
मराठी	:	लिबूं
पंजाबी	:	नींबू
बंगाली	:	कागजी लेंबु, पतिलेंबु
फारसी	:	लींमू, लिमुने तुर्श
अरबी	:	लिमुने हाजिम, लेमु हाजिम
तमिल	:	एलुमिच्चै

परिचय

नींबू से सब परिचित हैं, नींबू का अचार, नींबू की चटनी को सब लोग बडे चाव से खाते हैं। नीबू की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहां दूसरे फल पकने पर मीठे हो जाते हैं, वहीं नींबू हर अवस्था में अम्लीय रहता है। यह विटामिन 'सी' का मुख्य स्त्रोत है अतः इसमें स्कर्वी निवारक गुण पाया जाता है। दूसरी विशेषता इसमें यह है कि यह अम्लीय होने पर भी पित्तशामक है। नींबू की कई जातियां पाई जाती है, जैसे : कागजी नींबू, बिजौरी नींबू, जम्मीरी नींबू, मीठा नींबू इत्यादि। औषध्यार्थ व्यवहार में प्रायः कागजी नींबू का ही प्रयोग करना चाहिए।

बाह्य–स्वरूप

नींबू के छोटे झाड़ीनुमा कंटीले वृक्ष होते हैं। पत्तियां छोटी, पर्णवृन्त छोटे एवं सपक्ष होते हैं। पत्तियों को मसलने पर सुगंध आती है। पुष्प भी सुगन्धित होते हैं। फल गोल, चिकने, अपक्व अवस्था में हरे तथा पकने पर पीले रंग के होते हैं।

रासायनिक संघटन

फल रस में सिट्रिक एसिड, फास्फोरिक एसिड, मेलिक एसिड एवं शर्करा आदि तत्व पाये जाते हैं। फलत्वक में तेल तथा तिक्त स्फटिकीय ग्लूकोसाइड हेस्पेरिडिन (विशेषतः छिलके के सफेद भाग में) पाया जाता है।

गुण–धर्म

कागजी नींबू खट्टा, वातनाशक, दीपक–पाचक और हल्का है। नींबू कृमि समूह का नाशक, उदरशूल नाशक, गृह बाधा नाशक, रूचिकारक, वात पित्त कफ तथा शूल में अत्यंत लाभदायक है।

औषधीय प्रयोग

उन्माद :

1. नींबू के रस को मस्तक पर लेप करने से पागलपन जैसे रोग में लाभ मिलता है।
2. इसके बीजों से शांति मिल जाती है।

आवेश रोग : स्त्रियों के आवेश रोग से बढ़ी हुई हृदय की धड़कन को सामान्य करने के लिए 13 ग्राम नींबू का रस पिलाना चाहिए।

मस्तक पीड़ा : नींबू की दो फांके कर गरम करके कनपटियों पर एक घण्टे तक सेक करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

Scanned by CamScanner

नींबू के रस में आँवला के फलों को पीसकर बालों में लगाने से रूसी मिटती है। बालों का झड़ना रूकता है।

मेथी दाना एक चम्मच और बेर के 10–15 पत्ते बारीक पीसकर सिर में लगायें और एक घण्टे बाद सिर धो लें, बाल घुंघराले हो जायेंगे।

नींबू के रस को लोहे की खरल में लोहे के दस्ते से घोंटते-घोंटते जब रस काला पड़ जायें, तब नेत्रांजन या नेत्र के आसपास पतला–पतला लेप करने से नेत्र पीड़ा मिटती है।

नींबू के रस में अफीम को लौहे के तवे पर पीसकर लेप करना चाहिए।

कटे हुए नींबू के आधे भाग को लोहे के जंग पर रगड़कर पीले कपडे में पोटली बनाकर नेत्रों पर स्पर्श कर घुमाने से खुजली तथा लाली सभी नेत्र विकार नष्ट हो जाते हैं।

पानी, लौंग और काली मिर्च इसके रस में हरे कांच की चूड़ी को महीन पीस कर अंजन करने से फूली और जाला कटता है।

कील मुहांसे:

नींबू के रस को चेहरे पर मलने से कील मुहांसे ठीक हो जाते हैं।

नींबू, तुलसी और काली कंसौदी का रस बराबर मिलाकर धूप में रखें, जब वह गाढ़ा हो जाये तो मुंह पर मले, यह मुहांसों को दूर कर देता है।

चेहरे की झुर्रियां मिटाने के लिए नींबू के रस में शहद मिलाकर लगायें।

अण्डे की सफेदी में नींबू का रस मिलाकर मुँह पर चुपड़ने से व फिर गुनगुने पानी से धोने से चेहरे पर निखार आ जाता है।

छाले : जीभ पर उत्पन्न छालों व मसूढ़ों पर नींबू का छिल्का रगड़ने व नींबू का 20–30 ग्राम रस नियमित पीने से शीघ्र लाभ होता है।

तृषा : नींबू का शर्बत तृषाशामक है।

उदरशूल: कच्चे नींबू का छिलका दिन में दो तीन बार खाने से पेट में होने वाली बादी का शूल मिट जाता है।

वमन : भोजन के बाद होने वाले वमन को रोकने के लिए ताजे नींबू का रस 5–10 मिलीलीटर की मात्रा में पीना चाहिए।

मंदाग्नि : एक नींबू के रस में थोड़ी अदरक एवं थोड़ा काला नमक मिलाकर सेवन करने से अजीर्ण, मंदाग्नि, तथा आमवात का नाश होता है।

अजीर्ण व उदरशूल : नींबू का रस तीन ग्राम, चूने का पानी 10 ग्राम, मधु 10 ग्राम तीनों को मिलाकर 20–20 बूंद की मात्रा में लेने से दोनों रोग शांत हो जाते हैं।

अरूचि :

1. नींबू के शर्बत में दुगना पानी, 1–2 नग लौंग और काली मिर्च मिलाकर पीने से अरूचि मिटती है।
2. नींबू को काटकर काला नमक बुरक कर चाटने से भी अरूचि मिटती है।
3. इसका रस गर्मी की मंदाग्नि को मिटाता है।

कृमिरोग : नींबू के रस का सेवन करने से आतों के अन्दर टायफायड, अतिसार, हैजा इत्यादि जो भी कीटाणु पैदा हो जाते हैं, वे मर जाते हैं।

कामला : इसका रस नेत्र में लगाने से कामला मिटता है।

यकृत उत्तेजक :

1. गुनगुने पानी में नींबू का रस व मिश्री मिलाकर सुबह चाय की तरह पीने से यकृत की क्रिया सुधरती है।
2. यकृत और प्लीहा के रोगों में भुनी हुई अजवायन और सेंधा नमक मिलाकर नींबू का रस पीने से बहुत लाभ होता है।

मोटापा : सुबह–सुबह खाली पेट 200 ग्राम गुनगुने जल में 2 चम्मच नींबू व शहद 1 चम्मच डालकर पीने से मोटापा घटता है।

हैजा : हैजे में प्रतिदिन दो नींबू के रस का सेवन भोजन से पूर्व करने से या रस में मिश्री मिलाकर सेवन करने से हैजा प्रभावहीन हो जाता है।

पित्त : एक नींबू के रस में 5 ग्राम मिश्री मिलाकर सेवन करने से पित्त का शमन होता है।

अतिसार : कागजी नींबू का रस दिन में 30 ग्राम की मात्रा में 2–3 बार देने से अतिसार में लाभ होता है।

तिल्ली :

1. नींबू का अचार खाने से बढ़ी हुई तिल्ली में लाभ होता है।
2. कागजी नींबू और प्याज का 20 ग्राम रस मिलाकर 14 दिन तक प्रातः–सायं पिलाने से बढ़ी हुई तिल्ली घटती है। पथ्य दाल व चावलों का पानी पीना चाहिए।

Scanned by CamScanner

विषम ज्वर : नींबू का रस तेज कहवा में बिना दूध मिलाये हुए पीने से मलेरिया ज्वर शीघ्र दूर हो जाता है।

मौसमी बुखार : नींबू रस 25 ग्राम, चिरायते का काढ़ा 25 ग्राम, दोनों को मिलाकर थोड़ा-थोड़ा करके पीने से मौसमी बुखार दूर हो जाता है।

इन्फ्लुएंजा : इसमें नींबू की चाय (गरम पानी में नींबू रस, मिश्री) बहुत गुणकारी है।

चर्मरोग : दाद, खाज, चमड़ी पर काले दाग इत्यादि रोगों पर नींबू को काटकर रगड़ने से लाभ होता है।

खाज : नींबू के रस में करोदा की जड़ पीसकर लगाने से तुरंत लाभ होता है।

स्कर्वी रोग : नींबू का ताजा रस 4 औंस, पौटेशियम क्लोरेट 60 ग्रेन, कुनेन 6 ग्रेन, शक्कर 2 औंस की मात्रा में 3-4 बार लेने से स्कर्वी रोग में बहुत लाभ होता है। पथ्य में नींबू, अनार, जामुन, आंवला, टमाटर, संतरा इत्यादि फल और वनस्पतियां विशेष मात्रा में प्रयुक्त करनी चाहिए।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

1 कप चाय के पीने लायक गर्म दूध में आधा नींबू निचोड़-कर दूध फटने से तुरन्त पहले पी जाये। यह रक्तस्राव को तुरन्त बंद कर देता है। उक्त प्रयोग को एक या दो बार से अधिक ना करें।

आमवात : आमवात में नींबू का रस एक दो ग्राम चार-चार घण्टे के अन्तर पर सेवन करना चाहिए।

कीटदंश : मच्छर आदि विषैले कीटों के दंश पर नींबू का रस लगाना चाहिए।

बिच्छु का विष : नींबू के बीजों की मींगी 9 ग्राम, सैंधा नमक 8 ग्राम, दोनों की फंकी देने से बिच्छु का विष उतरता है।

ज्वर : नींबू के दो भागकर एक भाग में पिसी हुई काली मिर्च और सैंधा नमक भरकर तथा दूसरे भाग में मिश्री भरकर दोनो को गरम कर चूसने से और वर्षा ऋतु के बाद आने वाला आन्त्रज्वर, जिसमें पित्त के वमन आते हैं, छूट जाता है।

1. निम्बूकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु।।
निम्बूकं कृमिसमूहनाशनंतीक्ष्णमल्लमुदरग्रहापहम।
वातपित्तकफशूलिने हितंकष्टनष्टरूचिरोचन परम्।।
त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगी निपीड़ितानां विषवह्निलानाम्।
मन्दानले बद्धगुदे प्रदेयं विषूचिकायां मुनयो वदन्ति।।
(भाव प्रकाश)

2. बीजपुरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः।
बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु ।।
रक्तपित्तहरं कंठजिह्वाहृदयशोधनम्।
श्वासकासारूचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

नींबू बिजौरा

कागदी निंबू

वैज्ञानिक नाम	:	*Citrus medica* L.
कुल नाम	:	Rutaceae
अंग्रेजी नाम	:	Adam's apple, Citron

परिचय

इसका फल नींबू से काफी बड़ा होता है। यह मीठे और खट्टे के भेद से दो प्रकार का होता है। मीठे फल का बिजौरा लाल गुलाबी रंग का होता है। इसका छिलका बहुत मोटा होता है।

गुण–धर्म

दीपन, कंठ्य, जीभ, हृदय को शुद्ध करने वाला, और दमा–कास, अरुचि, पित्त तथा तृषानाशक है। इसकी जड़ कृमिनाशक है तथा कब्ज या गांठ के रोग में प्रयोग की जाती है। कलियां और फूल उत्तेजक, आंत्र संकोचक, उदर विकारों में लाभदायक है। फल का छिल्कातिक्त तेलयुक्त होता है।

औषधीय प्रयोग

वमन : इसकी 10–20 ग्राम जड़ों को 200 मिलीलीटर पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ पिलाने से वमन बंद होती है।

मंदाग्नि : भोजन करने के बाद अगर उल्टी आती है तो सायंकाल के समय इसका ताजा रस 5–10 ग्राम पिलाना चाहिए।

तिल्ली : इसका अचार खाने से तिल्ली कटती है।

मूत्रविकार : मूत्र में रेती आने पर इसकी मूल की छाल का 2–5 ग्राम चूर्ण का सेवन सुबह–रात के बासी जल के साथ करना चाहिए।

उदरकृमि : इसके बीजों की 5–10 ग्राम गिरी की फंकी उष्ण जल

Scanned by CamScanner

के साथ देने से आंतों के कीड़े मरते हैं।

रक्तपित्त: बिजौरी नींबू की जड़ और इसके फूलों का चूर्ण बराबर–बराबर मात्रा में लेकर चावल की मांड़ के साथ सेवन करने से रक्तपित्त ठीक हो जाता है।

ज्वर :

1. इसके रस में थोड़ा कुनैन बुरक कर सुबह, दोपहर तथा शाम पिलाने से पित्त ज्वर और नियत कालिक ज्वर दूर जाता है। पत्तों का फांट भी लाभकारी होता है।
2. इसकी जड़ की छाल का क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से ज्वर दूर हो जाता है।

पित्तज्वर : पित्तज्वर में अधिक प्यास लगने पर इसकी कली, मधु तथा सैंधा नमक एक साथ पीसकर मुख के तालवे पर लेप करने से प्यास एक दम मिट जाती है।

खुजली : गन्धक को इसके रस में मिलाकर लगाने से खुजली मिटती है।

विषघ्न:

1. निद्रा लाने वाले तीक्ष्ण विषों के प्रभाव को नष्ट करने के लिए इसका रस 10–20 ग्राम मात्रा में थोड़ी–थोड़ी देर से पिलाना चाहिए।
2. विषैले जीवों के काटने से जो विष चढ़ जाता है उसे उतारने के लिए इसका अर्क 20–30 बूंद पिलाना चाहिए।

विविध रोग : इसके 10 ग्राम रस में 500 मि॰ग्रा॰ यवक्षार और 2 चम्मच मधु मिलाकर पिलाने से छाती की पीड़ा, कटिशूल और कूल्हे के जोड़ की पीड़ा मिटती है।

बाह्य प्रयोग :

1. इसके पत्तों को गरमकर पीड़ा युक्त स्थानों पर बांधने से लाभ होता है।
2. बीजों को पीसकर इनका लेप सूजन तथा चर्म रोगों में लाभकारी है।

नींबू जम्भीरी

लैटिन नाम	: *Citrus limon* L. (Neembu Jambhiri)
कुल नाम	: Rutaceae

परिचय

इसका फल नारंगी के फल के समान और बहुत खट्टा होता है।

औषधीय प्रयोग

ज्वर: ज्वर और अन्य प्रदाहिक पीड़ाओं में इसके रस को पानी मिलाकर तथा शक्कर के साथ पिलाने से लाभ होता है।

स्कर्वी:

1. स्कर्वी रोग में इसका रस 2–5 ग्राम पीना बहुत लाभदायक है।
2. इसके पके फल का रस शीतादि रोग प्रतिरोधक होता है।

चर्म रोग : इसके तेल को ग्लिसरीन के साथ मिलाकर खुजली और फोड़े फुन्सियों पर लगाने से लाभ होता है।

खुजली: इसके रस में गन्धक मिलाकर गीली खुजली पर लगाने से अच्छा लाभ होता है।

Scanned by CamScanner

निर्गुण्डी

वैज्ञानिक नाम	:	*Vitex nigundo* L.
कुलनाम	:	Verbenaceae
अंग्रेजी नाम	:	Five leaved chaste
संस्कृत	:	सिन्दुवार, निर्गुण्डी, सिन्दुक
हिन्दी	:	सम्हालू, मेउड़ी
गुजराती	:	नगड, नगोड़
मराठी	:	निगड, निर्गुण्डी
बंगाली	:	निशिन्दा
अरबी	:	अस्लक
फारसी	:	पंजंगुस्त
तेलगु	:	तेल्लागाविली
तमिल	:	नौची
मलयालम	:	इन्द्राणी

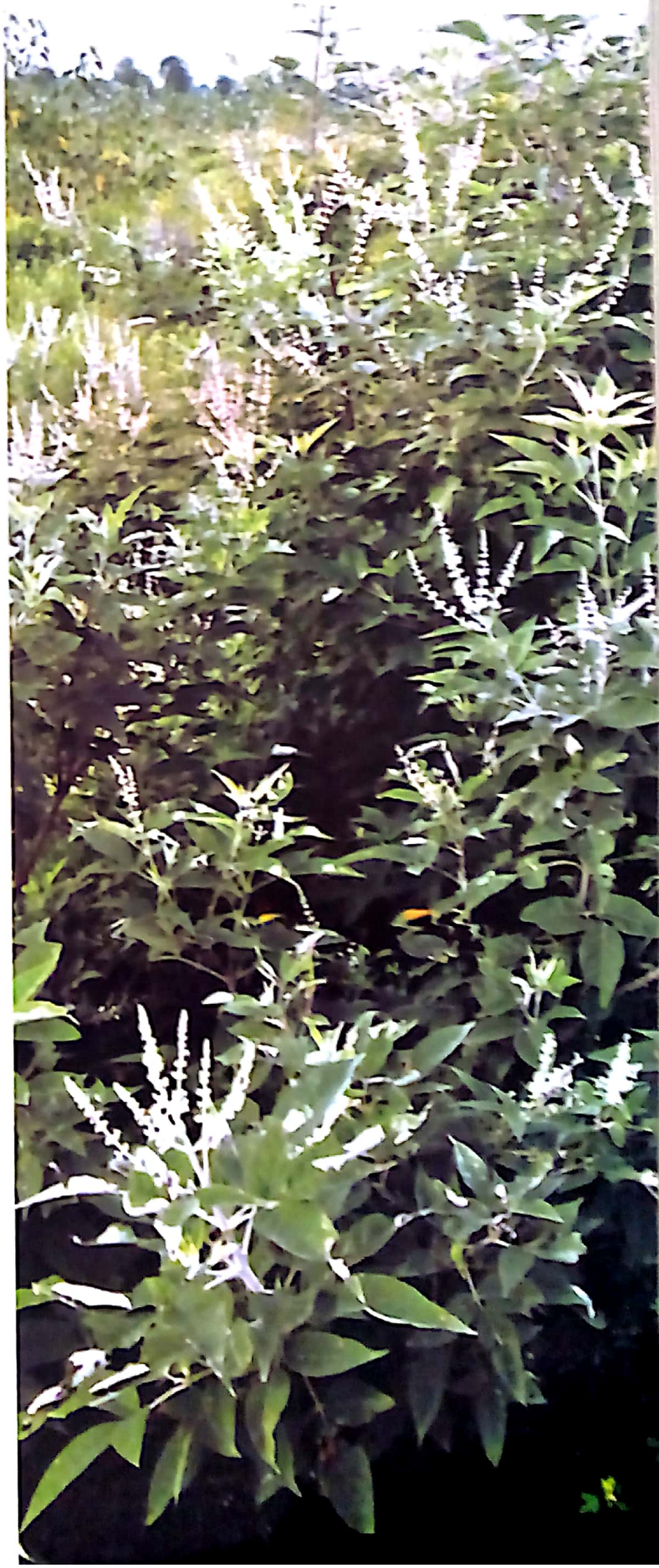

परिचय

"निर्गुडति शरीरं रक्षति रोगेभ्यः तस्माद निर्गुण्डी" अर्थात् जो शरीर की रोगों से रक्षा करे वह निर्गुण्डी कहलाती है। इसके स्वयं–जात क्षुप यत्र तत्र सर्वत्र पाये जाते है। इसके पत्रों को मसलने पर उनमें से एक विशिष्ट प्रकार की दुर्गन्ध आती है। यह बूटी वातव्याधियों के लिये एक प्रसिद्ध औषधि है। पुष्प भेद से निघुटंओं ने इसकी दो जातियां नील तथा श्वेत पुष्पी बतलाई हैं। नील पुष्पी का नाम निर्गुण्डी परन्तु श्वेत पुष्पी का सिदुवार है।

बाह्य–स्वरूप

इसका 6–12 फुट ऊँचा, बहुशाखीय झाड़ीनुमा क्षुप, सूक्ष्म रोमों से ढका रहता है। कांडत्वक, पतली चिकनी, किंचित नीलाभ, पर्णवृन्त लम्बा और अग्र भाग पर 3–5 पत्रक निकलते है। पत्रको के किनारे सादे या कंगूरेदार, पुष्प 2–6 इंच लम्बी मंजरियों में छोटे, बैंगनी आभा लिये नीले या श्वेत होते हैं। फल छोटे गोल सफेद और काले मिश्रित रंग के होते हैं। मूलत्वक हरितवर्ण, अन्तरछाल पीले रंग की होती है।

गुण–धर्म

कफवात शामक, वेदनास्थापन और मेद्य है। इसका बाह्य लेप वेदनास्थापन, शोथहर, व्रणशोधन, व्रणरोपण, केश्य तथा जन्तुघ्न है। आन्तरिक प्रयोग में यह दीपन, आम पाचन, यकृत उत्तेजक,

Scanned by CamScanner

कृमिघ्न तथा शोथहर है। यह कफघ्न और काराहर है, मूत्रजनन एवं उष्णता के कारण आर्त्तवजनन है, कुष्ठघ्न एवं कंडूघ्न, ज्वरघ्न विशेषतः विषमज्वर प्रतिबन्धक है। यह बल्य और रसायन चक्षुष्य है तथा कर्णस्राव को मिटाता है।

औषधीय प्रयोग

शिरो रोग :

निर्गुण्डी के फल के 2–4 ग्राम चूर्ण की फंकी दिन में दो तीन बार देने से स्नायु और मस्तक सम्बन्धी रोग मिटते है।

शिरः शूल :

निर्गुण्डी के पत्तों को कूटकर, टिकिया बनाकर, कनपटी पर बांधने से मस्तक पीड़ा मिटती है।

कंठशूल और मुखपाक :

1. कंठशूल और मुखपाक में इसके पत्तों के क्वाथ से कुल्ले करने से लाभ होता है।
2. मुँह में छाले हो जाने पर तथा मुख पाक में निर्गुण्डी का तेल मुंह, जीभ तथा होठों में लगाने से तथा हल्के गरम पानी में तेल मिलाकर मुंह में कुछ देर धारण करने से लाभ होता है।
3. गले की खराश में, गला पक जाने पर तथा गले की सूजन आदि में हल्के गुनगुने पानी में निर्गुण्डी के तेल को मिलाकर तथा थोड़ा पिसा नमक मिलाकर गंडूष करने से लाभ होता है।
4. फटे होटों पर भी निर्गुण्डी तेल लगाने से लाभ होता हैं।

कर्णरोग : कान के अन्दर अगर पीप पड़ गई हो तो इसके पत्तों के स्वरस से सिद्ध किये तेल को शहद के साथ मिलाकर 1–2 बूंद कान में डालना चाहिये।

गंडमाला : संभालू की जड़ को जल से यथावत् पीसकर नस्य लेने से गंडमाला मिटती है।[5]

निर्गुण्डी की जड़ को बालक के गले में लटकाने से दांत जल्दी निकल जाते हैं।

ज्वर :

1. इसके के 20 ग्राम पत्रों का 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष क्वाथ में पीपल का चूर्ण 2 ग्राम बुरक कर सुबह–शाम 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से प्रतिश्याय, ज्वर और सिर का भारीपन और बाधिर्य में लाभ होता है।
2. इसके 10 ग्राम पत्तों को 100 ग्राम पानी में उबालकर प्रातः–सायं देने से ज्वर प्रतिश्याय और गठिया के रोग मिटते हैं।

पाचन शक्ति : अफारा और उदरशूल में इसके पत्तों के 10 ग्राम स्वरस को 2 नग काली मिर्च और अजवायन के साथ सुबह–शाम सेवन करने से पाचन शक्ति सुधर जाती है तथा शूल मिट जाता है। वायु बाहर निकलकर अफारा दूर हो जाता है।

मासिक धर्म : कष्टार्त्तव तथा मासिक धर्म कम होने पर इसके बीजों के 2 ग्राम चूर्ण की फंकी सुबह–शाम देने से मासिक धर्म ठीक होने लग जाता है।

यकृत : मलेरिया ज्वर में अगर रोगी की प्लीहा और जिगर बढ़ गई हो तो निर्गुण्डी के पत्तों का 2 ग्राम चूर्ण हरड़ 1 ग्राम और गोमूत्र 10 मिलीग्राम के साथ देना चाहिये, अथवा 2 ग्राम निर्गुण्डी चूर्ण को काली कुटकी व रंसोत 500–500 मिलीग्राम के साथ सुबह–शाम देना चाहिये।

Scanned by CamScanner

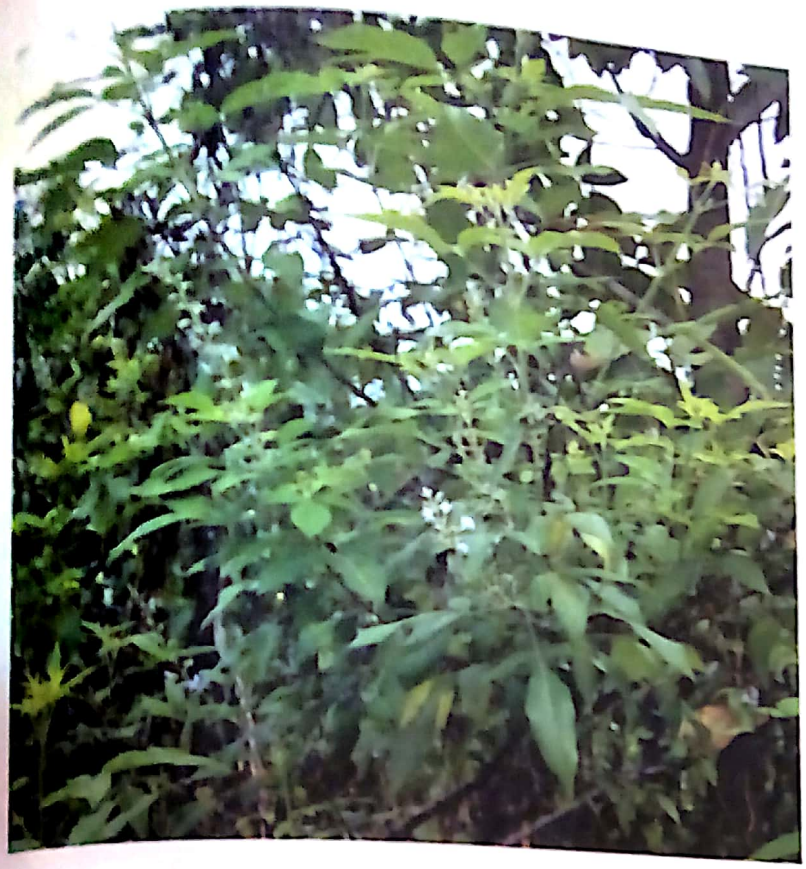

सूतिका : सूतिका ज्वर में इसके प्रयोग से गर्भाशय का संकोच होता है और भीतर की गन्दगी निकल कर बाहर आ जाती है। आंतरिक सूजन भी उतर जाती है और गर्भाशय अपनी पूर्व स्थिति में आ जाता है।

प्रसव : इसे पीसकर नाभि, बस्ति प्रदेश और योनि पर लेप करने से प्रसव सुख से हो जाता हैं।

सुजाक : सुजाक की प्रथम अवस्था में निर्गुडी के पत्तों का काढ़ा बहुत फायदेमन्द है। जिस रोगी का मूत्रबन्ध हो गया हो, उसमें इसके 20 ग्राम को 400 ग्राम पानी में उबालकर चतुर्थांश शेष काढ़े को 10–20 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से पेशाब बहुत जल्दी आता है।

गृध्रसी : मन्द अग्नि पर सिद्ध किये हुये 50 ग्राम पत्तों का आधा किलो पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ 10–20 ग्राम दिन में दो–तीन बार पीने से गृध्रसी रोग शीघ्र मिटता है।[4]

स्लिपडिस्क : सियाटिक, स्लिप्डडिस्क, मांस पेशियों को झटका लगने के कारण आई सूजन में निर्गुण्डी की छाल का 5 ग्राम चूर्ण या पत्र का क्वाथ कम अग्नि में पकाकर 20 ग्राम की मात्रा में दिन में तीन बार देने से कष्ट तुरन्त समाप्त हो जाता है।

कामशक्ति :

1. 40 ग्राम निर्गुण्डी और 40 ग्राम शुंठी को एक साथ पीसकर आठ खुराक बनाकर एक खुराक रोज दूध के साथ सेवन करने से मनुष्य की काम शक्ति बढ़ती है।
2. निर्गुण्डी को घिसकर कामेन्द्रिय पर लेप करने से, कामेन्द्रिय की शिथिलता मिट जाती है।

दुर्बलता : सामान्य दुर्बलता, पैरों की बीमारी इत्यादि में इसके तेल की मालिश लाभकारी है।

निरोग : निर्गुण्डी की मूल, फल और पत्रों के स्वरस से सिद्ध घी की 10–20 ग्राम की मात्रा को नियमित पीने से क्षय का ह्रास होता है और मनुष्य देवताओं की भांति निरोग हो जाता है।[1]

दीर्घायु : निर्गुण्डी के एक किलो रस को हल्की आंच पर तब तक पकायें जब तक यह गुड़ की चाशनी के समान गाढा न हो जाये, दमा, खांसी, क्षय रोगियों को वमन, विरेचन इत्यादि पंचकर्मों से शरीर को शुद्ध कर लें, तत्पश्चात इस अवलेह का सात दिन तक सेवन करें। तीन महीने के सेवन से मनुष्य की वृद्धावस्था दूर होकर दीर्घायु प्राप्त होती है। पथ्य में केवल दूध पीना चाहिये।

कफज्वर :

1. कफज्वर और फेफडो की सूजन होने पर निर्गुण्डी का स्वरस अथवा इसके पत्तों का 10 ग्राम काढा, 1 ग्राम पीपल चूर्ण मिलाकर देना चाहिये और इसके पत्तों का सेंक करना चाहिये।[3]
2. निर्गुण्डी के पत्तों के 30–40 मिलीलीटर काढे की एक मात्रा में 500 मिलीग्राम काली मिर्च का चूर्ण मिलाकर, कफज्वर में जबकि जंघाओं में बल न हो तथा बाधिर्य हो पीना–चाहिये।
3. सर्दी लगकर होने वाले तेज बुखार में, न्यूमोनियां आदि में अगर छाती में जकडन हो तो निर्गुण्डी के तेल की मालिश करनी चाहिये। प्रयोग को ज्यादा असरदार बनाने के लिये तेल में अजवायन, और लहसुन की 1–2 कली डाल दे तथा तेल हल्का गुनगुना कर लें।

श्लीपद : धतूरा, एरंड मूल, संभालू, पुनर्नवा, सहजन की छाल, सरसों इन्हें एक साथ मिश्रित कर लेप करने से चिरकालीन श्लीपद

निर्गुण्डी के बीज

Scanned by CamScanner

नष्ट होता है।[1]

नारु : नारु रोग में इसके पत्तों का 10–20 ग्राम स्वरस सुबह–शाम पिलाने, और इसके पत्तों से सेंक करने से लाभ होता है।

सर्वरोग : सब प्रकार के रोगों में निर्गुण्डी को शिलाजीत के साथ देने से बड़ा लाभ होता है। इन दोनों का योग अमृत के समान है।

घाव : निर्गुण्डी के पत्तों से सिद्ध किये हुये तेल को लगाने से पुराने से पुराना घाव भर जाता है।

व्रण : निर्गुण्डी की मूल और पत्तों से सिद्ध किये तेल को लगाने से, दुष्ट व्रण, पामा, खुजली, विस्फोटक व सब प्रकार के घाव ठीक हो जाते है।[2]

बंदगांठ: इसके पत्तों को गरम करके बांधने से बंद गांठ बिखर जाती है।

टिटनेस: इसका स्वरस 3–5 ग्राम दिन में तीन बार शहद के साथ देने से टिटनेस जैसे रोग में भी लाभ होता है।

विविध प्रयोग :

1. शिरोवेदना, अंडशोथ, जोड़ों की सूजन, आमवात आदि रोगों में जिनमें सूजन के कारण पीड़ा होती है, इसके पत्रों को गरम करके बांधने से तथा उपनाह देने से लाभ होता है।
2. पक्वाशय शूल, गर्भाशय–वृषण और गुर्दे की सूजन में इसके क्वाथ से कटिस्नान करते है।
3. सन्धिवात, आमवात, सन्धिशोथ, सन्धि अभिघात तथा सन्धिगत अन्य विकृतियों में निर्गुण्डी के पत्तों से सिद्ध तेल की मालिश करने से तथा हल्का गरम करके तेल लगाकर कपड़ा बांधने से बहुत आराम मिलता है।
4. सर्दी में अधिक पानी के साथ काम करने से हाथ छिल जाते है। निर्गुण्डी का तेल लगाने से फायदा होता है।
5. देह मे किसी भी जगह कट फट जाने पर, रगड़ लगने या छिल जाने पर या ऐसी ही अन्य अभिघातज या शस्त्र जनित अवस्थाओ मे निर्गुण्डी के तेल का बाहालेप बहुत लाभदायक है। यदि रक्त निकलता हो, और घाव बन जाये तो पिसी हुई हल्दी बुरक कर पट्टी बांध देनी चाहिये।

निर्गुण्डी पंचांग (सूखा)

1. सिन्दुकः स्मृतिदस्तिक्तः कषायः कटुको लघुः।
केश्यो नेत्रहितो हन्ति शूलशोथाममारुतान।।
कृमिकुष्ठारूचिश्लेष्मज्वरन्नीला पि तद्विधा।
सिन्दुवार दलं जन्तुवातश्लेष्महरं लघु।। (भाव प्रकाश)
2. सिन्दुवारः कटुस्तिक्तः कफवातक्षयापहः।
कुष्ठकण्डूतिशमनः शूलहृत काससिद्धिदः।।
कटूष्णा नीलनिर्गुण्डी तिक्ता रूक्षा च कासजित्।
श्लेष्मशोफसमीरार्त्ति प्रदराध्मानहारिणी।। (रा०नि०)
3. सिन्दुवारदलक्वाथं सोषणं कफजे ज्वरे।
जङ्घयोश्च बले क्षीणे कर्णे वा पिहिते पिबेत्।।(भैषज्य रत्नावली)
4. शेफालिकादलक्वाथो मृद्वग्निपरिसाधितः।
दुर्वारं गृध्रसीरोगं पीतमात्रं समुद्धरेत्।। (भैषज्य रत्नावली)
5. गण्डमालाऽऽमयार्त्तानां नस्यकर्मणि योजयेत्।
निर्गुण्ड्यास्तु शिफां सम्यग्वारिणां परिपोषिताम्।।
(भैषज्य रत्नावली)
6. धुस्तूरैरण्डनिर्गुण्डीवर्षाभूशिग्रुसर्षपैः।
प्रलेपः श्लीपदं हन्ति चिरोत्थमपि दारूणम्।। (भैषज्य रत्नावली)
7. समूलफलपत्रायाः निर्गुण्ड्याः स्वरसैः घृतम्।
सिद्ध पीत्वा क्षयक्षीणो निर्व्याधिः भाति देववत्।। (चक्रदत्त)

Scanned by CamScanner

प्याज

94

वैज्ञानिक नाम	:	*Allium cepa* L.
कुलनाम	:	Liliaceae
अंग्रेजी नाम	:	Onion
संस्कृत	:	पलाण्डु, यवनेष्ट, मुखदूषक
हिन्दी	:	प्याज, कांदा, लाल प्याज
गुजराती	:	कांदो, डुंगली, डुंगरी
मराठी	:	कोंदा
बंगाली	:	पेंचाज
पंजाबी	:	प्याज, गंडा
तैलगु	:	निरूली
अरबी	:	वस्ल
तमिल	:	वंजयम
उर्दू	:	प्याज
फारसी	:	पियाज

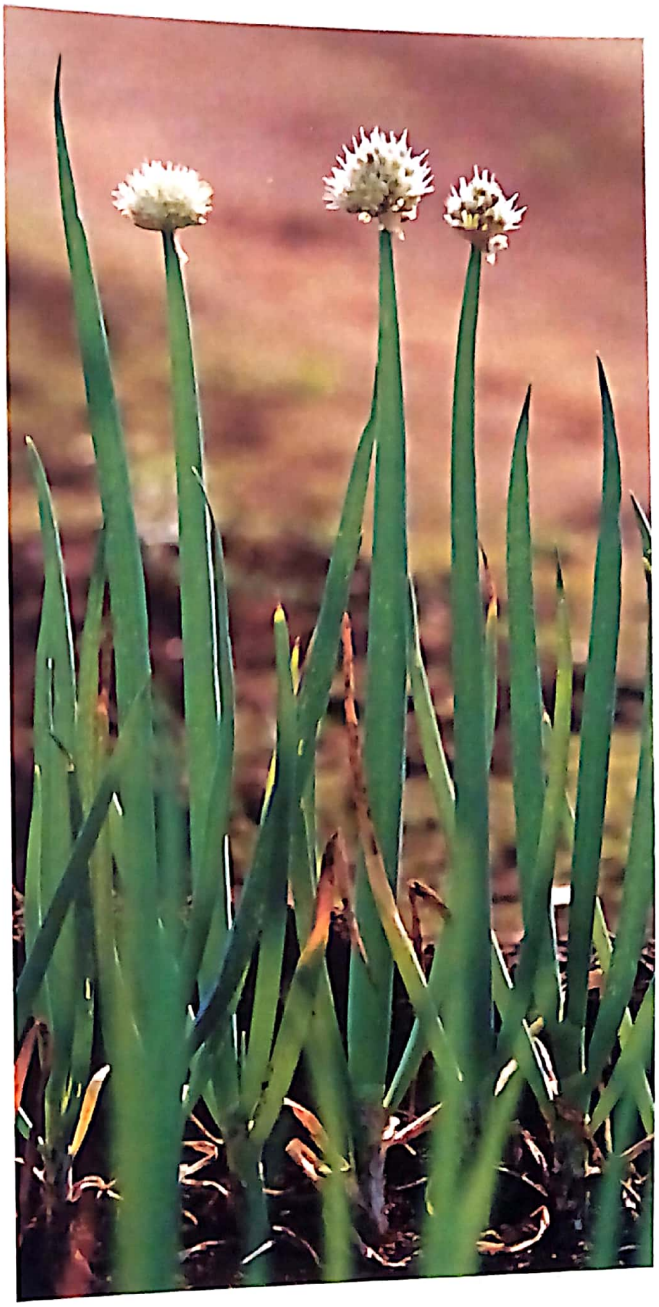

परिचय

प्याज की रंग भेद से रक्त और श्वेत दो जातियां होती हैं। इसका सम्पूर्ण भारतवर्ष में तरकारी के रूप में प्रयोग किया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसका क्षुप 2 से 3 फुट ऊंचा होता है। पत्र लम्बे, मांसल, पोले तथा रंभाकार होते हैं। पुष्पदण्ड हरे रंग का लम्बा होता है, जिसके अग्रभाग में सवृन्तमूर्धज छोटे श्वेत पुष्प होते हैं, कभी–कभी इसके साथ कलिका कन्द भी दिखलाई पड़ते हैं। फल त्रिकोष्ठीय होता है, जिसमें छोटे काले बीज होते हैं।

रासायनिक संघटन

प्याज के कंद में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, लौह, विटामिन ए, बी, तथा सी होते हैं। कंद और इसकी ताजी पत्तियों में कुछ अप्रिय गंधवाला उड़नशील तेल होता है। इसमें एक स्थिर तेल भी होता है, जिसमें एलाइड, प्रोपाइल, डाइसल्फाइड नामक पदार्थ होता है।

गुण–धर्म

यह पाचन में भारी, चरपरी, स्निग्ध, स्वाद में मीठी किंचित कडुवी होती है। भावप्रकाश के अनुसार प्याज स्वादुपाकी, स्वादिष्ट, अनुष्ण, वात विनाशक, बलकारी, वीर्यवर्धक और भारी होता है।[1] लाल प्याज शीतल, पित्तनाशक, काम को दूर करने वाला दीपन और अत्यंत निद्राकारक होता है। प्याज के बीज वृष्य, दंतकृमि और प्रमेह का नाश करने वाले है। द्रव्य गुण विज्ञान के अनुसार– पलाण्डु वात शामक, पित्तवर्धक, कफवर्धक, वेदनास्थापन, शोथहर, व्रणशोथपाचन एवं त्वचा के दोषों को दूर करता है। मन के रज और तम दोनों को बढ़ाने के कारण अमेध्य है। यह दीपन, पाचन, अनुलोमन, मूत्रल व वृष्य है। शुक्र जनन, रक्त स्तम्भन आर्तव जनन, बाजीकरण, बल्य, ओजोवर्धक और कडूघ्न है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

अनिद्रा : प्याज के बीजों की बनाई हुई चाय अनिद्रा रोग को दूर करती है। चिड़चिड़े बच्चों को जब अफीम वगैरह से कुछ फायदा नहीं होता, तब यह लाभ पहुंचाती है।

नजला : प्याज के 10–20 मिलीलीटर रस में 1 चम्मच शहद मिलाकर दिन में दो–तीन बार चाटने से नजला मिटता है।

रतौंधी : इसके कंद को दबाकर निकाले हुए रस में जरा सा लवण मिलाकर आंख में 2–2 बूंद डालने से रतौंधी में लाभ मिलता है।

नेत्र ज्योति : इसके स्वरस को मुध मिलाकर नेत्रों में लगाने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

दंतशूल : प्याज और कलोंजी को बराबर लेकर चिलम में रखकर उसका धुआं पीने से मसूड़ों की सूजन और दांतों का दर्द मिट जाता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

सफेद प्याज का रस 10 मि०ली०, अदरक का रस 10 मि०ली०, नींबू का रस 10 मि०ली०, शहद 50 मि०ली०, उक्त सभी का मिलाकर रखें। नियमित रूप से 2–2 बूँद आखों में डालने से मोतियाबिन्द कट जाता है। उक्त दवा आश्रम के दिव्य नेत्र ज्योति के नाम से तैयार की जाती है, जिसके प्रयोग से अनेकों रोगी लाभ पा चुके हैं।

गले के रोग : इसको सिरके में पीसकर चाटने से गले के रोग मिटते हैं।

मूर्च्छा : इसके कंदों को कुचलकर सुघांने से मूर्च्छा ओर हिस्टीरिया से होने वाली बेहोशी दूर हो जाती है।

कर्णशूल : कर्णशूल में प्याज के स्वरस को गरम कर 2–4 बूंद कान में डालने से कर्णशूल मिटता है।

कान की सूजन : अलसी को प्याज के रस में पकाकर छान लें, इस रस की 4–8 बूंद की मात्रा कान में डालने से कान के अंदर की सूजन मिट जाती है।

स्वरभंग : प्याज को आग में दबाकर भुरता बना लें। 250 मिलीग्राम भुना सुहागा खिलाकर ऊपर से भुरता खिलाने से, आवाज खुल जायेगी।

कफ रोग :

1. छोटे बच्चों को कफ रोगों में प्याज के 5–10 मि०ली० रस में 10 ग्राम शक्कर मिलाकर देनी चाहिए।
2. छोटे शिशुओं की माताओं को 1–2 नग प्याज पानी में उबालकर देने से कफ रोगों में लाभ होता है। इससे वात की कमी होती है, कफ पतला होकर बाहर निकल जाता है, घबराहट कम हो जाती है और पित्त भी बाहर निकल जाता है।

दमा : दमे में भी इसके काढ़े को 40–60 ग्राम की मात्रा में सुबह–शाम पिलाने से लाभ होता है।

पाचन : प्याज के रस के सेवन से या कच्चा प्याज खाने से आंतों की क्रिया शक्ति बढ़ती है। दस्त साफ होता है।

रक्तस्त्राव : सफेद प्याज के 20–30 मिली रस का सेवन दिन में दो–तीन बार करने से रक्तस्राव बंद हो जाता है। सफेद प्याज को छाछ के साथ देना और भी गुणकारी है।

अफारा : इसके 20 मिलीलीटर रस में 125 मिलीग्राम हींग और 1 ग्राम काला नमक मिलाकर दिन में तीन बार पिलाने से वादी का दर्द और पेट का फूलना बंद हो जाता है।

उदरशूल : नींबू का रस तथा नमक थोड़ी–थोड़ी मात्रा में मिलाकर प्याज का 1–2 चम्मच रस निकालकर आवश्यकतानुसार पिलावें।

कोष्ठ बल्य : 1–2 नग प्याज को 50 ग्राम सिरके के साथ मिलाकर खाने से आमाशय को ताकत मिलती है।

पथरी : प्याज का 10–20 मिलीलीटर ताजा रस दिन में तीन बार तक तीन महीनें तक पीने से गुर्दे और मसाने की पथरी गलकर निकल जाती है और पेशाब साफ होता है।

मूत्रदाह : प्याज का क्वाथ पिलाने से पेशाब की जलन मिटती है।

Scanned by CamScanner

विरेचन : मध्यम आकार के तीन प्याज और 10–15 ग्राम इमली के पत्तों की गोली बनाकर खिलाने से विरेचन होता है।

बीज तेल : इसके बीजों का 5–10 मिलीलीटर तेल का सेवन मूत्रवर्धक और कफनिःसारक है।

विसूचिका :

1. प्याज का रस 6 ग्राम, काली मिर्च का महीन चूर्ण 125 मि०ग्रा०, कपूर 250 मि०ग्रा० तथा चूने या केले का पानी 25 ग्राम एकत्र मिलाकर 15–15 मिनट बाद या आधा घण्टे के अंतर से देने से वमन तथा दस्त बंद हो जाते हैं तथा शरीर की ऐंठन भी दूर हो जाती है।
2. प्याज के रस में चूने का पानी समभाग मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।
3. प्याज 25 ग्राम व काली मिर्च छह नग बिल्कुल महीन खरल करें जो पानी में एक दम मिल जाये फिर रोगी को जितना पी सके, उतना पिला दें। एक बार देने से लाभ हो जाता है। इसमें थोड़ी मिश्री मिला दे तो अति उत्तम है।
4. रोगी के मुख में 250 मि०ग्रा० कपूर डालकर ऊपर से 10 ग्राम प्याज का रस डाल देने से असाध्य हैजा भी दूर हो जाता है।
5. प्याज का रस 15–15 मिनट देने से भी लाभ होता है।

सुजाक : प्याज का रस 6 ग्राम, गाय का घी 4 ग्राम और मधु 3 ग्राम प्रातः–सायं चाटने से तथा रात्रि को दूध पीने से हस्तमैथुन जन्य नपुंसकता तथा सुजाक प्रमेह का नाश होता है।

बल : प्याज के रस में समभाग घी मिश्रित कर पीने से शारीरिक शक्ति बढ़ती है।

अर्श :

1. 2 नग प्याज को पीसकर लेप करने से अर्श और गुदा भ्रंश में लाभ होता है।
2. अर्श के मस्सों के लिए दो प्याज भूसल में सककर छिलका उतारकर लुगदी बनाकर मस्सों पर बांधने से तत्काल समाप्त हो जाती है।

रक्तार्श : प्याज के 125 ग्राम रस में 20 ग्राम मिश्री मिलाकर एक समय पिलाने से खूनी बवासीर में आराम हो जाता है।

मासिक धर्म : प्याज को कच्ची अवस्था में नित्य खाने से मासिक धर्म नियमित होता है।

आमातिसार : एक प्याज के अंदर 60 मिलीग्राम अफीम रखकर उसको अंगारों पर रखकर सेंककर खिलाने से आम अतिसार मिटता है।

काम शक्ति :

1. प्याज को किसी बरतन में भरकर, बरतन का मुंह इस प्रकार बंद कर देना चाहिये कि उसमें हवा न जाने पाये, फिर इस बरतन को जहां गाय बंधती हो उस जमीन में गाड़ देना चाहिए। चार महीने बाद निकालकर एक प्याज रोज खाने से काम शक्ति बढ़ती है।
2. प्याज का रस और शहद क्रमशः आधा एवं 2 कि०ग्रा०, शक्कर

Scanned by CamScanner

250 ग्राम, मिलाकर शर्बत के रूप में 25 ग्राम प्रतिदिन सेवन करें।

3. प्याज रस, मधु, व ब्रांडी 15–20 ग्राम प्रतिदिन खाने से अत्यंत शक्ति का संचार होता है व शोष रोग दूर होता है।

4. काम शक्ति बढ़ाने के लिए प्याज की तीस गांठों को लेकर बरतन में रखकर उन पर ताजा दूध इतना डाले कि दूध 8 अंगुल ऊपर रहे, फिर इसे आंच पर इतना पकायें की प्याज गल जायें। पकने पर आग से नीचे उतार लें, फिर प्याज के बराबर गोघृत और समभाग मधु मिश्रित कर फिर से थोडी देर पकाये अंत में कुलंजन 60–60 ग्राम डालें। इस औषधि की 3–4 चम्मच की मात्रा का सेवन काम शक्ति वर्धक है।

जलोदर : बुखार जलोदर, जुकाम, पुरानी खांसी में इसका नित्य प्रयोग लाभदायक है।

गठिया : प्याज का रस और राई का तेल बराबर मिलाकर मालिश करने से गठिया की पीडा मिटती है।

बंद गांठ : 1–2 नग प्याज में इसको बच्चे के पेशाब में पीसकर गरम करके बंद गांठ पर लगाने से बंदगांठ बिखर जाती है।

श्वेत कुष्ठ : प्याज के बीजों का लेप श्वेत कुष्ठ मे लाभदायक है।

दाद : प्याज को सिरके में पीसकर दाद या ऐसी सूजन पर जो काले दाग वाली हो लगाने से बहुत लाभ होता है।

रक्त विकार : प्याज का रस 50 ग्राम, मिश्री 10 ग्राम तथा श्वेत जीरा भुना हुआ एक ग्राम नित्य सेवन से छाजन, पामा आदि रक्त विकार दूर होते हैं।

फुन्सी : गांठ, फोड़े, फुन्सी, यौवन पिंडिका, नारू, कंठमाला इत्यादि रोगों पर इसको घी में तलकर बांधने से अथवा इसके रस को लगाने से अच्छा लाभ होता है।

व्रणशोथ : नाडी शूल या व्रणशोथ में इसके कल्क को गरम कर बांधने से लाभ होता है।

ज्वर : मध्यम मोटाई की एक प्याज के ऊपर काली मिर्च बुरक कर दो बार खाने से दुष्ट वायु आदि से पैदा हुआ ज्वर छूट जाता है।

जहरीले कीड़े : जहरीले कीड़ों के काटने पर इसका रस मलने से दंशजनित दाह मिट जाती है।

बिच्छू का दंश : प्याज को काटकर उस पर बुझा हुआ चूना लगाकर बिच्छू के डंक पर रगड़ने से बिच्छू का जहर फौरन उतर जाता है।

लू लगना : प्याज का ताजा रस शरीर पर मलने से लू का प्रभाव तुरंत समाप्त हो जाता है।

कनखजूरा विष : प्याज और समभाग लहसुन को पीसकर लगाने से कनखजूरे का जहर उतर जाता है।

रोग प्रतिषेध : हवा से शीघ्र फैलने वाले रोगों के उपद्रवों से बचने के लिए प्याज काट कर पास में रखना चाहिए या दरवाजे पर बांध देना चाहिए।

1. स्वादुः पाके रसेऽनुष्णः कफकृन्नातिपित्तलः।
हरते केवलं वातं बलवीर्य करो गुरु।। (भाव प्रकाश)

2. श्लेष्मलो मारुतघ्नश्च पलाण्डुर्न च पित्तहृत्।
आहारयोगी बल्यश्च गुरुर्वृष्योऽथ रोचनः।। (चरक)
नात्युष्णवीर्योऽनिलहा कटुश्च तीक्ष्णो गुरुर्नातिकफावहश्च।

3. बलावहः पित्तकरोऽथ किंचित पलांडुरग्निं परिवर्धयेत्तु।।
स्निग्धो रुचिष्यः स्थिरधातुकारी बल्योऽथ मेधाकफपुष्टिदश्च।
स्वादुर्गुरुः शोणित पित्तशस्तः सर्पिश्छिलः क्षीरपलाण्डुरुक्तः।
(सुश्रुत)

4. बीजं पलाण्डोः वृष्यः स्यात् दंतकीटप्रमेहजित् (नि०र०)

5. रसखडयूषयवागूसंयुक्तः केवलोऽथवा जयति।
रक्तमतिवर्त्तमानं वातश्च पलाण्डुरूपयुक्तः।। (चरक)

6. लशुननान्तरं वायोः पलाण्डुः परमौषधम्।
साक्षादवस्थितं यत्र शकाधिपतिजीवितम्।।
यस्योपयोगेन शकाङ्गनानां लावण्य सारादिविनिर्मितानाम्।
कपोलकान्त्या विजितः शशाभ्रो रसातलं गच्छति निर्विषण्णः।।
(अ०सं०)

Scanned by CamScanner

टेसू (पलाश)

वैज्ञानिक नाम	:	*Butea monosperma* (Lam.) Taub.
कुलनाम	:	Fabaceae
अंग्रेजी नाम	:	Jungle flame, Flame of the forest
संस्कृत	:	रक्तपुष्पक, ब्रह्मवृक्ष, पलाश, किंशुक, ब्रह्मपादप, याज्ञिक
हिन्दी	:	ढाक, टेसू
गुजराती	:	खाखरो
मराठी	:	पलस
बंगाली	:	पलाश
पंजाबी	:	पलाश
तैलगु	:	मोदुग
मारवाड़ी	:	छिबरो
द्राविड़ी	:	पेलाशं
कन्नड	:	मुत्तुग

परिचय

पलाश के वृक्ष भारतवर्ष में सब जगह मिलते हैं। इसको बहुत प्राचीन काल से एक दिव्य औषधि की तरह काम मे लिया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

पलाश के वृक्ष 5–15/20 फुट तक ऊंचे, कांडत्वक 1/2 इंच मोटी खुरदरी, पत्र 4–8 इंच लम्बे, चर्मवत ऊपर चमकीले और नीचे धूसर रोमश, बीच का पत्रक अभिलंटवाकार अग्रभाग पर गोल या द्विविभक्त, पार्श्व पत्रक छोटे एवं विषम होते हैं। पुष्प चमकीले नारंगी, लाल रंग के होते हैं। ग्रीष्म ऋतु मे त्वचा को क्षत करने पर एक रस निकलता है जो जमने पर लाल गोंद बन जाता है, इसको कमर कस भी कहते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल और गोंद मे काइनोटैनिक ऐसिड तथा गैलिक ऐसिड, पिच्छिल द्रव्य तथा क्षार पाये जाते हैं बीजों मे पलासोनिन पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें एक स्थिर तेल होता है।

गुण–धर्म

इसके पुष्प स्तम्भन, तृष्णाशामक, रक्तास्तम्भन, मूत्रल, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न, दाह प्रशमन है। ये कफ पित्तशामक है। उत्तम भेदन, कृमिघ्न, रक्तरोधन, उत्तेजक, कुष्ठघ्न और विषघ्न व प्रमेहघ्न है। फल स्तम्भन व प्रमेहघ्न है। गोंद स्तम्भक अम्लतानाशक, ग्राही, वृष्य, और बल्य है। यह संग्रहणी, मुखरोग खांसी को दूर करता है। मत्र शोथहर, वेदना स्थापन है। पंचाग रसायन है। यह दीपन, ग्राही, यकृत उत्तेजक, कफवात शामक है। क्षार अनुलोमन और भेदन है। पलाश की जड़ का स्वरस नेत्र रोग, रतौंधी और नेत्र की फूली को नष्ट करता है, यह नेत्रों की ज्योति को बढ़ाता है। पलाश, कुटज, त्रिफला यह सब

Scanned by CamScanner

मेदोनाशक तथा शुक्रदोष को मिटाने वाले हैं। प्रमेह, अर्श, पाण्डुरोग नाशक एवं शर्करा को दूर करने के लिए श्रेष्ठ है।

औषधीय प्रयोग

नेत्र रोग : पलाश की ताजी जड़ों का अर्क एक बूंद आंखों में डालते रहने से आंख की झांक, खील, फूली मोतियाबिंद, रतौंधी इत्यादि सब प्रकार के नेत्र रोग नष्ट होते हैं।

नकसीर : रात्रि भर शीतल जल में भीगे हुए 5–7 पुष्पों को छानकर सुबह थोड़ी मिश्री मिलाकर पीने से नकसीर बंद हो जाती है।

मिर्गी : इसकी जड़ों को पीसकर 4–5 बूंद नाक में टपकाने से मिर्गी का दौरा बंद हो जाता है।

गलगंड : इसकी जड़ को घिसकर कान के नीचे लेप करने से गलगंड मिटता है।

मंदाग्नि : पलाश की ताजी जड़ों के अर्क की 4–5 बूंदे नागरबेल के पत्ते में रखकर खाने से भूख बढ़ती है।

अफारा :

1. पलाश की छाल और शुंठी का काढ़ा 30–40 मिलीलीटर दिन में दो बार पिलाने से अफारा और उदरशूल दूर होता है।
2. पलाश के पत्तों का 30–40 मिलीलीटर काढ़ा बनाकर पिलाने से अफारा और उदरशूल दूर होता है।

उदरकृमि :

1. पलाश के बीजों के चूर्ण को एक चम्मच की मात्रा दिन में दो बार खाने से पेट के सब कीड़े मरकर बाहर आ जाते हैं।
2. पलाश के बीज निसोत, किरमानी, अजवायन, कबीला, वायविडंग को समभाग मिलाकर 3 ग्राम की मात्रा गुड़ के साथ देने से सब प्रकार के कृमि नष्ट हो जाते हैं।

प्रमेह :

1. इसकी मुंहमुदी कोंपलों को छाया में सूखाकर कूट–छानकर गुड़ में मिलाकर 9 ग्राम की मात्रा में प्रात–काल सेवन करने से प्रमेह मिटता है।
2. ढाक की जड़ों का रस निकाल कर उस रस में 3 दिन तक गेहूं के दानों को भिगो दें। तत्पश्चात इन दानों को पीसकर हलवा बनाकर खाने से प्रमेह, शीघ्रपतन और कामशक्ति की कमजोरी दूर होती है।

सफेद पलाश की दुर्लभ प्रजाति

रक्तार्श : पलाश के पंचाग की राख 10 से 20 ग्राम तक गुनगुने घी के साथ पिलाने से खूनी बवासीर में बहुत लाभ होता है। इसके कुछ दिन लगातार सेवन करने से मस्से सूख जाते हैं।

अर्श : अर्श में इसके ताजे पत्रों में घी की छौंक लगाकर दही की मलाई के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

अतिसार :

1. ढाक के गोंद 625 से 2 ग्राम तक थोड़ी दाल चीनी और चावल भर अफीम मिलाकर पिलाने से अतिसार तुरंत बंद हो जाता है।
2. पलाश के बीजों का क्वाथ 1 चम्मच, बकरी का दूध 1 चम्मच, दोनों को मिलाकर खाना खाने के पश्चात् दिन में तीन बार सेवन करने से अतिसार में लाभ होता है। बकरी का उबला हुआ शीतल दुग्ध और चावल ही लेने चाहिए।

मूत्रकृच्छ :

1. पलाश के फूलों को उबालकर गरम–गरम पेडू पर बांधने से रुका हुआ पेशाब, वृक्क शूल और शोथ दूर होती है।
2. 20 ग्राम पलाश के पुष्पों को रात भर 200 मिलीलीटर ढंडे पानी में भिगोकर सुबह थोड़ी मिश्री मिलाकर पिलाने से गुर्दे का दर्द, मूत्र के साथ रक्त आना बंद हो जाता है।
3. ढाक की सूखी हुई कोंपलें, ढाक का गोंद, ढाक की छाल और ढाक के फूलों को मिलाकर चूर्ण बना लेना चाहिए। इस चूर्ण में समभाग मिश्री मिलाकर 9 ग्राम चूर्ण प्रतिदिन दूध के साथ सायंकाल लेने से मूत्रकृच्छ मिटता हैं

सूजन : इसके फूलों की पुल्टिस बनाकर बांधने से सूजन बिखर जाती है।

सन्धिवात : पलाश बीजों को महीन पीसकर मधु के साथ वेदना स्थान पर लेप करने से संधिवात में लाभ होता है।

बंदगांठ :

1. ढाक के पत्तों की पुल्टिस बांधने से बंदगांठ में लाभ होता है।
2. इसकी जड़ की 3–5 ग्राम अन्तरछाल को दूध के साथ पीने से बंदगांठ में लाभ होता है।

पित्तशोथ : इसके गोंद को पानी में गलाकर नियमित लेप करने

Scanned by CamScanner

से कष्ट साध्य पित्तशोथ मिट जाती है।

अंडकोष शोथ :

1. इसके फूलों की पुल्टिस बनाकर नाभि के नीचे बांधने से मूत्राशय के रोग मिटते हैं और अंडकोष की सूजन भी बिखर जाती है।
2. पलाश की छाल को पीसकर उसको 4 ग्राम की मात्रा में जल के साथ दिन में दो बार देने से अंडवृद्धि मिटती है।

घाव : घावों पर पलाश के गोंद का चूर्ण बुरकने से लाभ होता है।

दंश : पलाश के बीजों को अर्क के दूध में घिसकर दंश पर लगाने से वेदना कम होकर आराम मिलता है।

कुष्ठ : पलाश के बीजों के तेल का इंजेक्शन कुष्ठ रोग में चाल मोंगरे के बीजों के तेल से अधिक गुणकारी है।

दाद : ढाक के बीजों को नींबू के रस के साथ पीसकर लगाने से दाद और खुजली में लाभ होता है।

नारू : पलाश के बीज, कुचला के बीज, रस कपूर, सादा कपूर और गूगल इन सब औषधियों को समभाग लेकर बारीक पीसकर पानी के साथ खरल करके फिर एक पीपल के पत्ते पर उनका लेप करके उस पीपल के पत्ते को नारू के फोले के ऊपर बांध देना चाहिए। इस पट्टी को तीन दिन तक बांधने से नारू का कीड़ा शीघ्र मर जाता है।

श्लीपद : श्लीपद रोग में इसकी मूल के 100 ग्राम रस में समभाग सफेद सरसों का तेल मिलाकर दो चम्मच सुबह–शाम पीने से लाभ होता है।

रसायन :

1. इसके छाया में सूखे हुए पंचाग का चूर्ण मधु एवं घृत के (मधु एवं घृत असमान मात्रा में) साथ 1 चम्मच की मात्रा में प्रातः और सायंकाल सेवन करने से मनुष्य निरोगी और दीर्घायु होता है।
2. इसके कोमल–कोमल नये अंकुरित पत्रों को गाय के दूध में पीसकर 2 चम्मच की मात्रा गाय के दूध के साथ ही पीने से शक्तिशाली बालक का जन्म होता है।

वाजीकरण :

1. जड़ के अर्क की 5–6 बूंद की मात्रा दिन में दो बार सेवन से

अनैच्छिक वीर्यस्त्राव रूकता है और काम शक्ति प्रबल होती है।

2. पलाश के बीजों के तेल की 2–4 बूंदे कामेन्द्रिय के ऊपर सीवन सुपारी छोड़कर मालिश करने से कुछ ही दिनों में सब प्रकार की नपुंसकता दूर होती है और प्रबल कामशक्ति जाग्रत होती है।

गर्भनिरोध :

1. पलाश के बीज 10 ग्राम, शहद 20 ग्राम और घी 10 ग्राम इन सबको घोंटकर इसमें रूई को भिगोकर बत्ती बनाकर स्त्री प्रसंग से तीन घण्टे पहले योनिभाग में रखने से गर्भधारण नही होने पाता।
2. पलाश के बीजों को जलाकर इनमें आधी मात्रा में हींग मिलाकर चूर्ण बनाकर 2 से 3 ग्राम तक की मात्रा में तीन मासिक धर्म के भीतर, ऋतुस्राव प्रारंभ होते ही और उसके कुछ दिन बाद तक सेवन करने से स्त्री की गर्भधारण शक्ति नष्ट हो जाती है।

1. कषायः कटुकस्तिक्तः स्निग्धो गुदजरोगजित्।
तत्पुष्पं स्वादु पाके तु कटु तिक्तं कषायकम्।
वातलं कफपित्तास्रकृच्छ्रजित्, ग्राहि शीतलम्।
तृड्दाहशमनं वातरक्तकुष्ठहरं परम्।।
फलं [illegible] वातकफापहम्। ([illegible] प्रकाश)

भग्नसंधानकृद्दोषग्रहण्यर्शः कृमीन् हरेत्। (भाव प्रकाश)

3. क्षारश्रेष्ठः कृमिघ्नश्च संग्राही दीपनः परः।
प्लीहगुल्मग्रहण्यर्शोवातश्लेष्मविनाशनः।
किंशुकस्यापि कुसुमं सुगन्धि मधुरं च तत्।
बीजं तु कटुकं स्निग्धमुष्णं कृमिबलासजित्।। (ध०नि०)
मष्ककपलाशचित्रकमदनवृक्षाकशिंशपा बजवृक्षास्त्रि।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

96 पान

वैज्ञानिक नाम	:	*Piper betle* L.
कुलनाम	:	Piperaceae
अंग्रेजी नाम	:	Betel
संस्कृत	:	नागवल्लरी, नागिनी, नागवल्लिका, वर्णलता, ताम्बूल, सप्तशिरा, मुखभूषण
हिन्दी	:	पान, ताम्बूल
गुजराती	:	नागरवेल
मराठी	:	नागवेल
बंगाली	:	पान
तेलगु	:	नागवल्ली, तामालपाकू
अरबी	:	तम्बोल, तम्बूल
फारसी	:	बर्गे तम्बोल, तंबूल

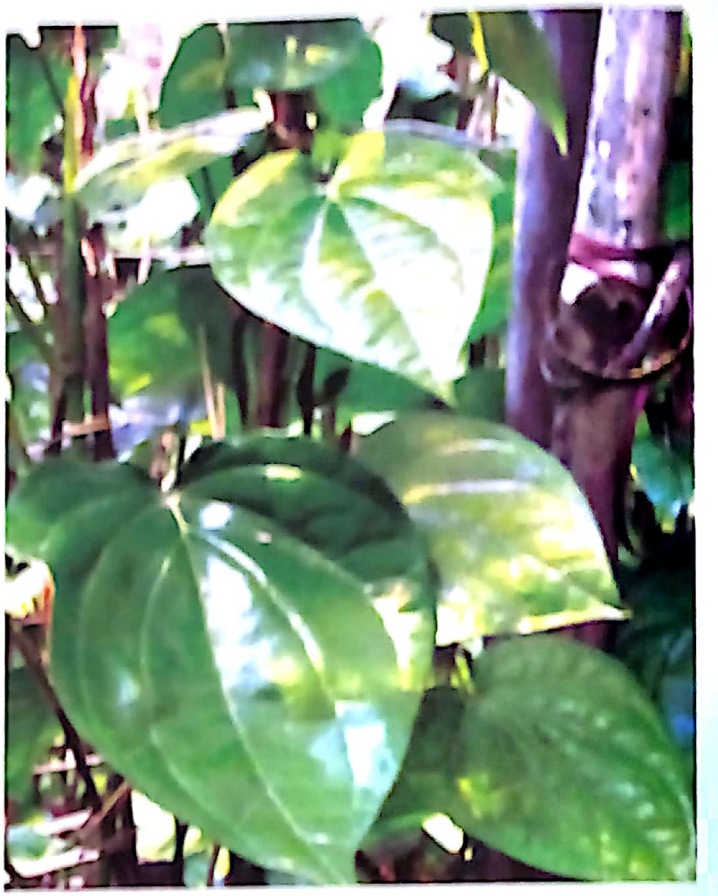

परिचय

यह उष्ण और आर्द्र प्रदेशों विशेषत: बिहार, बंगाल, उड़ीसा, बनारस, महोबा, साची, लंका और मालवा के रामपुरा–मानपुरा जिले में बहुत बोया जाता है। बनारस का पान सर्वोत्तम माना जाता है।

बाह्य–स्वरूप

इसकी मूल रोहिणी लता अत्यन्त सुन्दर और कोमल होती है। कांड अर्द्ध काष्ठ में, मजबूत तथा गांठों पर मोटा रहता है। पत्ते पीपल के पत्तों के समान बडे चौडे तथा हृदयाकृति शिराओं से युक्त चिकने मोटे एवं करीब 1 इंच लम्बे पर्ण वृन्त वाले होते हैं। पुष्प–क्रम स्पाईक होता है। फल 2 इंच लम्बे, मांसल, लटकते हुए व्यूहाक्ष में छोटे–छोटे बहुत फल रहते हैं। पान में मनोहर गंध रहती है। इसका स्वाद कुछ ऊष्ण एवं सुगन्ध युक्त रहता है।

रासायनिक संघटन

पान पत्र में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज द्रव्य तथा टैनिन होते हैं। इसमें कैल्शियम, फास्फोरस, लौह, आयोडीन तथा पोटैशियम पाये जाते हैं। विटामिन ए, बी, सी तथा पत्तियों में एक उडनशील तेल पाया जाता है। तेल में फिनोल और टार्पिन नामक तत्व होते हैं। फिनोल के कारण पत्तियों में विशिष्ट गंध होती है और इसी तत्व पर इसकी गुणवत्ता निर्भर करती है।

गुण–धर्म

धन्वन्तरि निघंटु ने पान पत्र के तेरह ऐसे गुणों का वर्णन किया है जो स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं। पान, चरपरा, कटु, उष्ण, मधुर, क्षारगुण युक्त, कसैला तथा वातकृमि, कफ और दु:ख को हरने वाला है। यह धारण शक्ति और काम शक्ति का वर्धन करता है।[1] भाव प्रकाश के मतानुसार पान विषघ्न, रूचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदय को हितकारी, जठराग्नि को दीप्त करने वाला, कामोद्दीपक, बलकारक, दस्तावर और मुख को शुद्ध करने वाला है।[2]

राजनिघंटु के मतानुसार पान, चरपरा, तीक्ष्ण, कड़वा और पीनस वात कारक तथा खांसी में लाभदायक है। यह रूचिकारक, दाहजनक और अग्निदीपक है।[3] पान पत्र तीक्ष्ण, गरम, कड़वा, पित्त को प्रकुपित करने वाला, सुगन्धित, विशद्, वात कफघ्न, संग्रहन, कड़वा, कसैला, लालस्राव, जनन, कंडू मल और दुर्गन्ध का नाश करने वाला है।[4] पान का तेल कफीय पीड़ा, गला, मुंह व श्वांस नाड़ी प्रदाह में विशेष उपकारी है। इसमें सड़न रोधक शक्ति है। पुराना पान अत्यन्त रसभरा, रूचिकारक, सुगन्धित, मधुर, तीक्ष्ण, दीपन, कामोद्दीपक, बल्य, रेचक और मुख को शुद्ध करने वाला है। नवीन पान त्रिदोषकारक, दाहजनन, अरूचिकारक, रक्त को दूषित करने वाला, विरेचक और वमनकारक है। वही पान अगर बहुत दिनों तक जल

Scanned by CamScanner

से सींचा हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। यह रूचिकारक वर्ण्य और त्रिदोषनाशक है।

औषधीय प्रयोग

मस्तक पीड़ा : कनपट्टियों पर पान बांधने से मस्तक की वायु की पीड़ा मिट जाती है।

आवेश रोग : स्त्रियों का आवेश रोग मिटाने के लिए पान का रस दूध में मिलाकर पिलाना चाहिए।

रतौंधी : पान के पत्तों का रस आंख में डालने से रतौंधी की बीमारी में बहुत लाभ होता है।

हृदय विकार :

1. हृदय की दुर्बलता तथा हृदय अवसाद की अवस्था में इसका प्रयोग लाभदायक है। डिजिटेलीस के स्थान पर इसका प्रयोग कर सकते हैं।
2. इसका शर्बत पीने से हृदय का बल बढ़ता है, कफ और मंदाग्नि मिटती है।

स्तनशोथ : जिन स्त्रियों का बच्चा मर गया हो, और स्तनों में दूध भरकर सूजन आ गई हो उन स्त्रियों के स्तनों पर पान को गरम करके बांधने से सूजन कम हो जाती है और दूध उड़ जाता है।

बच्चों की सर्दी : बच्चों को सर्दी लग जाने से पान को गरम करके, जरा सा एरंड का तेल चुपड़कर छाती पर बांधने से, बच्चों की घबराहट कम हो जाती है और सर्दी का जोर मिट जाता है।

प्रतिश्याय : पान की जड़ और मुलेठी को पीस मधु के साथ चटाने से प्रतिश्याय सम्बन्धी रोग मिटते हैं।

मधुर आवाज : गवैये लोग राग साफ करने के लिए और अपनी आवाज सुधारने के लिए पान की जड़ चूसा करते हैं। कण्ठ में जमा हुआ कफ के निस्तारण व स्वरभंगता ठीक करने के लिए कुलंजन (पान की जड़) अत्यन्त लाभप्रद है।

डिप्थीरिया :

1. इस रोग में जब श्वासावरोध उत्पन्न होकर रोगी को अत्यन्त कष्ट होता है तब पान के रस का सेवन करने से गले की सूजन कम हो जाती है और कफ टूटने लगता है। इस रोग में 2–5 पत्तों का रस थोड़े गुनगुने पानी में मिलाकर कुल्ले करने से भी फायदा होता है।
2. पान के रस 3–4 ग्राम को शहद के साथ चटाने से सूखी खांसी मिटती है।
3. पान की डंठल को घिसकर शहद मिलाकर चटाने से बच्चों की सर्दी व कफ में आराम मिलता है।

पाचन :

1. पान के चूसने पर लार की मात्रा अधिक निकलती है, जिससे पाचन क्रिया में मदद मिलती है। यह पेट की वादी को मिटाने वाला उत्तेजक और ग्राही है। इससे श्वास में मिठास हो जाता है। बोली स्पष्ट हो जाती है और मुख की दुर्गन्ध दूर हो जाती है।
2. आर्द्र पृथ्वी और देश के दूषित जलवायु से होने वाले विकार पान खाने वालों को नही होते।

प्यास : पान खाने से प्यास कम लगती है।

कब्ज : पान के डंठल पर तेल चुपड़कर बच्चों की गुदा में रखने से बच्चों की कब्ज और वादी के रोग मिट जाते हैं।

ध्वज भंग : ध्वज भंग रोग में इसे चबाने से और शिश्न पर बांधने से लाभ होता है।

निर्बलता : पान के शर्बत में चरपरी चीजें, अर्थात उष्ण बेसबार मिलाकर 25–25 ग्राम दिन में तीन बार पिलाने से, शरीर की निर्बलता मिटती है।

ज्वर : साढ़े तीन ग्राम पान के अर्क को गरम करके दिन में 2–3 बार पिलाने से ज्वर आना बंद हो जाता है।

ग्रन्थि सूजन : सूजन होने पर पान को गरम करके बांधने से सूजन और पीड़ा की कमी होकर गठान बैठ जाती है।

व्रण : व्रणों के ऊपर पान को बांधने से, व्रण जल्दी भर जाते हैं।

पान खाने से लाभ : पान खाना भी एक व्यसन है। लगातार खाने से इसकी आदत पड़ जाती है। पहली बार खाने से मस्तिष्क पर कुछ खास असर मालूम पड़ता है। जैसे कुछ चक्कर आना, घबराहट,

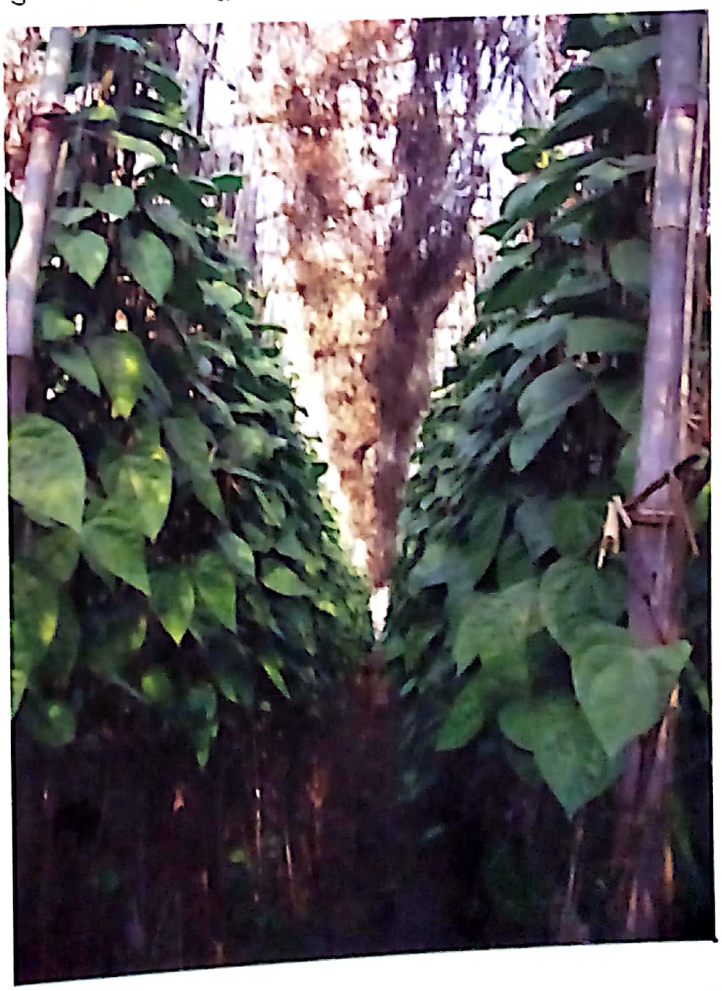

Scanned by CamScanner

बेचैनी आदि, किन्तु पान खाने की आदत बन जाने पर ये सब शिकायतें धीरे–धीरे दूर हो जाती हैं। पान के चूसने पर लार की मात्रा अधिक निकलती है, जिससे पाचन क्रिया में मदद मिलती है, परन्तु अधिक मात्रा में पान का सेवन अहितकर है।

दोष : तीक्ष्ण, उष्ण और पित्त प्रकोपक होने के कारण यह रक्त पित्त उरःक्षत मूर्च्छा आदि पैत्तिक विकारों में यह निषिध है। पान के अधिक खाने से भूख कम लगती है। दिन–दिन मेदा कमजोर होता जाता है। इसलिए इसको हमेशा नियमित मात्रा में खाना चाहिए। इसमें हेपिक्साइन नामक जहरीला पदार्थ होता है। सुपारी में अर्कीडाइन नामक विषैला पदार्थ रहता है, इसलिए सुपारी भी कम लेनी चाहिए। ज्यादा कत्थे से फेफड़े में खराबी पैदा हो जाती है। अधिक चूना दांतों को खराब कर देता है। पान के विषय में आयुर्वेद का कहना है– ताम्बूलं न हितं दन्त दुर्बलेक्षणरोगिणाम्। विष मूर्च्छा मदार्त्तानां क्षतिर्ना रक्तपित्तिनाम्।।

1. ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारंकषायान्वितं, वातघ्नं कफनाशनम् कृमिहरं दुर्गन्धनिर्णाशनम्।
वक्त्रस्याभरणं विशुद्धिकरणं कामाग्निसंदीपनं, ताम्बूलस्य सखे!
त्रयोदशगुणा स्वर्गेऽपि ते दुर्लभाः। (ध०नि०)

2. ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरंसरम्।
बल्यंतिक्तं कटुक्षारं रक्तपित्तकरं लघु।
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम्। (भाव प्रकाश)

3. नागवल्ली कटुस्तीक्ष्णा तिक्ता पीनसवातजित्।
कफ कासहरा रूच्यादाहकृद्दीपनी परा। (रा०नि०)

4. ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटु पित्तप्रकोपणम्।
सुगन्धि विशदं स्वर्यं तिक्तं वातकफापहम्।।
स्रंसनं कटुकं पाके कषायं वह्निदीपनम्।
वक्त्रकण्डूमलक्लेददौर्गन्ध्यादिविनाशनम्। (सु०सू०)

Scanned by CamScanner

वाँड़ (चक्रमर्द)

वैज्ञानिक नाम	: *Cassia tora* L.
कुलनाम	: Caesalpiniaceae
अंग्रेजी नाम	: Foetid carria, Ringworm plant
संस्कृत	: चक्रमर्द, दद्रुघ्न, प्रपुन्नाड, एडगज, मेषलोचन, चक्री
हिन्दी	: पवाँड़, चक्रवड़
गुजराती	: कुवाडियो
मराठी	: टाकला
बंगाली	: चाकुन्दा, चाबुका
तेलगु	: तगिरिसे
अरबी	: कुवन्च, कुतब
फारसी	: संगेसबूया

परिचय

चक्रमर्द के पौधे वर्षा ऋतु में उष्ण कटिबन्धीय प्रदेशों में परित्यक्त भूमि पर, कूड़े करकट, नदी नालों के किनारे, सर्वत्र समूह–बद्ध उगे हुये मिलते हैं। इसका पादप विशेष गंध युक्त होता है। पत्तों को मसलने से एक प्रकार की अग्राह्य गंध आती है। कहीं–कहीं इसके कोमल पत्तों का शाक बनाकर खाया जाता है।

बाह्य–स्वरूप

चक्रमर्द के 1 से 5 फुट ऊँचे, एक वर्षायु, स्वावलम्बी क्षुप होते हैं। पत्र संयुक्त, पर्णवृन्त दो ग्रन्थि युक्त, पत्रक 3 जोड़ो में पत्रक 1 इंच से 2½ इंच लम्बे अभिलटवाकार, गोल तथा कुंठिताग्र या नताग्र, रात में परस्पर मिल जाते हैं। वर्षा ऋतु में पत्र जोड़ों से एक साथ या एकाकी मटमैले पीले रंग के आधा इंच व्यास के पुष्प निकलते है। शिम्बी–शीतकाल में, 6 इंच तक लम्बी चतुष्कोणा अग्रभाग में नुकीली कुछ मुड़ी हुई होती है। प्रत्येक फली में, भूरे रंग के लम्बे, गोल बीज (जो रूपरेखा में ईख की गडेरी की भांति लगते हैं) जिनके दोनों किनारे तिरछे कटे से होते है।

रासायनिक संघटन

बीज तथा पत्र दोनों में क्राइसोफेनिक एसिड की तरह का एक ग्लुकोसाइड, पत्र में कैथार्डीन के समान एक सत्व, एक रजंक द्रव्य और खनिज द्रव्य होते हैं।

गुण–धर्म

चक्रमर्द लघु, मधुर, रूक्ष, हृदय को हितकारी, शीतल और पित्तवात, कफ, श्वास, कोढ, दाद तथा कृमि को नष्ट करने वाला है।[1] इसका फल गरम तथा चरपरा है और कोढ, खुजली, दाद, विष, वात, गुल्म, खांसी, कृमि, श्वास इन सब रोगों को हरने वाला है।[2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

आधाशीशी : आधाशीशी में इसके 20–25 ग्राम बीजों को कांजी में पीसकर मस्तक पर लेप करने से लाभ होता है।

कंठमाला : पंवाड के 10–12 पत्तों को, फिटकरी तथा सैंधा नमक मिला, थोडे जल के साथ पीसकर, गुनगुनी टिकिया बनाकर कंठमाला की गांठों पर नित्य बाधने से लाभ होता है।

गंडमाला :

1. भांगरे का स्वरस 2 किलोग्राम, पंवाड, मूल त्वक 115 ग्राम, सरसों का तेल 450 ग्राम, तीनों को मिलाकर मंद अग्नि पर पकावें, जब केवल तेल शेष रह जाये तो उसमें 115 ग्राम सिन्दूर मिलाकार नीचे उतार लेवें। इस तेल के लेप से भयंकर गंडमाला, अति शीघ्र नष्ट होती है।
2. 10–20 ग्राम पंवाड़ की जड़ को नींबू के रस में पीसकर लेप करने से गडंमाला मिटती है।

खांसी : बीजों के 1–2 ग्राम चूर्ण को गरम जल के साथ कुछ दिन तक देने से लाभ होता है।

सोमरोग : स्त्रियों के रक्त प्रदर या श्वेत प्रदर पर इसकी 5–10 ग्राम जडों को चावलों की धोवन के साथ पीस–छानकर पिलाने से स्त्रियों का बहुमूत्र रोग तथा श्वेत प्रदर ठीक होता है।

मधुमेह (वसामेह) : पवाँड़ की जड़ों को 10 ग्राम लेकर 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ सेवन करने से लाभ होता है।

प्रमेह : पवांड पुष्प 100 ग्राम तथा शक्कर दस ग्राम, दोनों को मिलाकर सुबह खाने से, कुछ ही दिनों में मूत्र का गंदलापन एवं बार–बार जाना बन्द हो जाता है।

कटिशूल : कमर दर्द में स्थानीय स्त्रियाँ बीजों को भूनकर 2–4 ग्राम चूर्ण कर, खांड, गुड़ आदि मीठा और थोड़ा घी मिलाकर लड्डू बनाकर खाती है। इससे कमर दर्द में लाभ होता है।

रक्तशुद्धि के लिये : इसके मूल को धोकर, शुष्क कर महीन चूर्ण कर लें, नित्य प्रातः 4 ग्राम चूर्ण को 10 ग्राम घी तथा 10 ग्राम शक्कर के साथ सेवन करने रक्तशुद्ध होकर शक्ति की वृद्धि होती है।

वालातिसार : दांत निकलने के समय हरे पीले दस्तों में, उदरशुद्धि के लिये, पत्तों का क्वाथ 5–10 ग्राम देने से लाभ होता है।

शीतपित्त : जड के महीन चूर्ण 2–4 ग्राम को घी मिलाकर सेवन करने से शीत–पित्त मिटता है।

व्रणों पर :

1. अपक्व व्रणों पर इसके 6–7 पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने वे शीघ्र पक जाते है।
2. दुर्गन्ध युक्त व्रणों पर 8–10 पत्तो को एरंड तेल में भून कर पुल्टिस बना कर बांधने से लाभ होता है।
3. वातरक्त, गृध्रसी तथा संधिवात मे भी पुल्टिस से लाभ होता है।

सर्वांगशोथ पर :

1. पत्तों को जल में उबाल तथा निचोड़ कर उस जल को 50 ग्राम की मात्रा सेवन करने से, सब अंगों की सूजन उतर जाती है।
2. इसके पत्तों का शाक बनाकर खाने से भी 6 दिन में पूर्ण लाभ होता है।

दाद :

1. पवाँड के 200 ग्राम पंचाग को कुचलकर, 400 ग्राम मक्खन वाली दही में मिलाकर 3–4 दिनों तक मिट्टी की पतीली में रख छोड़े, 4–5 दिन में दो बार उबटन की तरह दाद के स्थान पर मले और घंटे बाद पानी से धो डाले, 4–5 दिनों में दाद मिट जाता है।
2. चर्म रोग में इसके पत्तों का साग बनाकर खाना गुणकारी है।
3. चर्म रोगों में इसके पत्तों की चटनी गुड़, तथा खटाई मिलाकर (राई नहीं मिलानी चाहिये) सेवन करने से लाभ होता है।
4. इसके पंचांग के क्वाथ से दाद आदि को धोते रहने या स्नान कराने से सब चर्म रोग दूर हो जाते है।
5. इसके 10–20 ग्राम बीजों को तक्र में भिगोकर, जब वे फूल जाँये, पीसकर उबटन की भांति दाद पर मल कर 1 घंटे बाद फिटकरी मिले किंचित उष्ण जल से साफ करे दें। 7 दिन के प्रयोग से पूर्ण लाभ होगा।
6. 200 ग्राम बीजों के चूर्ण को 450 ग्राम दूध, तेल 1 किलोग्राम तथा 6 ग्राम गंधक, मिलाकर मंद अग्नि पर पकाकर तेल सिद्ध कर ले, इस तेल को दाद पर दिन में 3–4 बार प्रयोग करें।
7. बीजों में समभाग जीरा, तथा थोड़ी सी सुदर्शन की जड़ इन तीनों को एकत्र फीसकर लेप करने से दाद नष्ट होता है।
8. पंवाड़ के 5–10 ग्राम बीजों को ही मूली के रस में पीसकर लेप करने से दाद नष्ट हो जाता है।
9. 100 ग्राम बीज चूर्ण को करंज तेल में मिलाकर लगाते रहने से भी लाभ होता है।
10. पंवाड़ के बीज 1 ग्राम, आमला 1 ग्राम, राल 1 ग्राम, सेहुंड का दूध 1 ग्राम, इस सबको कांजी के साथ पीसकर मलने से दाद

Scanned by CamScanner

नष्ट होता है।

पवाँड़ के ताजे पत्ते 100 ग्राम, तथा गंधक, राल, फिटकरी चौकिया सुहागा और रस कपूर 10–10 ग्राम, इनको थोडे जल में पीसकर बेर जैसी गोलियां बना लें, इसे पानी में घिसकर दाद पर लगाने से कुछ ही दिनों में दाद नष्ट हो जाती है।

छाजन (ब्यूची, एग्जिमा) :

1 बीजों के 1 किलोग्राम महीन चूर्ण को, 2 किलोग्राम गाय के दूध में मिलाकर, 200 ग्राम गाय का घी, तथा 20 ग्राम गन्धक चूर्ण मिला दें। मंद अग्नि पर पकाकर, जब दूध जल जावें तब उतार लें। इसके मलने से दाद छाजन दूर होती है। इस रोग में, खट्टी दही डालकर ताँबे के बरतन में एक दिन के लिये रख दें। अगले दिन से प्रयोग करें। इस लेप से पुरानी से पुरानी छाजन दूर हो जाती है।

2 इसके बीज 60 ग्राम, बाबची बीज 80 ग्राम और गाजर के बीज 20 ग्राम, इन तीनों का चूर्ण बनाकर 8 दिन तक गोमूत्र में भिगो कर रखें। मटकी में से आवश्यकतानुसार लगाते रहने से छाजन दूर होती है, सूख जाने पर गोमूत्र डालते रहें। यह एक वर्ष तक प्रयोग किया जा सकता है।

खाज खुजली :

1. 1 किलोग्राम बीजों के चूर्ण को खूब महीन पीसकर चिकने मिट्टी के बरतन में, 5 किलो मट्ठे में मिलाकर मुंह बन्द कर जमीन में गाड़ दे, 6 दिन बाद निकालकर खाज पर मलने से कैसी भी दुष्ट खाज हो 3 दिन में दूर हो जाती है।
2. 50 ग्राम बीजों के महीन चूर्ण को 1 किलोग्राम गाय के मठ्ठे में 3 दिन भिगोकर लगाने से खाज खुजली, मुख की झाई आदि दूर होती है।
3. पवाँड़ के बीजों को गोमूत्र में सात दिन तक भिगोकर छाया में सुखाकर पाउडर करके रखें, प्रातः सांय 1 से 2 ग्राम ताजे जल से लेने से समस्त प्रकार के चर्मरोग, कुष्ठ, दाद, खाज, खुजली में अत्यन्त लाभप्रद है। इसमें नमक, खटाई, बैंगन, अचार, अरबी, उडद की दाल, तली चीजों का विशेष परहेज करें।

कुष्ठ

1. चक्रवड़ के 10–20 ग्राम बीजों को दूध में पीसकर एरंड का तेल मिलाकर लेप करने से सर्व प्रकार के कुष्ठ रोग नष्ट होते हैं।
2. यदि कुष्ठ स्रावयुक्त गोल ठोस, अतिखाज युक्त और काला हो तो बीजों को थूहर के दूध की भावना देकर, गोमूत्र में पीसकर, धूप में गरम कर उसमें समभाग शराब की गाद मिलाकर लेप करने से लाभ होता है।

शीतज्वर : इसके पंचाँग को महीन पीसकर इसके कल्क को प्रातः काल हाथों की कलाई पर बांध देने से शीतज्वर की पारी रुक जाती है।

बाल रोग : पवाँड़ के बीज, हालो, राई, सरसों, मालकांगनी, तिल और नारियल की गिरी– बराबर–बराबर ले, नारियल की गिरी को छोड़कर सबका महीन चूर्ण कर ले, अब नारियल की गिरी को कतरकर चूर्ण में मिलाकर मशीन से तेल निकलवा ले। इस तेल को गरम करके मालिश करने से बाल रोग से जकड़े कमर जाँघ पिंडली आदि अंग ठीक हो जाते है। पुरानी रोगियों को इससे बहुत लाभ होता है।

पवाँड़ कॉफी : चकवड़ के 1 किलोग्राम बीजों को घी में सेक ले, अधिक जलने नहीं चाहियें, कूट कर महीन चूर्ण कर ले। इसमें जायफल, जावित्री, सौंठ, लौंग, खसखस 6–6 ग्राम, केसर 3 ग्राम दाल चीनी 11 ग्राम छोटी इलायची के बीज 23 ग्राम सबका चूर्ण कर मिला लें। विधिवत काफी बनाकर सेवन करने से थकावट व आलस्य दूर होता हे। मन प्रसन्न होता है। मंदाग्नि शिरोवेदना आदि नष्ट होते हैं, भूख अच्छी लगती है। यह काफी पौष्टिक तथा वल्य है। बच्चे बूढे युवा सभी इसका प्रयोग कर सकते हैं।

विशेष : यह आंतो के लिये हानिकारक है। हानि निवारणार्थ दही, दूध या अर्क गुलाब उत्तम है।

प्रतिनिधि द्रव्य : बावची है।

पवाँड़ के बीज

1 चक्रमर्दो लघुः स्वादु रूक्षः पितानिलापहः।
हृद्या हिमः कफ श्वास कुष्ठ दद्रुकृमीन हरेत्

2 हन्त्युष्णं तत्फलं कुष्ठकडूंपद्रुविषानिलान्।
गुल्मकास कृमिश्वासनाशनं कटुकं स्मृतम्।। (भाव प्रकाश)

Scanned by CamScanner

98 पर्णबीज

वैज्ञानिक नाम	:	*Bryophyllum pinnatum* (Lam.) Oken
कुलनाम	:	Crassulaceae
अंग्रेजी नाम	:	Sprout leaf plant
संस्कृत	:	पर्णबीज, अस्थिभक्षका, रक्तकुसुम
हिन्दी	:	जख्मेहयात
बंगाली	:	पथरकुची
पंजाबी	:	जख्मेहयात
तैलगु	:	सिमाजमुदु
कन्नड़	:	गंडुकालिंगा

परिचय

यह बहुवर्षायु पौधा होता है। यह वनस्पति भारतवर्ष के प्रायः सभी उद्यानों में लगाई जाती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका कांड पोला, लाल या हरा 3–4 फुट तक ऊंचा होता है। इसके पत्ते अंतर, मांसल, तल प्रदेश के पत्ते साधारण और अग्र भाग के पत्ते संयुक्त जिनमें पत्रकों की संख्या 6–7 तक होती है। प्रत्येक पत्रक विपरीत क्रम में लगते हैं। इसके पत्रों की दंतुरित गोल किनारी की खांच से अंकुरित प्ररोह निकलते है जिससे वंशवृद्धि होती है। पुष्प बड़े नलिकाकार रक्ताभ, हरित एवं नीचे की ओर झुके हुए 2–3 इंच लम्बे होते हैं। इसके पत्रों में बड़ी सुगन्ध आती है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक सुगन्धित तेल होता है, जिसका प्रमुख घटक कार्वाक्रोल है।

Scanned by CamScanner

गुण–धर्म

यह पथरी को भेदने वाला, वस्तिशोधक, भेदक तथा त्रिदोष शामक, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ, व्रण रोग को नष्ट करता है। पत्र व्रणरोपक व रक्त स्तंभक होते हैं। इनका प्रयोग रक्तस्राव, चोट, अतिसार, अश्मरी तथा विसूचिका में किया जाता है।' मूत्रकृच्छ और पथरी की यह एक लोकप्रिय औषधि है। पाषाण भेद, अपामार्ग, गोखरू यह सब वात विकार नाशक अश्मरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ, मूत्राघात की पीड़ा को शांत करता है।[2]

औषधीय प्रयोग

नेत्रपीडा : इसके पत्तों का रस आंख के चारों ओर लेप करने से सफेद भाग की पीड़ा मिटती है।

शिरोवेदना : शिरोवेदना में इसके पत्रों को पीसकर सिर पर लेप करने से लाभ होता है।

रक्तचाप : इसके हवाई अंगों का 5–10 बूंद सत् रक्तदाब को कम करता है।

दमा : इसकी पत्तियों का 50–60 मिलीलीटर काढ़ा दमा और श्वांस रोग–ग्रस्त व्यक्तियों को पिलाया जाता है।

उदरशूल :

1. बच्चों के पेट की शूल मिटाने के लिए इसके 5 मिलीलीटर पत्तों के रस में आवश्यकतानुसार शक्कर मिलाकर प्रातः–सायं पिलानी चाहिए।
2. इसका 50 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से पेट की पीड़ा मिटती है।
3. इसके पत्तों के 10 मिलीलीटर रस में ½ से 1 ग्राम सौंठ बुरक कर पिलाने से पेट की पीड़ा मिटती है।

मंदाग्नि : इसके पत्तों का 5–10 मिलीलीटर रस दिन में दो बार भोजन से 1 घण्टा पहले पिलाने से पुरानी मंदाग्नि मिटती है।

पथरी : पथरी और मूत्राशय के रोग मिटाने के लिए पाषाण भेद के पंचाग का 40–50 मिलीलीटर क्वाथ दिन में दो बार पिलाना चाहिए।

अश्मरी : इसके 40 मिलीलीटर क्वाथ में 500 मिलीग्राम शिलाजीत और 2 ग्राम मधु मिलाकर प्रातः–सायं पिलाने से पित्ताश्मरी मिटती है।

प्रमेह : इसके पत्तों का 5 मिलीलीटर रस प्रमेह तृषा, आध्मान उदरशूल, श्वास रोग, जीर्ण कास, अपस्मार मूत्र संस्थान अवरोध में लाभकारी है।

मूत्र रोग : पुरूषों के मूत्रसंबंधी रोगों में इसके 40–60 मिलीलीटर क्वाथ में 2 ग्राम मधु मिलाकर प्रातः–सायं पिलाना चाहिए।

योनिस्राव : स्त्रियों की योनिस्राव में इसके 40–60 मिलीलीटर क्वाथ में 2 ग्राम दिन में दो बार मधु मिलाकर सेवन करना चाहिए।

रक्तातिसार : इसके पत्रों का स्वरस 3–6 ग्राम, इसमें जीरा तथा दुगने प्रमाण में घी मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करने रक्तस्राव बंद हो जाता है।

मूत्रकृच्छ : अश्मरी जन्य मूत्रकृच्छ में इसकी मूल का 40 मिलीलीटर क्वाथ दिन में दो बार पिलाना लाभकारी है।

रक्त कैंसर : इसके हवाई अंगों का 5–10 बूंद सत् रक्त कैंसर में भी लाभदायक है।

हैजा : विसूचिका में इसके पत्रों का 5–10 ग्राम स्वरस पीने से लाभ होता है।

व्रण : चोट, मोच, व्रण, फोड़े तथा कीटदंश में इसके पत्रों को थोड़ा सा गरम करके, कूटकर रोगग्रस्त भाग पर बांधने से सूजन, रक्तिमा तथा वेदना कम होकर लाभ होता है।

घाव : पत्रों को थोड़ा सा गरम करके मसलकर घाव पर बांधने से घाव जल्दी भर जाते हैं और बाद में निशान तक नहीं छोड़ते।

विशेष : इसके पत्तों के रस का अधिक मात्रा में सेवन करने से नशा हो जाता है।

1. अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो बस्तिशोधनः।।
भेदनो हन्ति दोषार्शो गुल्म कृच्छाश्महृद्रुजः।
योनिरोगान्प्रमेहांश्च प्लीहशूल व्रणानि च।। (भाव प्रकाश)

2. वीरतरूसहचरद्वय दर्मवृक्षादनी गुन्द्रानल कुशकाशा श्म.....।। (सुश्रुत)

Scanned by CamScanner

वैज्ञानिक नाम	:	*Ficus religiosa* L.
कुलनाम	:	Moraceae
अंग्रेजी नाम	:	Peepal tree, Sacred fig, The Holy big tree
संस्कृत	:	बौधिद्रु, अश्वत्थ, पिप्पल, चलपत्र, गजाशन
हिन्दी	:	पीपल
गुजराती	:	पीपलो
मराठी	:	पिंपल
बंगाली	:	अश्वत्थ
पंजाबी	:	पीपल
तेलगु	:	राविचेट्टु
तमिल	:	अश्वत्थम, अरश्मर
कन्नड़	:	अश्वत्थ

परिचय

सर्वत्र उपलब्ध, भारतीय धर्म शास्त्रों में वर्णित और चर्चित, पीपल का वृक्ष सच में केवल वृक्ष नहीं ये तो पूरा शिवाला है। सदा सरल आडम्बरहीन, अवधूत पंथ के जोगी सा, पीता है विष का प्याला, बदले में अमृत देता है। यह शुद्ध सात्विक, भूषणहीन, 24 प्रहर विचरण करता है, अर्थात प्राणवायु छोड़ता है और विषैली कार्बन डाइआक्साईड सोखता है। इसकी छाया बहुत शीतल होती है।

बाह्य–स्वरूप

इसका वृक्ष बहुवर्षायु, पुराने वृक्ष की छाल फटी, श्वेत धूसर होती है। पत्र सिरायुक्त चिकने लट्वाकार नीचे को लटके रहते हैं। फल वर्तुल गोलाकार, आधा इंच व्यास के पकने पर बैंगनी या काले हो जाते हैं।

रासायनिक संघटन

इसकी छाल में टैनिन होता है।

गुण–धर्म

यह वर्ण्य अर्थात शरीर की रंगत को निखारने वाला, व्रणरोपण, वेदनास्थापन, शोथ हर तथा रक्तशोधक है। इसके लेप से घाव जल्दी भर जाते हैं। पीड़ा शांत होती है, सूजन मिटती है तथा

Scanned by CamScanner

रक्त शुद्ध होता है।[1] इसकी छाल मधुर, कषाय, शीतल, कफघ्न, स्तंभन, रक्त संग्राहक, गर्भस्थापन, मूत्रल, संकोचक और व्रणरोपण है, यह रक्तपित्तशामक एवं योनि दोष दूर करता है।[2] मृदु, विरेचक, स्नेहन और अनुलोमन है। मधुर रस होने से यह गर्भस्थापन और वाजीकरण है। इसका पत्र व्रणरोपण होता है एवं मूल गर्भस्थापन तथा वाजीकरण है।

औषधीय प्रयोग

आंख का दर्द : इसके पत्तों की जड़ में से जो दूध निकलता है उसको आंख में लगाने से आंख का दर्द मिट जाता है।

पागलपन : इसकी 6 छोटी-छोटी डालियां को उबालकर पिलाने से पागलपन में लाभ होता है।

दंतरोग : इसकी और वट वृक्ष की छाल दोनों को समान मात्रा में मिलाकर जल में पकाकर कुल्ले करने से दंत रोग मिटते हैं।

दातुन : पीपल की ताजी टहनी से प्रतिदिन दातुन करने से दांत मजबूत होकर मंसूड़ों की सूजन खत्म होती है एवं मुंह में आने वाली दुर्गंध भी खत्म हो जाती है।

हकलाहट : पके फलों का चूर्ण आधी चम्मच की मात्रा में शहद के साथ सुबह-शाम सेवन करने से हकलाहट में लाभ होगा और वाणी में सुधार होता है।

खांसी : कुक्कुर खांसी में छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ या स्वरस दिन में तीन बार देने से लाभ होता है।

दमा:

1. पीपल की छाल और पके फल का चूर्ण समभाग मिलाकर पीस लें, आधा चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार सेवन करने से दमे में लाभ होता है।
2. इसके सूखे फलों को पीसकर 2-3 ग्राम की मात्रा 14 दिन तक जल के साथ सुबह-शाम देने से श्वास मिटता है।

तृषा : इसकी 50-100 ग्राम छाल के धुओं रहित कोयलों को पानी में बुझा उस पानी को निथार के पिलाने से वमन और तृषा मिटती है।

चर्मरोग : पीपल की कोमल कोपलें खाने से खुजली और त्वचा पर फैलने वाले चर्मरोग नष्ट हो जाते हैं। इसका 40 मिलीलीटर काढ़ा बनाकर पीने से भी यही लाभ होता है।

हिचकी : इसकी 50-100 ग्राम छाल के कोयलों से बुझे हुए पानी को पीने से हिचकी बंद होती है।

अरूचि : इसके पके फलों के सेवन से कफ, पित्त, रक्त दोष, विष दोष, दाह, वमन तथा अरूचि का नाश होता है।

उदरशूल : उदरशूल मिटाने के लिए पीपल के ढाई पत्ते पीसकर 50 ग्राम गुड़ में गोली बनाकर दिन में 3-4 बार खाना चाहिए।

बद्धकोष्ठ :

1. इसके 5-10 फल नियमित खाने से बद्धकोष्ठ मिटता है।
2. इसके पत्ते और कोमल कोपलों का 40 मिलीलीटर क्वाथ पिलाने से विरेचन लगता है।

रक्त अतिसार : रक्त अतिसार में इसकी कोमल टहनियां, धनियां के बीज तथा मिश्री समभाग मिलाकर 3-4 ग्राम नियमित प्रात:-सायं सेवन करने से लाभ होता है।

मुत्रविकार : इसकी छाल का क्वाथ या फांट पिलाने से मूत्रकृच्छ मिटता है।

उपदंश : उपदंश में इसके कांड की 50 ग्राम सूखी छाल की राख, उपदंश पर बुरकने से उपदंश शुष्क होकर ठीक हो जाते हैं।

बांझपन : इसके सूखें फलों के 1-2 ग्राम चूर्ण की फंकी कच्चे दूध के साथ मासिक धर्म के शुद्ध होने के पश्चात् 14 दिन तक देने से स्त्री का बांझपन मिटता है।

वाजीकरण :

1. इसके फल का चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार दूध के साथ सेवन करते रहने से नपुसंकता दूर होकर, बल, वीर्य तथा पौरूष बढ़ता है।
2. फल, मूल, त्वक तथा शुंठी समभाग 5 ग्राम की मात्रा से सिद्ध दूध का मिश्री और मधु मिलाकर नियमित सुबह-शाम सेवन करते रहें।

पीलिया : पीपल के 3-4 नये पत्रों को पानी से घोलकर मिश्री के साथ खरल में खूब घोंटे। इन्हें बारीक पीसकर 250 ग्राम पानी में घोलकर छान लें। यह शर्बत रोगी को 2-2 बार पिलायें। 3-5 दिन प्रयोग करें। पीलिया रोग के लिए अनुभूत राम बाण औषधि है। अवस्थानुसार पत्तों का प्रयोग करें।

पीपल की छाल

Scanned by CamScanner

प्लीहा शोथ : इसकी 10–20 ग्राम छाल को जलाकर उसकी राख में समान भाग कलमी शोरा मिलाकर इस चूर्ण को एक पके हुए केले पर छिड़ककर एक रोज खाने से तिल्ली की सूजन मिटती है। इसकी छाल का 40 मिलीलीटर काढ़ा पिलाने से पित्तज और नील प्रमेह मिटता है।

पोलियो : पोलियो रोग में पीपल के 2–2 ताजे पत्तों को इतने ही लिसोढे के पत्रों के साथ घोंटकर, छानकर नमक के साथ नित्य लेने से अतिशीघ्र लाभ होता है।

रक्त विकार : वातरक्त आदि रक्त विकारों में छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ में 5 ग्राम मधु मिलाकर सुबह–शाम पिलाते हैं। रक्तपित्त में छाल तथा फल का क्वाथ देते हैं।[1]

खाज–खुजली :

1. खाज, खुजली में 50 ग्राम पीपल की छाल की राख तथा आवश्यकतानुसार चूना व घी मिलाकर अच्छी प्रकार से खरल कर लेप करने से लाभ होता है।
2. इसकी छाल का 40 मिलीलीटर क्वाथ नियमित प्रातः–सायं पिलाने से खुजली मिटती है।

रक्तपित्त : फल का चूर्ण और मिश्री समभाग मिलाकर 1 चम्मच की मात्रा में दिन में तीन बार शीतल जल से लेने पर कुछ ही दिन में रक्त पित्त में लाभ होता है।

रक्त शुद्धि : इसके 1–2 ग्राम बीजों का चूर्ण मधु के साथ सुबह–शाम चटाने से रक्त शुद्ध होता है।

सर्प दंश : सर्प दंश में जब तक चिकित्सक उपलब्ध न हो, पीपल के पत्तों का रस 2–2 चम्मच की मात्रा में 3–4 बार पिलायें और मुंह में पत्ते चबाने के लिए देते रहें, विष का प्रभाव कम होगा।

फुंसी :

1. इसकी छाल को जल में घिसकर फोड़े फुन्सियों पर लगाने से वे जल्दी ठीक हो जाती हैं। पित्तशोथ मिट जाती है।
2. फोड़ों को पकाने के लिए इसकी छाल का पुल्टिस बांधना चाहिए।

अग्नि दग्ध : अग्नि से जले हुए व्रणों पर इसकी सूखी छाल का चूर्ण घी में पकाकर व्रणों पर लगाना चाहिए।

घाव :

1. पीपल की छाल का महीन चूर्ण, चोट पर लगाने से रक्तस्राव बंद होकर घाव शीघ्र भर जाता है।
2. सड़े हुए तथा न भरने वाले घावों पर पीपल की अंतर छाल को गुलाब जल में घिसकर लगाने से घाव जल्दी शुद्ध होकर भर जाते हैं। भगंदर और कंठमाला में भी इससे लाभ होता है।

जीर्ण घाव : इसकी नरम कोपलों को जलाकर कपड़े में छानकर, पुराने बिगड़े हुए फोडों पर बुरकाने से लाभ होता है।

स्नायुक : इसके पत्तों को गरम करके बांधने से स्नायुक गल जाती है। इसके 21 कोमल पत्ते पीस, गुड़ में गोलियां बनाकर 7 दिन सुबह–शाम खिलाने से चोट की पीड़ा मिटती है।

बद : इसके पत्ते गरम करके, सीधी ओर से बांधने पर बद बैठ जाती है।

बिवाई : हाथ पांव फटने पर पीपल के पत्तों का रस या दूध लगायें।

विस्फोटक : इसके कोमल पत्रों को गेहूं के गीले आटे में पीसकर इसका लेप चर्म सूजन तथा विस्फोटक पर लगाने से लाभ होता है।

अन्य प्रयोग : इसमें से निकलने वाली लाख कडुवी, स्निग्ध, लघु, बल्य, भग्न संधानकारक वर्णप्रद एवं शीतल है। इसके सेवन से पित्त, विष, रक्त विकार, विषमज्वर, खांसी, कुष्ठ, व्रण, त्वचा रोग एवं दाह का नाश होता है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग

पीपल के ताजे पत्ते लेकर कूट–पीसकर रस निकाल लें। 5–5 बूंद नासिका में टपका देने से शीघ्र ही नकसीर बंद हो जाती है। 10–15 मि०ली० स्वरस में थोडी मिश्री मिलाकर पीने से भी लाभ मिलता है।

1. पिप्पली दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रणास्रजित्।
गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्ण्यो योनिविशोधनः।। (भाव प्रकाश)
2. पिप्पलः सुमधुरस्तु कषायः शीतलश्चकफपित्तविनाशी।
रक्तदाहशमनः स हि सद्यो योनिदोषहरणः किल पक्वः।। (रा०नि०)
3. बोधिद्रुयकषायं तु पिवेत्तंन्मधुना सह।
वातरक्तं जयत्याशु त्रिदोषमपि दारुणम्।। (चरक)

Scanned by CamScanner

पिप्पली

100

वैज्ञानिक नाम	:	*Piper longum* L.
कुलनाम	:	Piperaceae
अंग्रेजी नाम	:	Long pepper
संस्कृत	:	पिप्पली, वैदेही, मागधी, कृष्णा, चपला, कणा
हिन्दी	:	पीपल
गुजराती	:	पीपल
मराठी	:	पिपली
पंजाबी	:	मघाँ
तेलगु	:	पिप्पलु
तमिल	:	तिप्पिली
कन्नड़	:	हिप्पली
अरबी	:	दार–फिल–फिल
फारसी	:	फिलफिल–दराज

परिचय

वैदेही, कृष्णा, मागधी, चपला आदि पवित्र नामों से अलंकृत, सुगन्धित पिप्पली भारतवर्ष के उष्ण प्रदेशों में उत्पन्न होती है। राजनिघंटुकार ने इसकी चार जातियों का वर्णन किया है, परन्तु व्यवहार में छोटी और बड़ी दो प्रकार की पिप्पली ही आती है। बड़ी पिप्पली मलेशिया, इंडोनेशिया और सिंगापुर से आयात की जाती है, परन्तु छोटी पिप्पली भारतवर्ष में प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होती है। इसका वर्षा ऋतु में पुष्पागम होता है तथा शरद ऋतु में इसकी बेल फलों से लद जाती है। बाजारों में इसकी जड़ पीपलामूल के नाम से मिलती है।

बाह्य–स्वरूप

वैदेही की कोमल कांड युक्त वल्लरी अन्य पादपों का आश्रय लेकर या भूमि पर पसरकर वृद्धि को प्राप्त होती है। शाखाएं सूक्ष्म रोमश, पत्र 2–4 इंच लम्बे, डेढ़ से दो इंच तक चौड़े, हृदयाकार, एकान्तर, ताम्बूल पत्र सदृश, चिकने कोमल और अग्रभाग पर नुकीले होते हैं। पत्र में पांच स्पष्ट शिराएं होती हैं। मध्य की तीन शिराएं आपस में मिल जाती हैं और पार्श्व की मध्य तक रह जाती है। पुष्प एकलिंगी तथा अलग–अलग लताओं पर खिलते हैं। फल लम्बा, शुंडाकार, पकने पर हल्का लाल और सूखने पर कृष्णाभ धूसर वर्ण का हो जाता है। फलों को ही पिप्पली कहते हैं।

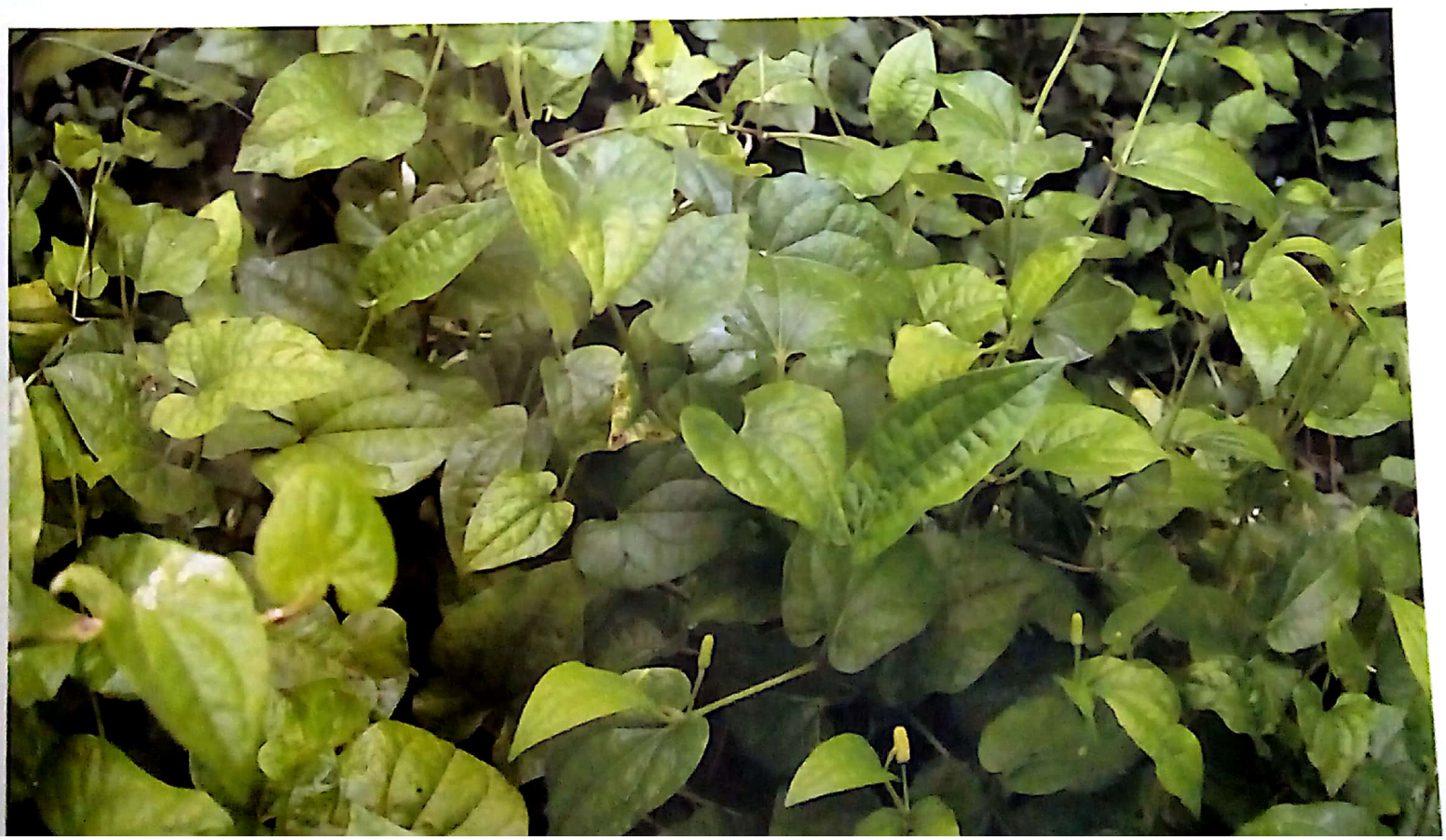

Scanned by CamScanner

पिप्पली की जड़ काष्ठमय, ग्रंथिल, कड़ी, भारी, कृष्णाभ धूसर वर्ण की तथा तोड़ने पर अंदर से श्वेत रंग की दिखती हैं। इसी से शाखाएं या उपमूल निकलकर भूमि पर फैलती है। मूल जितना अधिक वजनदार और मोटा हो, उतना ही अधिक गुणदायक माना जाता है। पिप्पली की अपेक्षा यह सौम्य किन्तु अधिक वीर्यवान एवं उत्तेजक है।

रासायनिक संघटन

इसमें एक उड़नशील, सुगन्धित तेल पाइपरीन, पिपलाटिन, सिसेनिन तथा पिपला-स्टिरॉल पाये जाते हैं। पिप्पली मूल में पाइपरिन, पिपलार्टिन, पाइपरलौंगुमिनिन एक स्टिरॉयड तथा ग्लाइकोसाइड पाये जाते हैं।

गुण-धर्म

पिप्पली हल्की, स्निग्ध, कटु स्वाद, तीक्ष्ण व किन्चित उष्ण है।[1] आर्द्र पिप्पली भारी, मधुर रस, शीतल व कफ कारक है।[2] आर्द्र अवस्था में यह पित्त का प्रशमन करती है तो शुष्क अवस्था में पित्त को कुपित करती है।[3] पिप्पली दीपन अर्थात अग्नि को बढ़ाने वाली, वृष्य, पाक से मधुर रसायन और बल्य है।[4] यह मृदु रेचक, श्वांस खांसी, उदर, ज्वर, कोढ, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्लीहा, शूल तथा आमवात को नष्ट करने वाली है।[5] शुष्क अवस्था में यह कफ वातशामक तथा आर्द्र अवस्था में वातकफ वर्धक और पित्त शामक है।[6] जिस प्रकार काली मिर्च की विशेष क्रिया पाचन तंत्र पर होती है, उसी प्रकार पिप्पली की विशेष क्रिया फेफडों और गर्भाशय पर होती है।[7] शीत प्रधान और कफ प्रधान रोगों में यह विशेष लाभकारी है। यह क्षय रोग नाशक, हिक्का, ज्वरघ्न, कृमिघ्न, रक्तशोधक, रक्त वर्धक, मेध्य, मूत्रल और वातहर है। पिप्पली मूल गर्भाशय संकोचक, जठराग्नि को दीपन करने वाला, कडुवा, चरपरा, उष्ण, पाचक, रूक्ष, लघु, पित्तकारक, भेदक, कफ-वात नाशक, दाह हर तथा प्लीहा, गुल्म, कृमि और श्वास को नष्ट करने वाला है।[8,9]

औषधीय प्रयोग

शिर शूल :

1. पिप्पली, काली मिर्च, मुनक्का, मुलेठी और सौंठ के समभाग 2 ग्राम चूर्ण को गाय के मक्खन में पकाकर, छानकर, उसका नस्य लेने से सिर पीड़ा नष्ट होती है।
2. पीपली को पानी में पीसकर लेप करने से मस्तक पीड़ा मिटती है।
3. पीपली चूर्ण का नस्य देने से सर्दी की मस्तक पीड़ा मिटती है।

अनिद्रा पर : केवल पिप्पली मूल के महीन चूर्ण को 1-3 ग्राम तक की मात्रा में मिश्री या दुगुने गुड़ के साथ मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करते रहने से, पाचन संबंधी विकार दूर होकर अच्छी नींद आने लगती है। नींद के लिए बूढ़े लोग इस योग का प्रयोग विशेष रूप से करते हैं।

आधाशीशी : पीपल और बच का चूर्ण सममात्रा में लेकर 3 ग्राम की मात्रा में नियमित रूप से दो बार दूध या गर्म जल के साथ फंकी लेने से आधाशीशी मिटती है।

पिप्पली मूल

रतौंधी : आंख में पिप्पली का काजल बनाकर लगाने से लाभ होता है।

दृष्टिमांद्य व नेत्र रोग :

1. पिप्पली के खूब महीन चूर्ण को सलाई से आंखों में मांजते रहने से नेत्रों की धुंध, रतौंधी व जाला आदि रोगों मे लाभ मिलता है।
2. पिप्पली एक भाग और हरड़ दो भाग दोनों को एकत्र जल के साथ खूब महीन पीसकर बत्तियां बनाकर नेत्रों में फेरते रहने से भी तिमिर, नेत्रकण्डू, नेत्रस्राव आदि विकार दूर होते हैं।
3. रतौंधी में पिप्पली को गौ मूत्र में घिसकर नेत्रांजन करने से भी लाभ होता है।

दंतशूल : पिप्पली के 1-2 ग्राम चूर्ण को सैंधा नमक, हल्दी और सरसों का तेल मिलाकर दांत पर लगाने से दंतशूल मिटता है।

कर्णशूल : पिप्पली चूर्ण को निर्धूम अंगारे पर रखने से धुंआ निकले उसे किसी नली द्वारा कान में प्रविष्ट कराने से कान पक कर होने वाला शूल नष्ट हो जाता है।

प्रतिश्याय व स्वर भंग पर : पीपल, पीपलामूल, काली मिर्च और सौंठ समभाग का चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ चटाते रहने से अथवा पिप्पली के क्वाथ में शहद मिलाकर थोड़ा-थोड़ा पिलाने से प्रतिश्याय में लाभ होता है।

श्वास कास :

1. एक ग्राम पिप्पली चूर्ण को दोगुना शहद में मिलाकर चाटने से श्वास कास, हिक्का, ज्वर, स्वरभंग व प्लीहा रोग में लाभ होता है।[10] यह मधु पिप्पली योग कफरोग में बहुत लाभकारी है।
2. इसके 1 ग्राम चूर्ण के साथ समभाग त्रिफला मिलाकर दिन में तीन बार सुबह खाली पेट व दोपहर रात्रि को भोजन से आधा

Scanned by CamScanner

धनिया पहले शहद मिलाकर भोजन के समय चाटने से हिक्का, श्वास कफ, ज्वर और पीनस का नाश होता है।

3. श्वास रोग में इसकी मूल के 3 ग्राम चूर्ण को मधु के साथ, दिन में तीन बार चटाने से लाभ होता है।

4. कास, श्वास, हिक्का और वमन पर पिप्पली, आमला, मुनक्का, बंसलोचन, मिश्री व लाख समभाग लेकर सबको पीसकर 3 ग्राम चूर्ण, 1 ग्राम घी और 4 ग्राम शहद में मिलाकर दिन में तीन बार नियमित 10–15 दिन लेने से शुष्क खांसी नष्ट होती है।

5. पिप्पली चूर्ण 2 ग्राम तथा मोरपंख की भस्म 300 मि०ग्रा० मिलाकर, शहद के साथ बार–बार चाटने से प्रबल हिचकी, अत्यन्त बढ़ा हुआ खास और दुःसाध्य वमन में लाभ होता है।

6. पिप्पली को तिल के तेल में भूनकर पीस लें। उसमें मिश्री मिलाकर रख लें, इसे 1/2 से 1 ग्राम तक कटेली के 40 मिलीलीटर क्वाथ में मिलाकर पीने से कफज कास में विशेष लाभ होता है।

7. पिप्पली, पीपलामूल, सौंठ और बहेडा समभाग लेकर चूर्ण बना लें। इसे 3 ग्राम तक, दिन में 3 बार शहद के साथ चटाने से खांसी नष्ट होती है। विशेषकर पुरानी खांसी व बार–बार होने वाली खांसी में यह अत्यन्त लाभप्रद है।

8. पिप्पली के 3–5 ग्राम कल्क को घी में भूनकर सैंधा नमक और शहद मिलाकर सेवन करने से कफज कास दूर होती है।

परमपूज्य स्वामी रामदेव जी का स्वानुभूत प्रयोग:

छोटी पिप्पली 1 नग लेकर गाय के दूध में 10–15 मिनट उबालें। उबालकर पहले पिप्पली खाकर ऊपर से दूध पी लें। अगले दिन 2 पिप्पली लेकर दूध में अच्छी तरह उबालकर पहले पिप्पली खा लें, फिर दूध पी लें। इस प्रकार 7 से 11 पिप्पली तक सेवन करके पुनः क्रमशः कम करते जाये अर्थात जिस तरह एक–एक पिप्पली बढ़ाई थी, वैसे ही एक–एक पिप्पली कम करते हुऐ 1 नग पर वापस लौट आयें। यदि अधिक गर्मी न लगे तो अधिकतम 15 दिन में 15 पिप्पली तक भी इस कल्प में ले सकते हैं। यह कल्प कफ, अस्थमा, नजला, जुकाम, व पुरानी खांसी में लाभप्रद है। इससे मंदाग्नि, गैस, अपचन आदि रोग भी दूर हो जाते हैं। यह पिप्पली युक्त दूध प्रातः काल सेवन करे। दिन में सादा आहार लें। घी, तेल व किसी प्रकार की खट्टी चीज ना लें।

दुग्ध वृद्धि के लिए :

1. पिप्पली फल का चूर्ण 2 ग्राम, शतावर आधा चम्मच की मात्रा में शहद के साथ सुबह–शाम सेवन करके बाद में दूध पीने से प्रसूता के स्तनों में दूध की वृद्धि होती है।
2. पिप्पली, सौंठ और हरड़ के चूर्ण समान मात्रा में लेकर लगभग 3 ग्राम चूर्ण को गुड़ में मिलाकर, उसमें थोड़ा घी मिलाकर, दूध के साथ दिन में दो बार खिलाने से माताओं का दूध बढ़ जाता है। यह प्रयोग लगभग दो माह तक करें।

हृदय रोग :

1. पीपलामूल और छोटी इलायची, बराबर–बराबर लेकर, महीन

चूर्ण बनाकर 3 ग्राम तक की मात्रा में घी के साथ प्रातः–सायं सेवन करने से कब्ज, हृदय रोग शीघ्र नष्ट होता है।

2. पिप्पली चूर्ण में बिजौरे नींबू की जड़ की छाल का चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर प्रातः काल खाली पेट 3 ग्राम चूर्ण, अर्जुन के काढ़े के साथ सेवन करने से हृदयशूल तथा दुःसाध्य हृदय रोग नष्ट होता है।
3. पिप्पली चूर्ण 1 ग्राम की मात्रा में नियमित रूप से मधु मिलाकर सुबह सेवन करने से, कोलेस्ट्राल की मात्रा नियमित होकर, दिल की कमजोरी दूर हो जाती है।

हिचकी :

1. पिप्पली व मुलेठी का चूर्ण समभाग एकत्र कर उसमें चूर्ण के समभाग शक्कर मिलाकर रखें। 3 ग्राम की मात्रा में लेकर बिजौरे नींबू के रस को पानी में डालकर पीने से हिचकी दूर होती है। यह योगवमन को भी नष्ट करता है। यह प्रयोग शहद के साथ सेवन करके उपर से जल पीने से भी लाभ होगा।
2. पिप्पली चूर्ण में समभाग शक्कर मिलाकर पानी के साथ

Scanned by CamScanner

फांकने से भी हिक्का में लाभ मिलता है।

उदावर्त : पीपलामूल को पीसकर दूध और अङ्डूसे के रस में मिलाकर पीने से उदावर्त मिटता है।

संग्रहणी : पिप्पली, भांग और सौंठ का समभाग चूर्ण 2 ग्राम की मात्रा में शहद के साथ दिन में दो या तीन बार भोजन से पहले सेवन करते रहने से भयंकर संग्रहणी व आंव भी नष्ट होती है।

जीर्ण अतिसार या प्रवाहिका : पिप्पली को पीसकर 2 ग्राम की मात्रा में बकरी के दूध के साथ या गाय के दूध के साथ देने से पुरानी प्रवाहिका मिटती है। यह प्रयोग सुबह खाली पेट करना चाहिए।

मरोड़ : पीपल और छोटी हरड़ बराबर–बराबर मिलाकर, पीसकर एक चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम गर्म पानी से सेवन करने से पेट दर्द, मरोड़ चिकने व दुर्गन्ध युक्त दस्त के बार–बार लगने में आराम मिलेगा।

उदरशूल : पीपल के 2 ग्राम चूर्ण में 2 ग्राम काला नमक मिलाकर गर्म जल के साथ फंकी देने से उदरशूल मिटता है।

उदररोग : पिप्पली एक भाग, सौंठ एक भाग और काली मिर्च 1 भाग, तीनों को बराबर–बराबर मिलाकर, महीन पीसकर 1 चम्मच चूर्ण गरम जल के साथ भोजन के पश्चात दो बार नियमित रूप से कुछ दिन तक सेवन करने से उदररोग शांत होता है।

पांडुरोग : पांडुरोग, अग्निमांद्य, धातुक्षय में शहद एक भाग, घी 2 भाग, पिप्पली 4 भाग, मिश्री 8 भाग, दूध 32 भाग, दाल चीनी, तमाल पत्र, इलायची, नागकेशर 6–6 भाग, सबको भली प्रकार

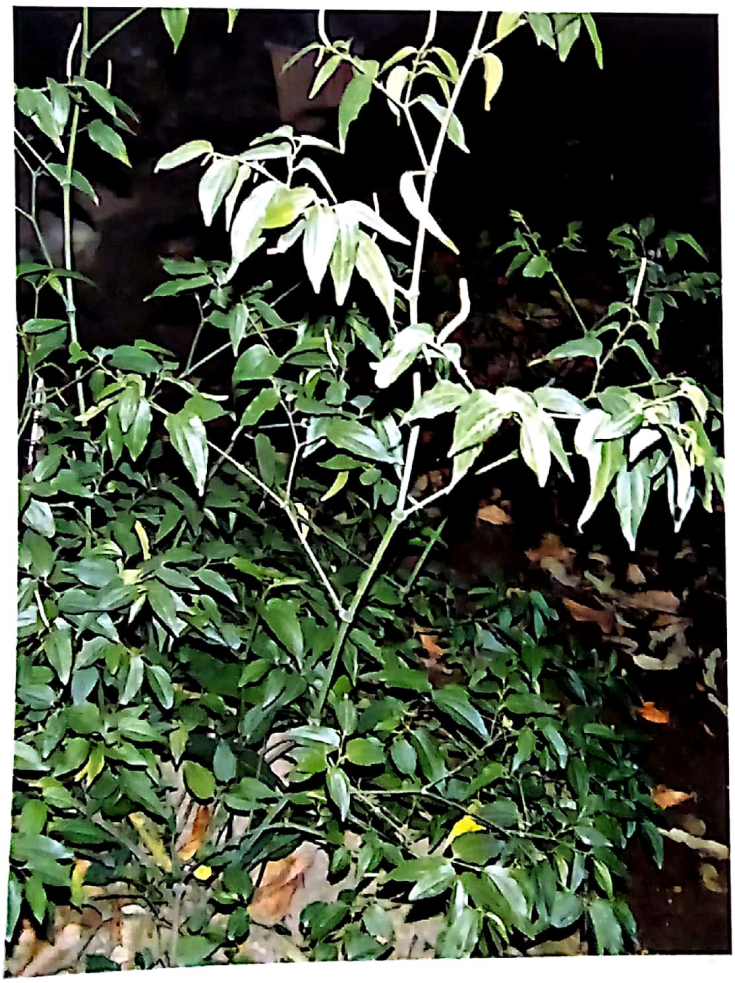

पिप्पली

मसलकर पकाकर लड्डू बना लें। प्रतिदिन एक लड्डू का सेवन करना चाहिए। घी और मिश्री की मात्रा आवश्यकतानुसार बढ़ाकर भी यह प्रयोग किया जा सकता है।

आंत्रवृद्धि : पिप्पली, जीरा, कूठ, बेर और गाय का गोबर समभाग, कांजी के साथ खूब महीन पीस कर लेप करने से लाभ होता है। यह प्रारम्भिक स्थिति में लाभ करता है। अधिक वृद्धि होने पर शल्य कर्म ही आंत्रवृद्धि की चिकित्सा है।

यकृत–प्लीहा वृद्धि :

1. पिप्पली का 2 से 4 ग्राम चूर्ण, 1 चम्मच शहद के साथ सुबह–शाम नियमित देने से यकृत वृद्धि में लाभ होता है।
2. पिप्पली का क्वाथ स्रोतस स्थित कफ और गुरूता को हटाने वाला, अग्निदीपक, वात कफ जन्य रोग को दूर करने वाला तिल्ली तथा ज्वर नाशक है।' इसके लिए पिप्पली 3 ग्राम को 1 गिलास पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर 1 चम्मच शहद मिलाकर सुबह–शाम पीयें।

मंदाग्नि : पीपल और गुड़ का कल्क 250 ग्राम, गाय का घी 1 किलो, बकरी का दूध 4 किलो; न मिलने पर गाय का दूध, चारों को मंदी आंच पर पकायें, जब केवल घी मात्र शेष रह जायें तो इस घी का प्रयोग मंदाग्नि, क्षय तथा कास में करें। मात्रा 1 चम्मच दिन में तीन बार।

अर्श :

1. पिप्पली चूर्ण आधा चम्मच, समभाग भुना जीरा तथा थोड़ा सा सैंधा नमक मिलाकर छांछ के साथ प्रातः खाली पेट सेवन करने से बवासीर रोग में आराम मिलता है।
2. पिप्पली, सैंधा नमक, कूठ और सिरस के बीज समभाग महीन चूर्ण कर उसे सेंहुड (थूहर) या बकरी के दूध में घोटकर लेप करने से अर्श के मस्से नष्ट हो जाते हैं। सेहुण्ड का दूध तीक्ष्ण होता है अतः मस्सों पर सावधानी से लगायें।

मासिक पीड़ा व गर्भधारणार्थ :

1. पिप्पली, सौंठ, मरिच और नागकेशर समभाग, लेकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को घी में मिलाकर दूध के साथ खाने से बांझ

Scanned by CamScanner

स्त्री के भी सन्तान उत्पन्न हो जाती है।

इससे गर्भाशय गत विकार व शोथ समाप्त होता है। मासिक धर्म के समय होने वाले दर्द व अंतस्रावी ग्रन्थि (हार्मोन्स) के विकार में भी यह लाभप्रद है। दो तीन माह तक प्रातः–सायं सेवन करें।

प्रसव कष्ट : प्रसव कष्ट में शीघ्र प्रसूति के लिए पीपलामूल 3 ग्राम और पुष्करमूल 3 ग्राम कुल 6 ग्राम चूर्ण को लगभग 400 ग्राम पानी में उबालकर 100 ग्राम शेष रहने पर छानकर थोड़ा सा शहद व हींग मिलाकर पिलाने से प्रसव पीड़ा बढ़कर, शीघ्र प्रसूति हो जाती है। प्रसव के पश्चात आंवल गिराने के लिए तुरन्त ही उपरोक्त क्वाथ को ठण्डा करके पिला देना चाहिए।

सूतिका रोग : प्रसूति के बाद अत्यधिक स्राव को बंद करने के लिए पीपली चूर्ण घी में मिलाकर चटाने से लाभ होता है।

गृध्रसी व उरुस्तम्भ :

1. पीपल और सौंठ, दोनों के मिश्रण से सिद्ध किए हुए तेल की मालिश करने से उरुस्तम्भ और गृध्रसी में लाभ होता है।
2. पिप्पली चूर्ण 3 ग्राम को गोमूत्र 100 ग्राम और अरंडी के तेल 10 ग्राम के साथ मिलाकर दिन में दो बार पिलाने से लाभ होता है।
3. पिप्पली फल का आधा चम्मच चूर्ण, 2 चम्मच अरंडी के तेल के साथ सुबह–शाम नियमित सेवन से साइटिका रोग दूर होता है।

विषदंश : पीपल को पीसकर विषैले जंतुओं के डंक पर लगाने से बहुत लाभ होता है।

ज्वर : सूतिका ज्वर, विषम ज्वर, आमवात और कफ ज्वर में पीपल को शहद के साथ दिया जाता है। पीपल चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में सुबह–शाम सेवन करना चाहिए। यह सरल किन्तु अत्यन्त प्रभावशाली है।

बाल रोगों पर :

1. बच्चों के जब दांत निकलते हों, उस समय 1 ग्राम पिप्पली चूर्ण को 5 ग्राम शहद में मिलाकर मसूढ़ों पर घिसने से दांत बिना कष्ट के निकलते हैं।
2. बड़ी पिप्पली को घिसकर लगभग 125 मिलीग्राम की मात्रा में

छोटी पिप्पली

मधु के साथ चटाते रहने से, बच्चों के ज्वर, कास तथा प्लीहा वृद्धि में विशेष लाभ होता है।

3. यदि बालक अधिक रोता है तो उसे पिप्पली और त्रिफला के समभाग मिले हुए चूर्ण को, 200 मि०ग्रा० से एक ग्राम तक की मात्रा में घी और शहद मिलाकर सुबह–शाम चटाना चाहिए।

पीड़ा : शरीर के किसी भी अंग में पीड़ा हो, पिप्पली की जड़ का चूर्ण आधा चम्मच की मात्रा में गरम दूध या पानी से सेवन करने से किसी भी अंग के दर्द में शीघ्र ही आराम मिलता है और नींद भी अच्छी आती है। दूध में आधी चम्मच हल्दी मिलाकर यदि प्रयोग किया जाये तो चोट, मोच के दर्द में भी अत्यन्त लाभ होगा।

विषम ज्वर : पिप्पली मूल के 3 ग्राम चूर्ण को 2 ग्राम घी और 5 ग्राम शहद में मिलाकर दिन में तीन बार चाटने से तथा इसके साथ गाय का गरम दूध पीने से कास सहित विषम ज्वर में तथा हृदयरोग में भी लाभ होता है।

मोटापा : पिप्पली चूर्ण, 2 ग्राम की मात्रा में, मधु मिलाकर दिन में 3 बार कुछ हफ्ते तक नियमित रूप से सेवन करने से मोटापा कम हो जाता है। मोटापा कम करने के लिए पिप्पली चूर्ण के सेवन के एक घंटे तक आवश्यकता होने पर जल को छोड़कर कुछ भी सेवन न करें, निश्चित तौर पर मोटापा कम हो जायेगा।

1. अनुश्णा कटुका स्निग्धा वातष्लेष्म हरी लघुः।
2. आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा षीतला मधुरा गुरूः।
3. आर्द्रा पित्तप्रषमनी सा तु षुश्का पित्त प्रकोपनी।।
4. पिप्पली दीपनी वृश्या स्वादुपाका रसायनी।
5. पिप्पली रेचनी हन्ति वातश्लेश्मोदरज्वरान्। (भाव प्रकाश)
   कुश्ठप्रमेहगुल्मार्षः प्लीहषूलाभमारूतान्।।
6. लेष्मला मधुरा चार्द्रा गुर्वी स्निग्धा च पिप्पली। (चरक)
   सा षुश्का कफवातघ्नी कटुश्णा वृश्यसंमता।।
7. तेशां गुर्वी स्वादुषीता पिप्पल्यार्द्रा कफावता।
   षुश्का कफानिलघ्नी सा वृश्या पित्ताविरोधिनी। (सुश्रुत)
8. दीपनं पिप्पलीमूलं कटूश्णं पाचणं लघु।
   रूक्षं पित्तकरं मेद कफ वातोदरापहम्। (भाव प्रकाश)
   अनाहप्लीहगुल्मघ्नं कृमिष्वासक्षयापहम्।। (चरक)
9. पिप्पलीमूलं दीपनीयपाचनीयानाहप्रशमनानाम्।।
10. क्षौद्रोपकुल्यासंयोगः श्वासकासज्वरापहः।
    प्लीहानं हन्ति हिक्काष्च बालाना नजचा शस्यते।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner

101 पिठवन (पृश्निपर्णी)

वैज्ञानिक नाम	:	*Uraria picta* (Jacq.) Desv. ex DC.
कुलनाम	:	Fabaceae
संस्कृत	:	पृश्निपर्णी, पृथक् पर्णी
हिन्दी	:	पिठवन
गुजराती	:	कुवडियो, पीठवण
मराठी	:	पिठवण
बंगाली	:	शंकरजटा, चाकुले, चाकुलिया
तेलगु	:	कोल्कु पोन्ना

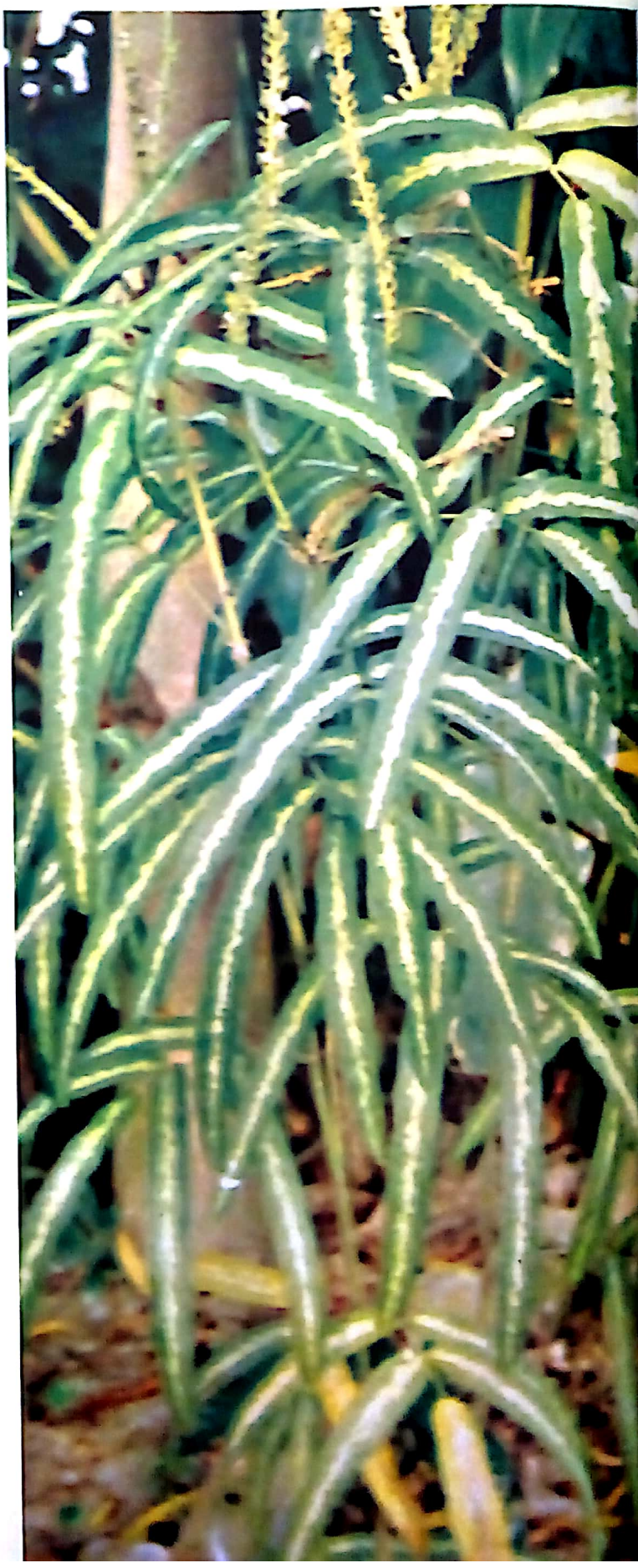

परिचय

पिठवन के पौधे समस्त भारत की ऊसर भूमि तथा जंगल प्रदेशों में, विशेषतः बंगाल तथा हिमालय प्रदेश में 6 हजार फुट की ऊंचाई तक नैसर्गिक रूप से उत्पन्न होते हैं, यूरेरिया पिक्टा के अतिरिक्त पिठवन की *Uraria lagopoides* तथा *Uraria rufescens* आदि जातियां पाई जाती है। दोनों के गुणधर्म समान है, तथा दोनों ही प्रकार के पिठवन दशमूल में लघुपंचमूल के अंग है। इन पर वर्षाकाल में पुष्प तथा शीतकाल में फली आती है।

बाह्य–स्वरूप

पिठवन के बहुवर्षीय पौधे 2–4 फुट ऊंचे, पत्र संयुक्त विभिन्न आकार के, नीचे के पत्ते छोटे, गोलाकार इन पर 3 से 5 पत्रक होते हैं, ऊपर के पत्रक 3–6 इंच लम्बे, रेखाकार सफेद रंग की चौड़ी धारियो से युक्त होते है। पुष्प छोटे, लाल या बैंगनी रंग के, सघन मंजरी में लगते हैं, फल लगने पर ये मंजरिया सियार की पूंछ जैसी दिखती हैं। फली 3–6 पर्वयुक्त, चिकनी प्रायः श्वेत होती है। बीज वृक्काकार, पीताभ होते है।

गुण–धर्म

पिठवन त्रिदोष नाशक, वीर्यवर्धक, गरम, मधुर, दस्तावर और दाहज्वर, रक्त अतिसार, प्यास तथा वमन नाशक है। पृश्निपर्णी रसायन बल्य व स्तम्भक है, ज्वर, प्रतिश्याय, कफ रोग एवं दुर्बलता के लिये प्रयुक्त होती है।[1,2]

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

प्रतिश्याय (जुकाम, नजला) : पिठवन की 10 ग्राम जड़ों को 400 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ को मिश्री मिलाकर पिलाने से प्रतिश्याय में लाभ होता है।

रक्तार्श : रक्तार्श और शराब की अधिकता से उत्पन्न उपद्रवों में पिठवन और खिरैटी का क्वाथ समभाग 10–20 ग्राम की मात्रा में पीना अत्यन्त लाभदायक है।

सुखप्रसव : इसकी जड़ों को पीसकर, इसका लेप नाभि बस्ति और योनि पर करने से बच्चा सुख से उत्पन्न हो जाता है, बच्चा होते ही लेप को धो दें।

[illegible]वाहिका : पिठवन की जड़ के क्वाथ 10–20 ग्राम को बकरी के 250 ग्राम दूध के साथ पिलाने से लाभ होता है।

भगन्दर :

1. पिठवन के 8–10 पत्तों को पीसकर लेप करना बहुत लाभदायक है।
2. पत्तों के 10 ग्राम स्वरस का नियमित रूप से कुछ दिनों तक सेवन करने से भगन्दर रोग नष्ट होता है।
3. पत्तों में थोड़ा कत्था मिलाकर पीसकर लेप करने से या कत्था तथा काली मिर्च समभाग मिलाकर पीसकर पिलाने से भगन्दर में लाभ होता है।

प्लीहा वृद्धि :

1. इसके पत्ते और जड़ों का रस 10–20 ग्राम की मात्रा में पिलाने से लाभ होता है।
2. पृश्निपर्णी के पंचांग को मोटा–मोटा कूटकर छाया में सुखाकर रखें, प्रातः–सायं 10 ग्राम की मात्रा में लेकर 400 ग्राम पानी में पकायें, जब 100 ग्राम क्वाथ शेष रहे तब छानकर पीयें, इससे प्लीहावृद्धि, जलोदर, यकृत व उदर सम्बन्धित रोगों में लाभ होता है।

अस्थिभग्न : पिठवन की जड़ों का चूर्ण 5 ग्राम की मात्रा में 2 ग्राम हल्दी के साथ 21 दिन तक सेवन करने से लाभ होता है।

विष : वत्सनाभ के विष पर इसके पंचांग का 40 ग्राम तक स्वरस शक्कर मिलाकर देने से लाभ होता है।

ज्वर में : अच्छी तरह से फूले फले पौधे की जड़ों को लाल धागे में बांधकर, मस्तक पर धारण करने से ज्वर छूट जाता है।

1. पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्योष्णा मधुरा सरा।
हन्ति दाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमी।। (भाव प्रकाश)
2. पृश्निपर्णीरसे स्वादुर्लघूष्णाऽस्रत्रिदोषजित्।
कासश्वासप्रशमनी ज्वरतृड्दाहनाशिनी।। (धoनिo)
3. पृश्निपर्णी सांग्राहिकवातहर–दीपनीय–वृष्याणाम्। (चरक)

Scanned by CamScanner

पिया बासा (कटसरैया)

वैज्ञानिक नाम	:	*Barleria prionitis* L.
कुलनाम	:	Acanthaceae
संस्कृत	:	कुरण्टक, पीतकुरव
हिन्दी	:	पिया बासा, कटसरैया
गुजराती	:	काँटासेरियो
मराठी	:	पीवला, कोरंटा, कालसुद
बंगाली	:	पीक, झांटी, गाछ
तेलगु	:	मुल्लुगोरण्ट

परिचय

कटसरैया के बहुशाखी क्षुप, बाग बगीचों में, बाड़ो में खेतों के किनारें कहीं भी देखने को मिल जाते हैं। पुष्प भेद से कटसरैया श्वेत, नीला या बैंगनी, लाल तथा पीला, चार प्रकार का होता है। पीले फूल वाला कटसरैया सर्वत्र सुगमता से उपलब्ध होने के कारण औषध्यार्थ प्रायः इसी का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत विवरण, विशेषरूप से पीली कटसरैया के विषय में हैं।

बाह्य–स्वरूप

पिया बासा के क्षुप कांटेदार, 2 से 5 फुट ऊंचे होते हैं, शाखायें मूल से निकलती है। पत्र आरम्भ में लम्बे, छोटे, नोंकदार क्रम से स्थित तथा पर्णान्त छोटे होते है। पत्तियों और शाखाओं के बीच से काटों के जोड़े निकलते हैं। पुष्प छोटे किंचित घंटाकार लालिमा युक्त पीले वर्ण के होते है। फल बीज या डोडी भी कांटों से युक्त होती हैं। डोडी 1 इंच लम्बी, चिपटी, द्विकोष्ठीय, प्रत्येक बीज कोष में 1–1 बीज होता है।

गुण–धर्म

उष्ण होने से यह कफ–वातशामक है, इसका लेप शोथहर, वेदनाहर, वेदनास्थापन, व्रणशोधन, कुष्ठघ्न एवं केश्य है। यह नाड़ियो के लिए बलप्रद होता है।

Scanned by CamScanner

औषधीय प्रयोग

दाँत और मसूढ़ो के रोग :

1. दांत और मसूढ़ो मे यदि कीड़े लग गये हो तो इसके 10–12 पत्तों को पानी में उबालकर दिन में कई बार मुख में धारण कर कुल्ले करने से हिलते हुये दांत मजबूत हो जाते हैं, तथा वेदना भी मिट जाती है।
2. मसूढ़े यदि सूज गये हों, खून निकलता हो तो इसके पत्तों के रस मे थोड़ा सैधा नमक मिलाकर, मुख में बार–बार धारण कर कुल्ले करने से लाभ होता है।
3. 50 ग्राम पत्तियों को सैधा नमक के साथ पीस कर मंजन करने से दाढ़ या दांत का दर्द दूर होता है।
4. 5–7 पत्तियों के साथ थोड़ा अकरकरा पीस कर लगाने या दाढ़ के नीचे दबाये रखने से दर्द मिट जाता है। खून निकलना भी बन्द हो जाता है।

खांसी : खांसी में विशेषकर सूखी खांसी में इसके पत्तों का क्वाथ बनाकर 1 या दो चाय के चम्मच में, (आवश्कतानुसार अधिक भी ले सकते हैं) शुद्ध शहद मिलाकर दिन में 2–3 बार पिलाने से तुरन्त आराम हो जाता है।

अतिसार : इसके 10–20 ग्राम क्वाथ में शुंठी चूर्ण बुरक कर पिलाने से बच्चों का अतिसार मिटता है।

उपदंश : 8–10 पत्रों के साथ 2–3 नग काली मिर्च को पीसकर और पानी को छान कर पिलाने से लाभ होता है।

पित्तवृद्धि : पियाबासा के पत्र स्वरस में, तुलसी तथा भांगरे का रस समभाग मिलाकर तथा उसमें दूध और मिश्री मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

शुक्रमेह : सफेद फूल वाली कटसरैया के पत्र स्वरस 5–10 ग्राम में जीरे का 1–2 ग्राम चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शुक्रमेह मिटता है।

गर्भधारण : इसकी 10 ग्राम जड़ों को पीसकर गाय के दूध के साथ, स्त्री पुरुष दोनों को तीन दिन तक पिलाने से स्त्री गर्भ धारण करती है।

सूतिका रोग : सूतिका रोग में प्रतिदिन शाम को क्वाथ बनाकर रख दें तथा दूसरे दिन प्रातः काल छानकर थोड़ा छोटी पिप्पली का चूर्ण बुरक कर कुछ दिन पिलाने से सूतिका के सब प्रकार के प्रसूति सम्बन्धी उपद्रव शान्त होते है।

बच्चों के कफ ज्वर में : कफ जन्य ज्वर में 5–10 ग्राम पत्र स्वरस में

थोड़ा शहद मिलाकर दिन में 3–4 बार चटाने से लाभ होता है।

सूजन :

1. इसके 20 ग्राम पंचाग को यवकूट कर आधा किलो पानी में उबालकर क्वाथ बनाकर बफारा देने से सूजन उतरती है।
2. ग्रन्थि शोथ पर इसकी जड़ों को पीसकर गर्म कर बांधने से या लेप करने से लाभ होता है।

व्रण :

1. इसके पत्तों और मूल त्वक को पीसकर, तिल के तेल में मिलाले तथा तेल से दुगना पानी मिलाकर पकायें, जब केवल तेल शेष रह जाये तब छानकर लगाने से, व्रण शीघ्र ठीक हो जाते है। यह तेल दांत की पीडा, दाद, खुजली आदि में भी गुणकारी है।
2. पत्तों की राख को अच्छी तरह कपडे मे छानकर, देसी घी में मिलाकर लगाने से, नही पकने वाले व्रण तथा बिगडे हुये फोड़े भी ठीक हो जाते है।

Scanned by CamScanner

103 पुनर्नवा

वैज्ञानिक नाम	:	*Boerhavia diffusa* L.
कुलनाम	:	Nyctaginaceae
अंग्रेजी नाम	:	Spreading hogweed
संस्कृत	:	पुनर्नवा, शोथघ्नी
हिन्दी	:	गदहपुरना, साठी, गदहबिण्डो
गुजराती	:	साटोडी, बसेडो
तमिल	:	सुकुएट्टि
तेलगु	:	आतावासा, मिदि
पंजाबी	:	इटसिट
मराठी	:	घेटुली
अरबी	:	हन्दकूकी
कन्नड़	:	मुचोहुमोसी

परिचय

पुनर्नवा का बहुवर्षायु क्षुप भारतवर्ष में वर्षा ऋतु में सब जगह उत्पन्न होता है। इसकी दो जातियां लाल और सफेद पाई जाती हैं। इनमें रक्त जाति वनस्पति का प्रयोग अधिकता से औषधि के रूप में किया जाता है। इसका कांड पत्र पुष्प सभी रक्त वर्ण के होते हैं। फलों के पक जाने पर वायवीय भाग सूख जाता है। परंतु मूल भूमि में पड़ी रहती है, जो वर्षा ऋतु में फिर से उग आती है। इसलिए इसका नाम पुनर्नवा है।

बाह्य–स्वरूप

यह बहुवर्षीय प्रसरणशील 2–3 मीटर लम्बा क्षुप कई कोमल शाखाओं और प्रशाखाओं से युक्त, पत्र आधे से एक इंच लम्बे गोल या अंडकार मृदु–रोमश आमने सामने लगे होते हैं। पुष्प छोटे गुलाबी छोटे–छोटे मुण्डकों में प्रायः अवृन्त होते हैं। फल 1/2 इंच लम्बे, पंच रेखीय ग्रंथि युक्त होते हैं। मूल स्थूल दृढ और श्वेत होता है। वर्षाकाल में पुष्प और फल आते हैं।

रासायनिक संघटन

इसमें पुनर्नवीन नामक एक किंचित चरपरा क्षाराभ, पौटेशियम नाइट्रेट, भस्म में क्लोरायड, नाइट्रेट और क्लोरेट पाये जाते हैं।

गुण–धर्म

पुनर्नवा शोथहर, शीतल, हृदयोत्तेजक, शूलहर, मूत्रल है इसका प्रयोग शोथ रोग, हृदय रोग, जलोदर, पांडु और मूत्रकृच्छ तथा वृक्क विकारों में किया जाता है। इसका विशिष्ट प्रभाव गुर्दो और मूत्र वह संस्थान पर पडता है। इसलिए यह मूत्रल और शोथहर है। यह रक्त वह संस्थान और हृदय पर भी अच्छा असर डालती है।

यह मूत्रल, शोथघ्न, विषघ्न, हृद्य, रसायन दीपनीय, व्रणरोपन, व्रणशोथपाचन, वृष्य, रक्त भारवर्धक, अनुलोमन, रेचन, कासघ्न, स्वेदजनन, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न तथा मेदोहर है। पौटेशियम नाइट्रेट की उपस्थिति के कारण यह हृदय की मांसपेशियों की संकुचन क्षमता को बढ़ाता है। दूसरी मूत्रल औषधियां जहां शरीर में पौटेशियम

Scanned by CamScanner

ड्रेट की मात्रा का ह्रास करती है, वहीं पुनर्नवा मूत्रल होने के साथ-साथ पौटेशियम प्रदायक है।

औषधीय प्रयोग

अनिद्रा : पुनर्नवा का क्वाथ 50–100 मि०ली० पिलाने से रोगी को नींद आ जाती है।

नेत्र रोग :

1. इसकी जड़ों को पीसकर घी में मिलाकर अंजन करने से आंख की फूली कट जाती है।
2. इसकी जड़ों को पीसकर शहद में मिलाकर अंजन करने से आंख की लालाई दूर होती है।

आंख की खुजली : इसकी जड़ों को भांगरे के रस के साथ घिसकर आंखों में लगाने से आंखों की खुजली दूर हो जाती है।

तिमिर रोग : इसकी जड़ों को केवल जल के साथ घिसकर आंखों में लगाने से तिमिर रोग दूर हो जाता है।

मुखपाक : मुखपाक में पुनर्नवा की जड़ों को दूध में घिसकर छालों पर लेप करने से लाभ होता है।

हृदय रोग : हृदय रोगों में पुनर्नवा के पत्तों का शाक अत्यन्त लाभकारी है।

उर क्षत : यदि उरः क्षत के रोगी के थूक में बार-बार रक्त आ रहा हो तो 5–10 ग्राम पुनर्नवा मूल तथा शाठी चावलों के चूर्ण को मुनक्का के रस, दूध और घी में पकाकर पीने के लिए रोगी को दें।[2]

कास : इसकी जड़ों के चूर्ण में शक्कर मिलाकर दिन में दो बार खाने से शुष्क कास का नाश होता है।

दमा : पुनर्नवा मूल के तीन ग्राम चूर्ण में 500 मिलीग्राम हल्दी मिलाकर प्रातः-सायं खिलाने से दमा मिटता है।

बच्चों की बीमारी : पुनर्नवा पत्र स्वरस 100 ग्राम, मिश्री चूर्ण 200 ग्राम तथा पिप्पली चूर्ण 12 ग्राम इन तीनों को मिलाकर पकायें, जब चाशनी गाढ़ी हो जाये तो उतारकर बन्द बोतल में भर ले, इस शरबत की 4–10 बूंद तक बच्चों को दिन में तीन बार चटाने से बच्चों की खांसी, श्वास, फुफ्फुस विकार, बहुत लार बहना, जिगर बढ़ जाना या जिगर की अन्य खराबी, प्रतिश्याय व शीत को प्रभाव सहित अनेक बीमारियों में आराम होता है।

वमन : पुनर्नवा मूल का 2–5 ग्राम चूर्ण अधिक मात्रा में वमनकारी है।

भूख : पुनर्नवा मूल के 3 ग्राम चूर्ण को पीसकर साथ खाने से भूख बढ़ती है।

विरेचक : पुनर्नवा मूल का चूर्ण दिन में दो बार चाय के चम्मच जितनी मात्रा में लेने से मृदु विरेचक का काम करता है।

उदर रोग : पुनर्नवा मूल को गोमूत्र के साथ देने से सब प्रकार के शोथ तथा उदर रोगों का शमन हो जाता है।

मूत्रकृच्छ :

1. इसके 5–7 पत्तों को 2–3 नग काली मिर्च के साथ घोंट छानकर पिलाने से मूत्र वृद्धि होकर मूत्रकृच्छता मिटती है।
2. इसके 5 से 10 मिलीलीटर पत्र रस को दूध में मिलाकर पिलाने से मूत्र की रूकावट मिटती है।
3. पुनर्नवा का पंचांग या मूल का सूखा चूर्ण शोथ, मूत्रकृच्छ तथा हृदय विकार में प्रयोग करना लाभप्रद है। इसकी लगभग 3 ग्राम की मात्रा में मधु या किंचित उष्ण जल से नित्य प्रातः और सायं देना चाहिये।

शरीर पुष्ट : इसको दूध के साथ सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है।

प्रदर रोग : पुनर्नवा की 3 ग्राम मात्रा को जलभांगरे के रस के साथ खाने से प्रदर मिटता है।

योनिशूल : स्त्रियों के योनिशूल में पुनर्नवा स्वरस को योनि में लेप करने से लाभ होता है।

सुखप्रसव : पुनर्नवा मूल को तेल में स्निग्ध करके योनि में धारण करने से प्रसव शीघ्र हो जाता है।

ड्रोप्सी : ड्रोप्सी की बीमारी में पुनर्नवा लाभकारी है।

पांडु : पुनर्नवा पीलिया रोग की बहुत गुणकारी औषधि है। पांडु रोग में इसके पंचाग के 10–20 ग्राम रस में हरड़ का 2–4 ग्राम चूर्ण मिलाकर पीने से पीलिया रोग कट जाता है।

वृक्क विकार : इसके 10–20 ग्राम पंचाग का क्वाथ गुर्दे के विकारों को भी दूर करता है।

जलधर : पुनर्नवा के 40–60 ग्राम सूखे फांट में 1–2 ग्राम शोरा डालकर पिलाने से जलधर मिटता है।

प्लीहा : प्लीहा रोग में श्वेत पुनर्नवा की 10–20 ग्राम मूल को तंडुलोदक के साथ पीसकर देने से प्लीहावृद्धि ठीक हो जाती है।

वातकंटक : श्वेत पुनर्नवा मूल को तेल में सिद्ध करके पैरो में मालिश करने से वातकंटक रोग दूर हो जाता है।

आमवात : पुनर्नवा के क्वाथ के साथ कपूर तथा सौंठ के 1 ग्राम चूर्ण को सात दिन तक आमवात में सेवन करने से आमवात के

Scanned by CamScanner

आम का पाचन होता है।[1]

शोथ : पुनर्नवा की जड़, नागरमोथा, प्रत्येक द्रव्य को 10 ग्राम की मात्रा में लेकर इसका कल्क बना ले। इसे 640 ग्राम गाय के दूध में यथाविधि पकाकर वातज शोथ में प्रातः–सायं पीने से लाभ होता है।

सर्वांगशोथ : पुनर्नवा, नीम की छाल, पटोल पत्र, सौंठ, कटुकी, गिलोय, दारूहल्दी, हरड़ मिश्रित 20 ग्राम क्वाथार्थ जल 320 ग्राम, जब चतुर्थांश शेष रह जाये तो इसे छानकर 20 से 30 मि०ली० मात्रा सुबह–शाम पीने से सर्वांग शोथ, उदर रोग, पार्श्वशूल, श्वास, पांडु रोग नष्ट होता है।[2]

सूजन : पुनर्नवा मूल, देवदारु तथा मूर्वा को मिश्रित कर 3 ग्राम की मात्रा आवश्यकतानुसार मधु के साथ देने से गर्भावस्था से उत्पन्न शोथ उतर जाती है।

जलमय शोथ : पुनर्नवा की जड़, चिरायता और शुंठी, तीनों को समान मात्रा में मिलाकर इसकी 20 ग्राम मात्रा लेकर 400 मि०ली० पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष काढ़ा पीने से सर्वांग जलमय शोथ में लाभ होता है।

हड्फूटनी : पुनर्नवा 3 ग्राम की मात्रा को खेर की लुग्दी के साथ खाने से हड्फूटनी मिटती है।

बाइटें : इसकी 25 से 50 ग्राम जड़ों से बना क्वाथ सुबह–शाम पीने से बाईटें मिटते हैं।

कुष्ठ : इसको सुपारी के साथ खाने से कुष्ठ में लाभ होता है।

ज्वर :

1. श्वेत पुनर्नवा मूल की 2 ग्राम मात्रा चातुर्थिक ज्वर में दूध अथवा ताम्बूल के साथ सुबह–शाम दिया जाता है।

पुनर्नवा मूल

2. पुनर्नवा पेशाब की जलन मूत्र मार्ग में संक्रमण के कारण उत्पन्न ज्वर में भी तुरन्त लाभ पहुँचाता है।
3. लाल पुनर्नवा, परवल की पत्ती, परवल का फल, करेला, पाठा, ककोड़ा इन सबका शाक ज्वर में हितकारी होता है।

सर्पविष : यह सभी प्रकार के सर्पविषों का एंटीडोट है।

विद्रधि : श्वेत पुनर्नवा की 5 ग्राम जड़ को 500 ग्राम पानी में पकाकर चतुर्थांश शेष क्वाथ 20 से 30 मि०ली० मात्रा सुबह–शाम पीने से अपक्व विद्रधि नष्ट होती है।[3]

नारू : पुनर्नवा की जड़ और सौंठ को, पुनर्नवा के ही रस में पीसकर नारू पर बांधने से नारू मिटता है।

बिच्छू दंश :

1. पुनर्नवा के पत्ते और अपामार्ग की टहनियों को पीसकर बिच्छू के डंक पर मसलने से बिच्छू का विष उतरता है।
2. रविवार और पुष्य नक्षत्र के दिन उखाड़ी हुई पुनर्नवा की जड़ को चबाने से बिच्छू का विष उतरता है।

फोड़ा : स्तन के फोड़े पर पुनर्नवा की मूल को छाछ के साथ पीस–कर लेप करने से लाभ होता है।

रसायन प्रयोग :

1. रोगनिवारण के बाद कमजोरी दूर करने के लिये इसे प्रयुक्त किया जाता है। यह एक रसायन है और बलवर्द्धक टानिक है।
2. महिलाओं के लिये सर्वश्रेष्ठ टानिक है।
3. यह हृदय रोगजन्य अस्थमा में अत्यन्त लाभकारी है।
4. 20 ग्राम पुनर्नवा नित्य दूध के साथ 6 मास तक लगातार पीने से आयु बढ़ती है।

अन्य प्रयोग :

1. अनार्तव, गर्भाशय विकार जन्य अनार्तव में इसकी जड़ और कपास की जड़ का फांट देते हैं।
2. इसकी जड़ों का चूर्ण दो ग्राम गाय के दूध के साथ सेवन करने से वृद्ध शरीर भी नवीन हो जाता है।
3. इसकी जड़ों का घनक्वाथ बनाकर समभाग असगंध का चूर्ण मिलाकर मटर जैसी गोलियां बना लें, एक–एक गोली खाकर ऊपर से मिश्री मिला दूध पीने से वीर्य दोष दूर होकर शरीर की झुर्रियां दूर हो जाती है अथवा पंचांग के चूर्ण को दूध और शक्कर के साथ सेवन करें।

प्रमेह : इसके फूलों को सुखाकर चूर्णकर एक ग्राम की मात्रा में लेकर तीन ग्राम मिश्री मिलाकर खाने से ऊपर से दूध पीने से बल बढ़ता है और प्रमेह नष्ट होता है।

1. पटोल पत्र सफल कुलाम पापचेलिकम्।
कर्कोटंक कठिल्ल च पियाचध्हक ज्वरे हितम्।। (चरक)
2. चूर्ण पोनर्नवं रक्तशालि तपुल शर्करम
रक्तष्टीवी पिबेत सिद्ध द्राक्षा रस पयो घृतै।
3. शटी विश्वौषधिकल्कं वर्षाभूक्वाथसंयुतम्।
सप्तरात्रं पिबेज्जन्तुरामवातविनाशनम्।। (भैषज्य रत्नावली)
4. पुनर्नवानिम्ब पटोलशुण्ठीतिक्ताऽमृतादार्वभया कषायः।
सर्वाङ्गशोथोदर पार्श्वशूलकासान्वितं पाण्डुगदं निहंति।।
(भैषज्य रत्नावली)
5. श्वेतवर्षाभुवो मूलं वरुणकस्य च।
जलेन क्वथितं पीतमपक्वं विद्रधिं जयेत्।। (भैषज्य रत्नावली)

Scanned by CamScanner